राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 116
ध्रुव-शक्ति
आकर्षक स्टीकर मुफ्त
by अनुपम
एक
रोमांचक
विशेषांक

कहते हैं, ऐसा मानते भी हैं, और अक्सर देखा भी गया है कि सच और झूठ, पुण्य और पाप या धर्म और अधर्म के बीच जब-जब टकराव हुआ है तब-तब सच, पुण्य और धर्म की ही विजय हुई है—
लेकिन जिस लड़ाई में दोनों तरफ सत्य ही मौजूद हों, उस लड़ाई का नतीजा क्या निकलेगा?
P
तुम नताशा की मदद करके भारी भूल कर रही हो शक्ति! तुम न्याय करने के चक्कर में गलत इन्सान पर अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रही हो!
शक्ति, नारी की रक्षक और नारी के सम्मान की संरक्षक है। और नारी पर हाथ उठाने की जुर्रत करने वाला कभी सत्य और धर्म का पक्षधर नहीं हो सकता!... तुझे शक्ति का दंड तो भुगतना ही होगा!
दोनों प्रतीक हैं सत्य के! दोनों प्रतीक हैं न्याय के! और दोनों की एक ही चीज पसन्द है... विजय! इसीलिए आज एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं...
ध्रुव-शक्ति
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल, विनोद, डीगवाल
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

बंधी मुट्ठी लाख की, और खुली तो फिर खाक की! धरती की खुली मुट्ठी को इन्सान चूस-चूसकर खाक में तब्दील करता जा रहा है! लेकिन समुद्र की बन्द मुट्ठी में लाख नहीं, करोड़ नहीं, अरब नहीं, बल्कि खरबों की दौलत छिपी हुई है। समुद्र के अन्दर पनपते मोती और मूंगों के अलावा सदियों से लगातार डूबते जहाजों में बेशुमार दौलत और पुरातत्व संबंधी बेशुमार खजाने भी इसकी लहरों के परदे में छिपे हुए हैं। इस दौलत को निकालने में न तो कोई खतरा है, और न ही जोखिम-
या... या शायद होता है-
हमारा इस 18वीं सदी में राजनगर के तट के पास डूबे इस पुर्तगाली जहाज को ढूंढ़ने और इसके खजाने को निकालने का काम तो काफी योजनाबद्ध था! फिर इन कोस्ट गॉर्ड्स को खबर कैसे हो गई?
तुम्हारी मूर्खता से! मैंने कहा था कि अपनी बोट को समुद्र में इस जगह रोककर रखने के बजाय इधर-उधर घुमाते रहो! पर तुम नहीं माने। समुद्र के बीच में खड़ी बोट को देखकर किसी को भी शक हो सकता है!
फिर ये तो कोस्ट गॉर्ड्स हैं!
इनका काम ही शक करना है!
खैर! हम इनके लिए भी तैयार होकर आए हैं। तुम जल्दी से जल्दी जो समेट सकते हो, समेटो। फिलहाल हम यहां से निकलते हैं। मैडम से परमीशन लेकर दुबारा वापस आ जाएंगे!
निशाना साधने की जरूरत नहीं थी। गन से निकले हारपून के आगे 'टाईमर एक्सप्लोसिव' फिट था-
एक ही धमाके से दोनों गॉर्ड्स की पसलियां उनके फेफड़ों में पैवस्त हो गईं-

धमाके की तरंगें सतह को फोड़ती हुई, वातावरण में फैल गईं-
यह क्या था? अन्दर कुछ गड़बड़ लगती है! और गोताखोरों को भेजो!
फररराक्कक्कक्क
COAST GUARDS
VENUS
मुझे शक हो रहा है कि इस बोट में और भी जो लोग सवार थे, वे खतरा भांपकर अन्दर ही अन्दर से भागने की कोशिश कर रहे हैं।
कुछ ही देर बाद-
और कोस्ट गॉर्ड्स आ रहे हैं! हमारे पास इनसे निपटने लायक एक्सप्लोसिव नहीं है। यहां से भागना होगा!
कोस्ट गॉर्ड्स एक तो वहां पर डूबे पुर्तगाली जहाज़ को देखकर चकित हो गए थे, क्योंकि उनको इस डूबे जहाज के बारे में कुछ भी नहीं पता था-
और दूसरे उनको उन दोनों लुटेरे गोताखोरों से इस तरह से भागने की आशा नहीं थी-
इसीलिए उनके संभल पाने से पहले ही-
लुटेरे सुरक्षित दूरी पर पहुंच गए थे-
ओह! वे तो भाग निकलेंगे!
भागें तो कैसे? इन लोगों ने तो हमारी बोट पर भी कब्जा कर लिया होगा! और बिना बोट के हम मैडम के पास तक नहीं जा सकते!
एक ही तरीका है। राज नगर तट यहां से ज्यादा दूर नहीं है। हम वहां पर पहुंचकर इन कोस्ट गॉर्ड्स को चकमा दे सकते हैं!
ऐसों को भागने न देने के लिए ही सरकार ने हमको ये वॉटर प्रूफ बन्दूकें दी हुई हैं!
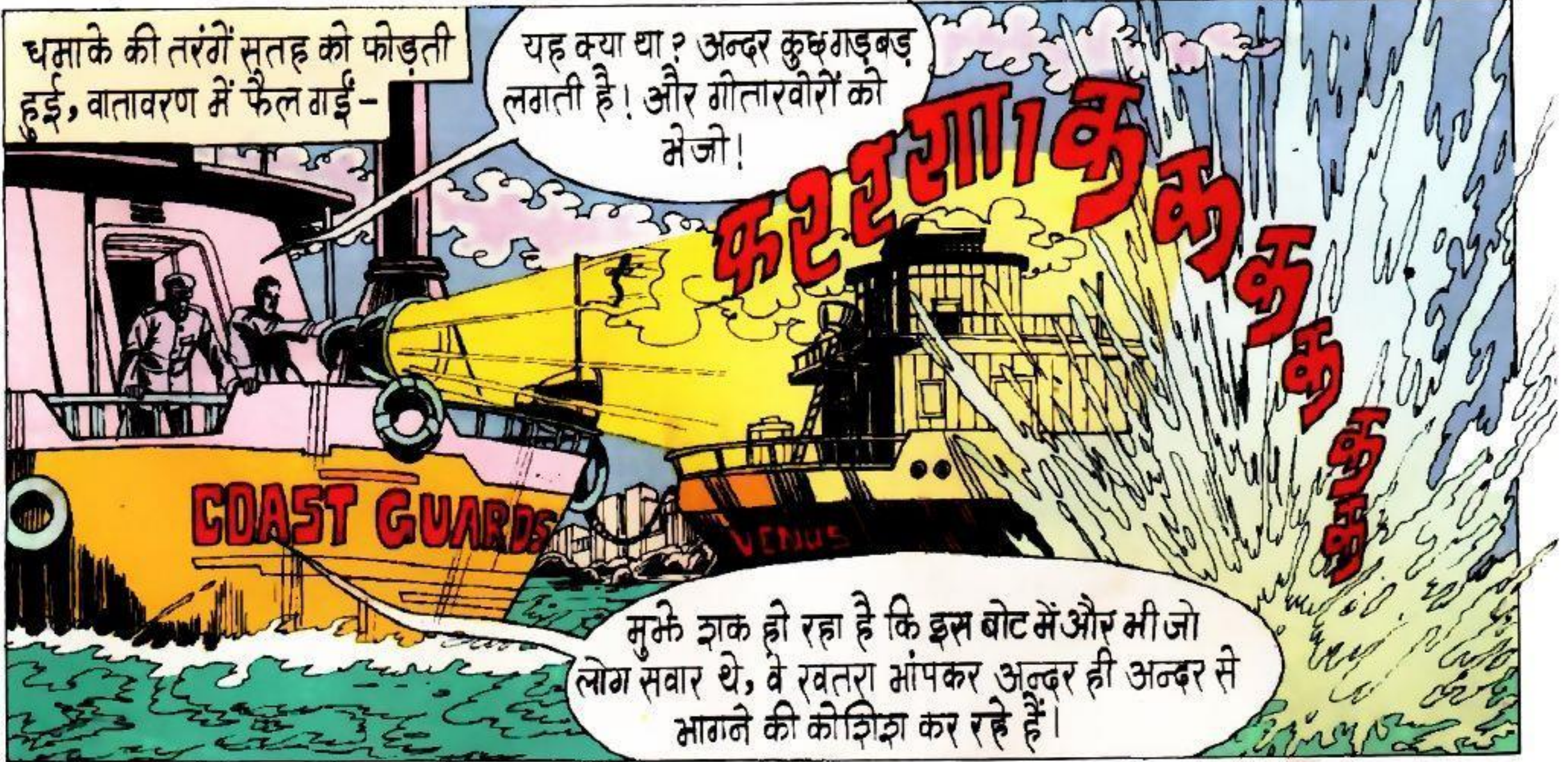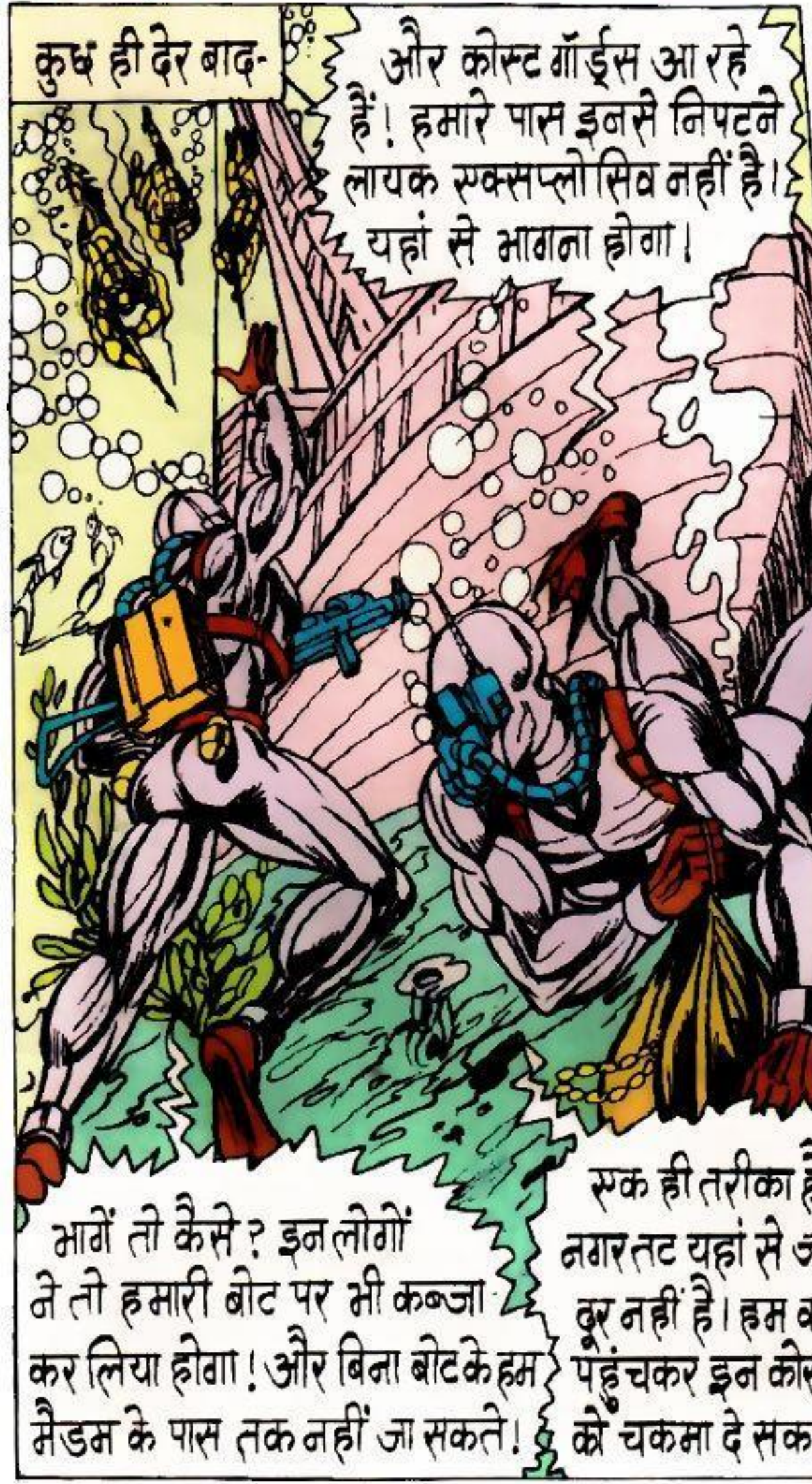
ओह! ये तो हम पर गोलियों की बौछार कर रहे हैं!
ऐसे तो कोई न कोई गोली हमको लग ही जाएगी! अपने आखिरी एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल करना ही पड़ेगा!
धड़ाम
एक्सप्लोसिव दगा–
और आशा के ही अनुरूप कोई भी कोस्ट गार्ड पीछा करने की स्थिति में नहीं रहा–
कुछ ही देर में चिड़िया ने राजनगर के रक्षक को ढूंढ लिया था–
चिंचीं चीं चीं
ओह! समझ गया! चलकर मुझे बताओ कि कहां पर हैं वे दुष्ट इंसान?
अब कोई हमारा पीछा नहीं कर पाएगा! फिलहाल किसी गाड़ी पर कब्जा करके यहां से खिसक लो!
उसके बाद मैडम तक पहुंचने का तरीका ढूंढ़ते रहेंगे!
दोनों यह सोच भी नहीं सकते थे–
कि उनके सर पर मंडराती चिड़िया–
उनके लिए खतरे का कारण बन सकती है–
ध्रुव एक बड़े अपराध को रोकने के लिए रवाना हो रहा था–
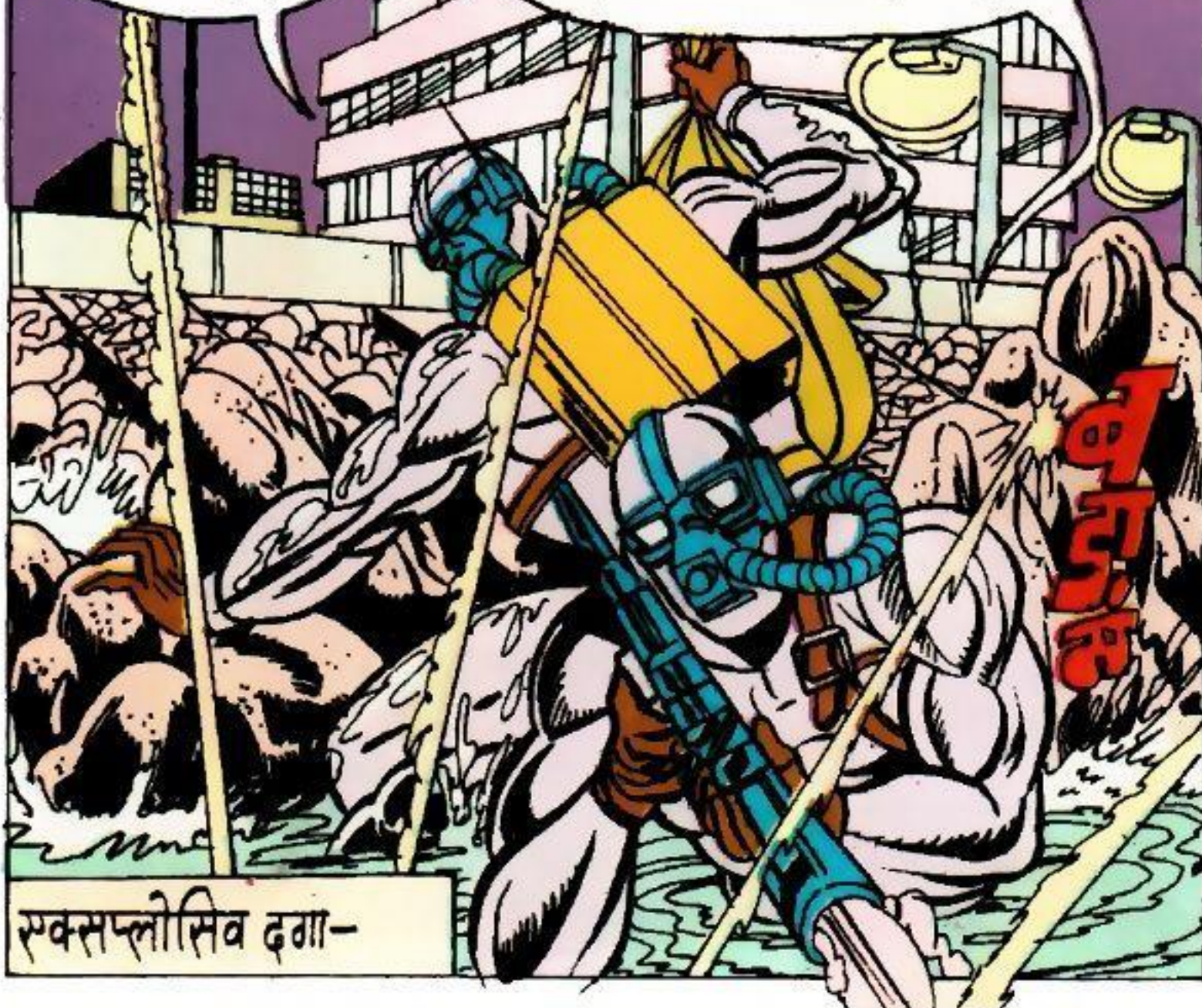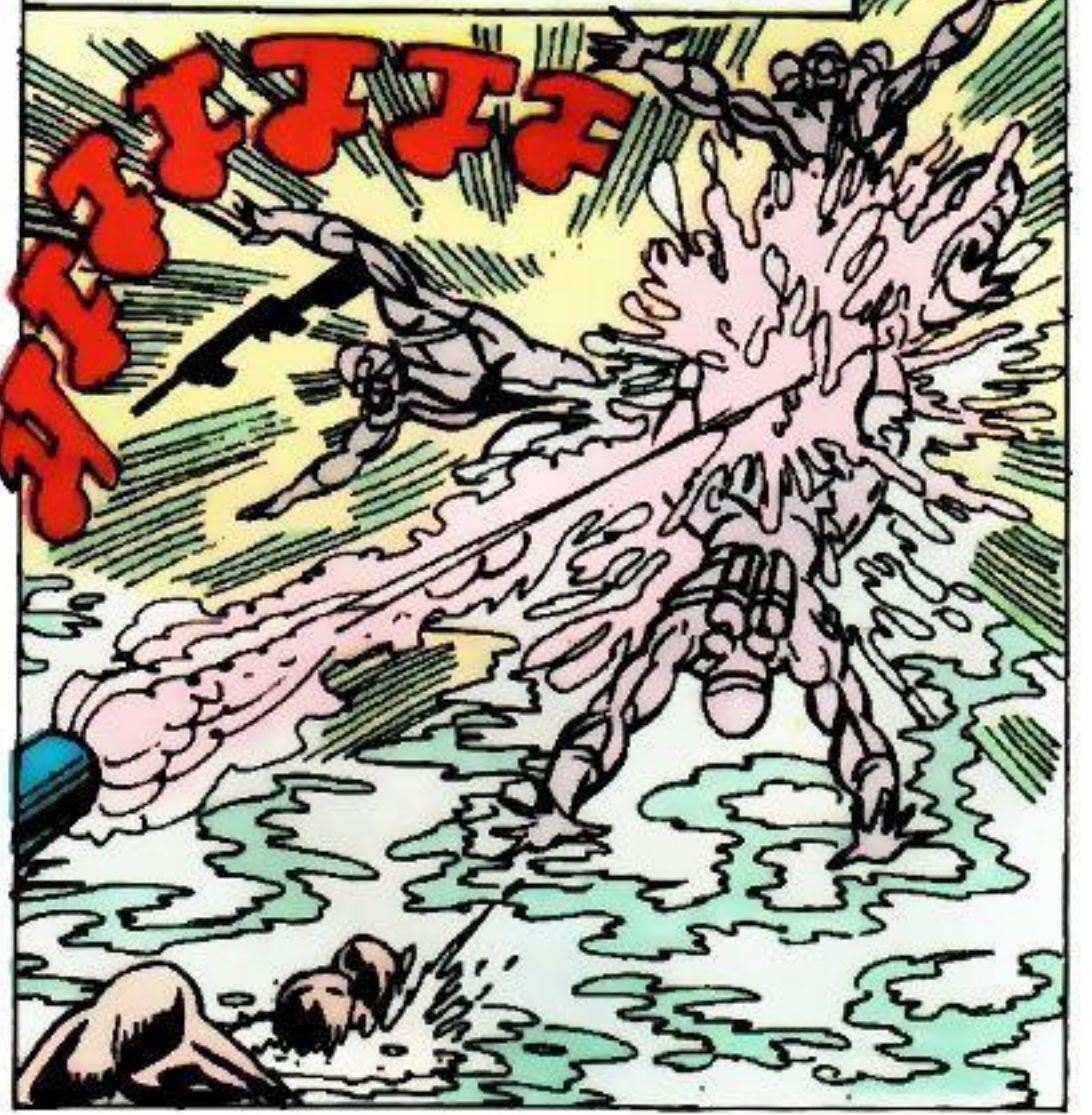
और इसी वक्त- राजनगर के एक दूसरे हिस्से में काफी चहल-पहल थी-

यार, यह 'अखिल भारतीय अस्पताल सम्मेलन' का आइडिया जिसने भी सोचा है, उसकी खोपड़ी खोलकर उसके दिमाग को चूम लेना चाहिए!

जानकारी और ज्ञान बढ़ने के साथ-साथ थोड़ा सा दिल भी बढ़ जाता है! और... हाय... आंखों की सिंकाई भी हो जाती है!

ALL INDIA

सुधर जा तरुण! डॉक्टरी पढ़कर कॉस्मेटिक सर्जन बन गया है, तो थोड़ा सोबर भी हो जा! वरना किसी दिन इतनी पिटाई होगी कि खुद सर्जरी करवानी पड़ेगी!

वैसे भी माहौल का तो ख्याल कर! हम इस सम्मेलन के मेजबान हैं। भारत के लगभग हर बड़े शहर से हॉस्पीटल टीमें यहां पर आई हैं।

उन पर हमारा क्या इम्प्रेशन पड़ेगा?

तुझे इम्प्रेशन की पड़ी है सौमित्र, और यहां सीने के पिंजरे में बंद दिल का पंछी धाड़-धाड़ कर रहा है कि कैसे इस पिंजरे से निकलकर कहीं जाकर अपना घोंसला बसा ले!

वाऊ! वो ऽऽ हसीना कौन है, सौमू?

वो हसीना तेरा पसीना निकाल देगी। दिल्ली से आई है...

'न्यू दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज' की टीम के साथ!

वहां पर रिसेप्शनिस्ट है! और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये विधवा है, और इसे पुरुषों से सख्त नफरत है!

अरे, तुझे क्या हो गया? तू एकदम से सीरियस क्यों हो गया?

इसको देखकर मुझे उसकी याद आ रही है, जिसे मैं कभी भूला ही नहीं!

इसका नाम तुझे पता है सौमू?

हां! इसका नाम चंदा है। सरनेम का पता नहीं! क्योंकि अब ये अपने पति के नाम का इस्तेमाल नहीं करती!

चंदा!

यानी... यानी ये वही है! वही है! बरसों की भटकन आज खत्म हो गई!

इस नए घटनाक्रम से बेखबर चंदा अपनी ही समस्या के बारे में सोच रही थी-

इस भीड़भाड़ से जल्दी ही निकल लेना चाहिए। वरना अगर कहीं किसी मुसीबतज़दा स्त्री की कहीं से चीख सुनाई पड़ गई तो मैं शक्ति को चंदा के रूप पर हावी होने से नहीं रोक पाऊंगी।

और इतने सारे लोगों के आगे मेरा भेद खुल जाएगा।

चंदा!

ऑल ... हॉस्पिटल कॉन्फ्रें
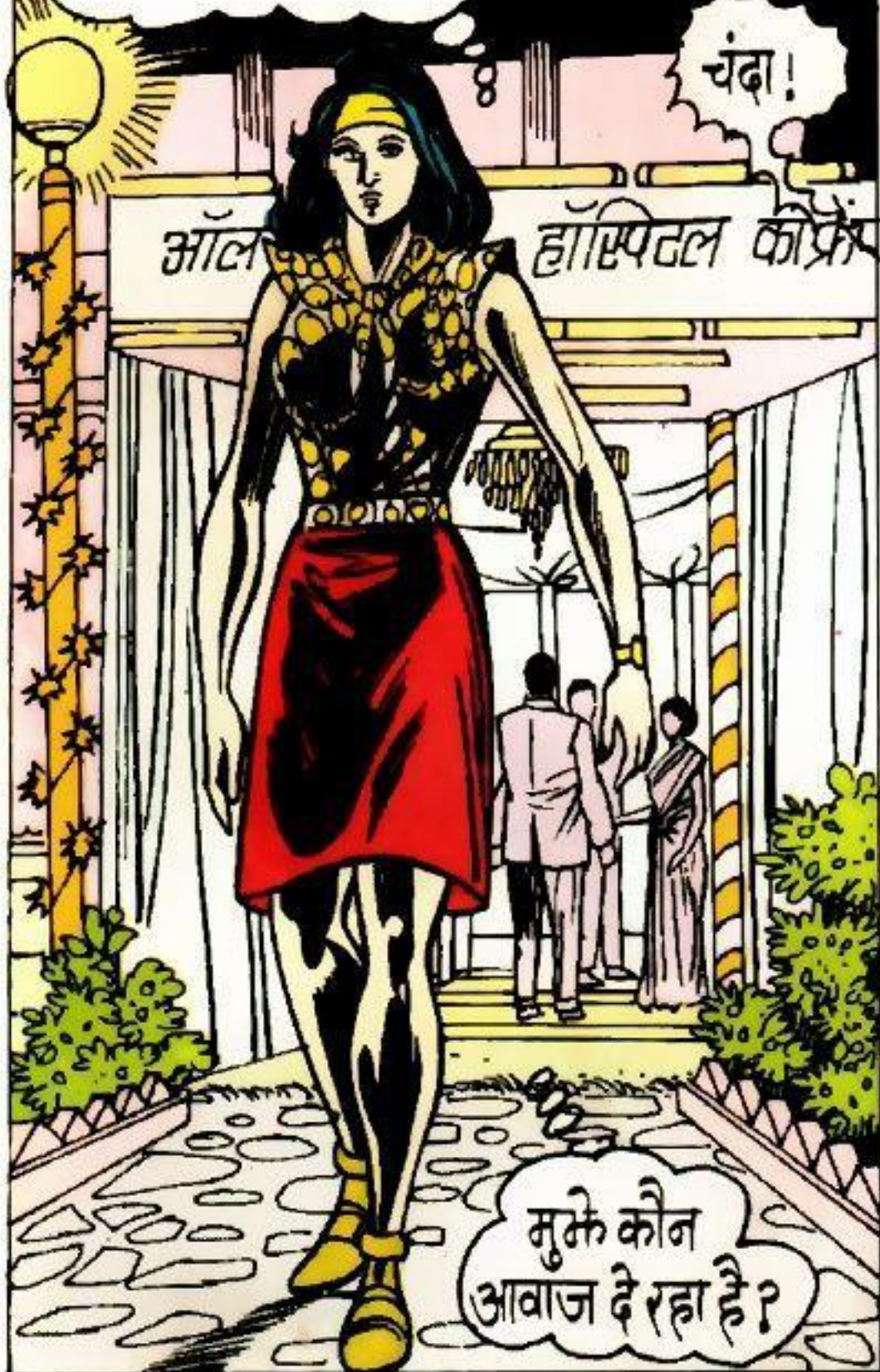
मुझे कौन आवाज दे रहा है?

त... तरु...

कौन हैं आप? क्या चाहते हैं?

क्या कह रही हो चंदा? मुझे पहचाना नहीं! मैं तरुण हूं। थर्ड-इयर एम.बी.बी.एस का तुम्हारा क्लासमेट!

मैंने तुमको कहां-कहां नहीं ढूंढ़ा चंदा! पर तुम्हारा कहीं पता नहीं चला! फिर पता चला कि तुम्हारे घरवालों ने जबर-दस्ती तुम्हारी शादी...

ओह! मैं और आगे नहीं सुन सकती!...

...ऐ मिस्टर! कान खोलकर सुन लो! मुझे पुरुषों से नफरत है! और उन पुरुषों से सख्त नफरत है जो लड़कियों से खाम-खाह की जान-पहचान निकालने की कोशिश करते हैं!

नाऊ, गेट लॉस्ट! और अगर मेरा पीछा करने की कोशिश की तो याद रखना, मुसीबत में पड़ जाओगे!

मुझे यहां से दूर जाना ही होगा! तरुण ने एकाएक सामने आकर मेरे दिमाग में तूफान उठा दिया है!

?

पुरानी यादें मेरी याददाश्त को झकझोर रही हैं! ओफ्! यह क्या हो गया!

चंदा को उसका अतीत परेशान कर रहा था-
और ध्रुव को वर्तमान-
अपराध के इस पेड़ की जड़ें बहुत गहरी हैं। कितना भी काट लो, लेकिन दुबारा उगते समय नहीं लगता।...
... ओह! ये रहे ऑक्सीजन टैंक! यानी वे गोताखोर लुटेरे आस-पास ही कहीं पर हैं!
लुटेरे सचमुच थोड़ी ही दूर पर थे। और एक कार को रोककर उसके सवार को बाहर निकालने में सफल भी हो गए थे-
जल्दी कर टाढू! कोई आ रहा है!
घड़. घड़. घड़.
यह तो मोटरसाइकल की आवाज है। एक ही सवार है। और... और इसके साथ एक चिड़िया भी उड़ती हुई आ रही है। ... यह तो ध्रुव के अलावा कोई हो ही नहीं सकता!
घड़. घड़. घड़. घड़. घड़. घड़
और... और हमारे पास एक्सप्लोसिव भी खत्म हो गए हैं!
एक्सप्लोसिव की जरूरत नहीं पड़ेगी। हारपूनगन तो है न अपने पास! यही इसके बदन में छेद कर देगी!
न आवाज हुई, और न ही रोशनी भरा धमाका। इसीलिए ध्रुव अपनी तरफ लपकते हारपून को अंधेरे में जल्दी देख नहीं पाया-
चीं SSSS
SHINING HAIR
ठक्क
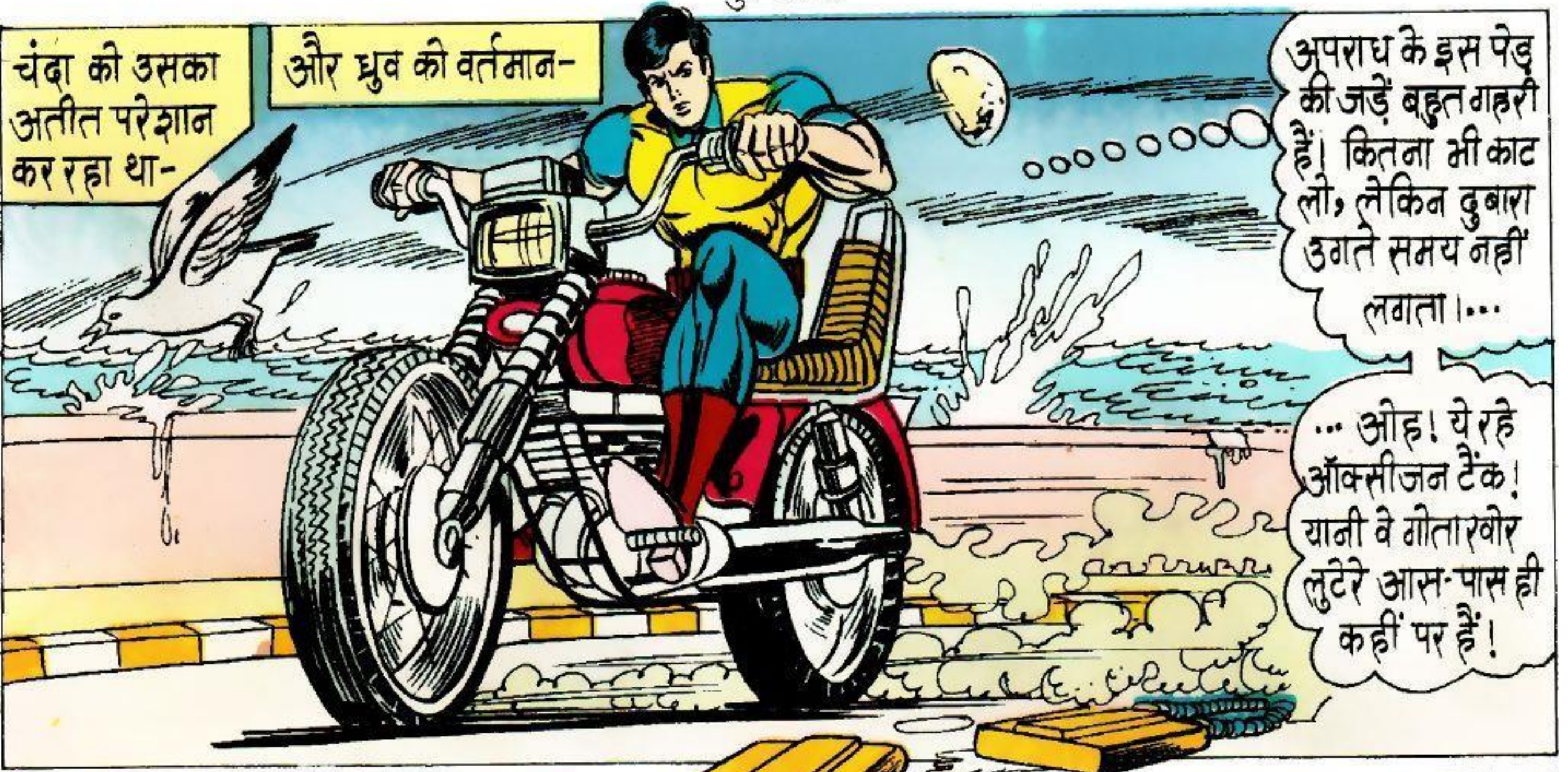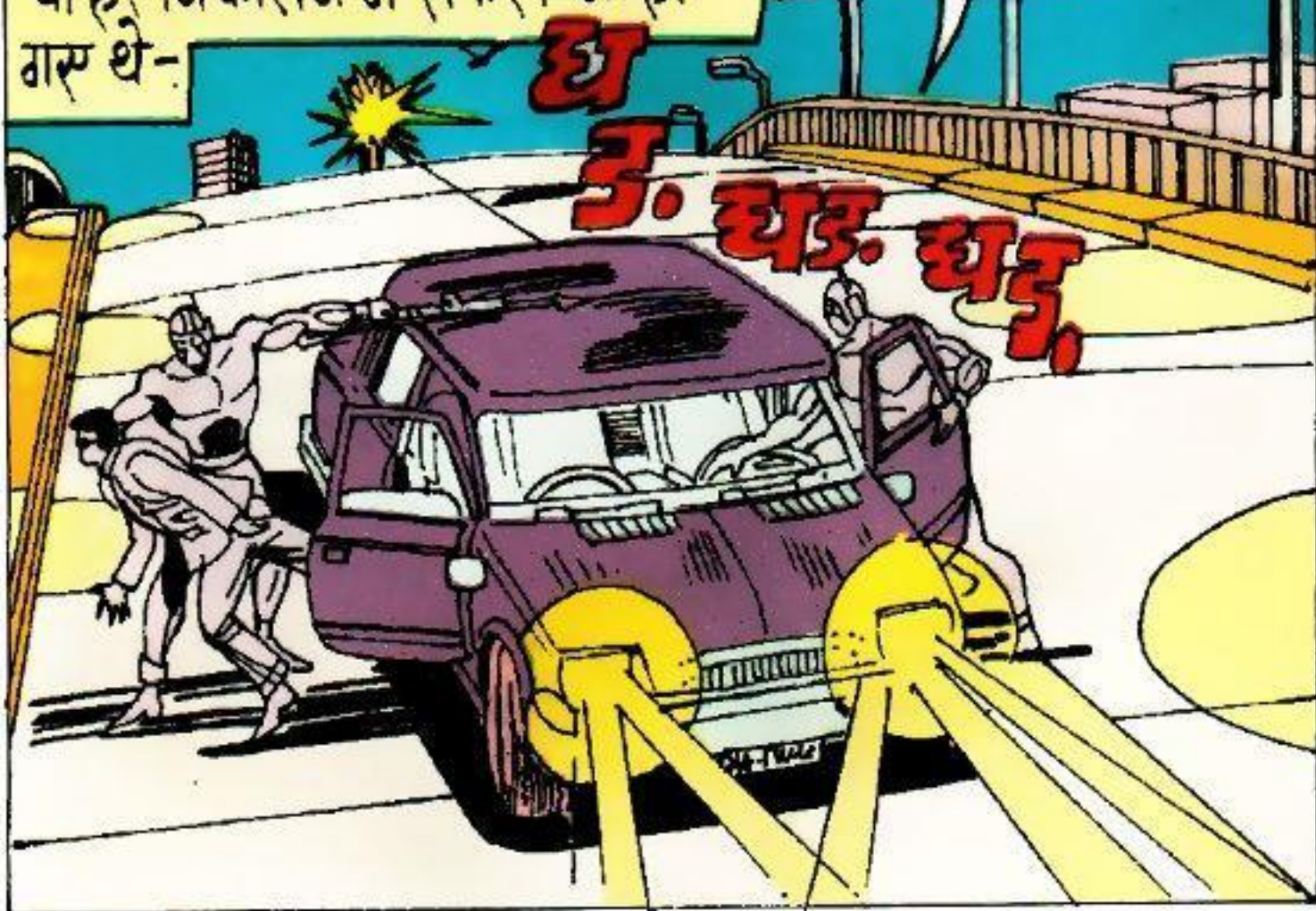
लेकिन चिड़िया की चीत्कार ने उसकी किसी आते हुए खतरे की सूचना दे दी थी–
इसीलिए हारपून उसका बदन तो छेद नहीं पाया–
घर्रर्र
लेकिन मोटरसाइकल के टायर से होता हुआ टंकी को छेद गया–
इस धक्के से मोटर साइकल का संतुलन बिगड़ गया। ध्रुव तो कूद कर बच गया–
धड़ाक
लेकिन मोटरसाइकल न बच सकी–
जब तक ध्रुव संभलकर खड़ा होता तब तक कार फ्लाई-ओवर से उतरने के लिए मुड़ चुकी थी–
ओह! ये भाग रहे हैं। स्टार-लाइन का प्रयोग करके मैं जल्दी नीचे नहीं पहुंच पाऊंगा! क्योंकि ढलान मुझे झूलने की जगह नहीं देगी। लटक-लटक कर उतरना पड़ेगा। कोई और रास्ता सोचना होगा, इन तक जल्दी पहुंचने के लिए...
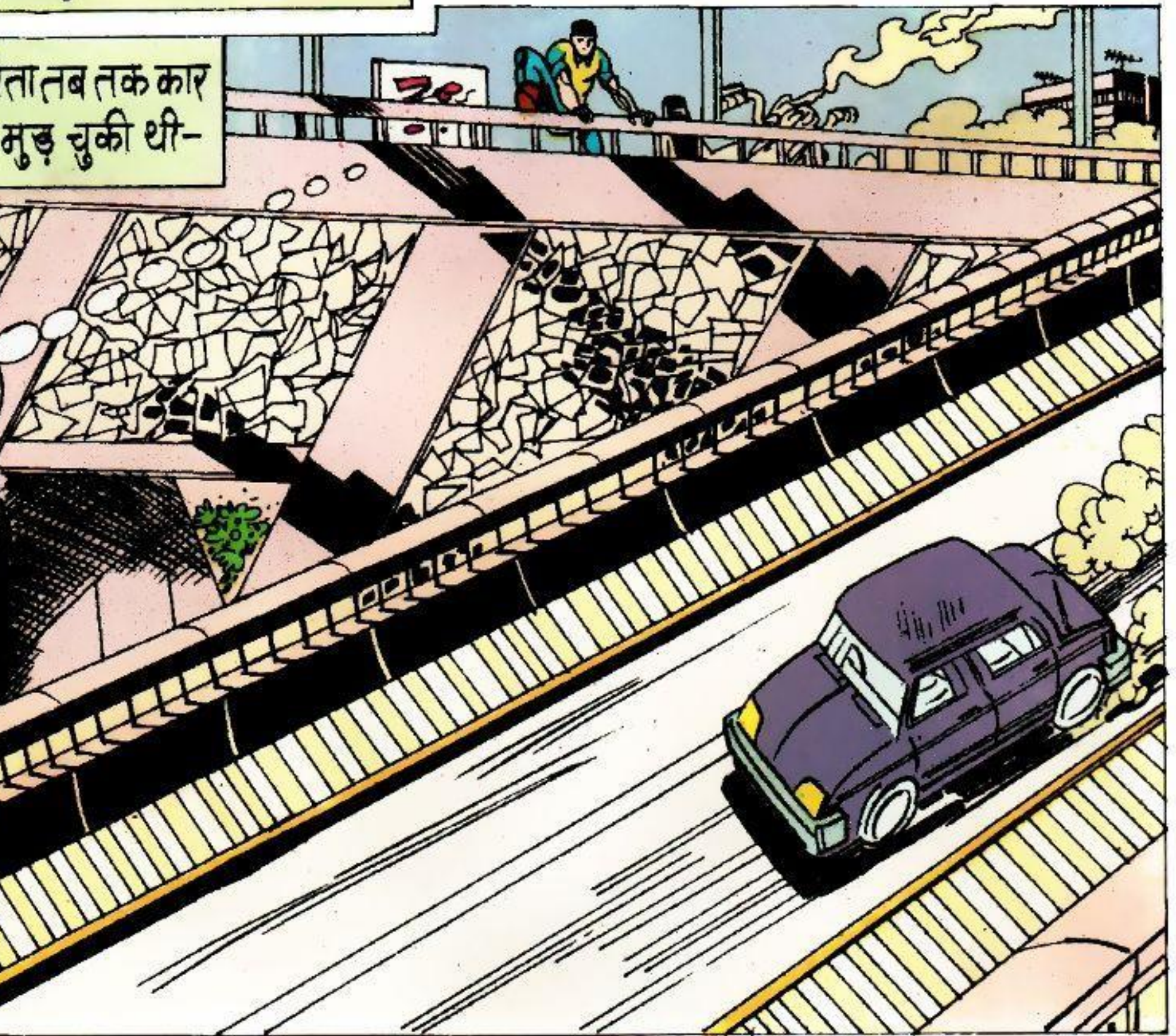
ये पहिया, जो मोटरसाइकल से टूटकर लगभग अलग हो गया है, यह मुझे जल्दी नीचे पहुंचा सकता है!

अगले ही पल, जुपिटर सर्कस में सधा ध्रुव का बदन, तीव्र गति से ढलान से नीचे उतर रहा था-
और कुछ पलों बाद-

वह भागती हुई कार की छत पर था-

दरवाजा खुल नहीं रहा है। इन गुंडों ने दरवाजा अंदर से लॉक कर रखा है!
इस गाड़ी को जल्दी से जल्दी रोकना होगा! कोई और तरीका सोचता हूं!
वह आलू का ठेला! यह कार रोकने में मेरी मदद कर सकता है!
NOR
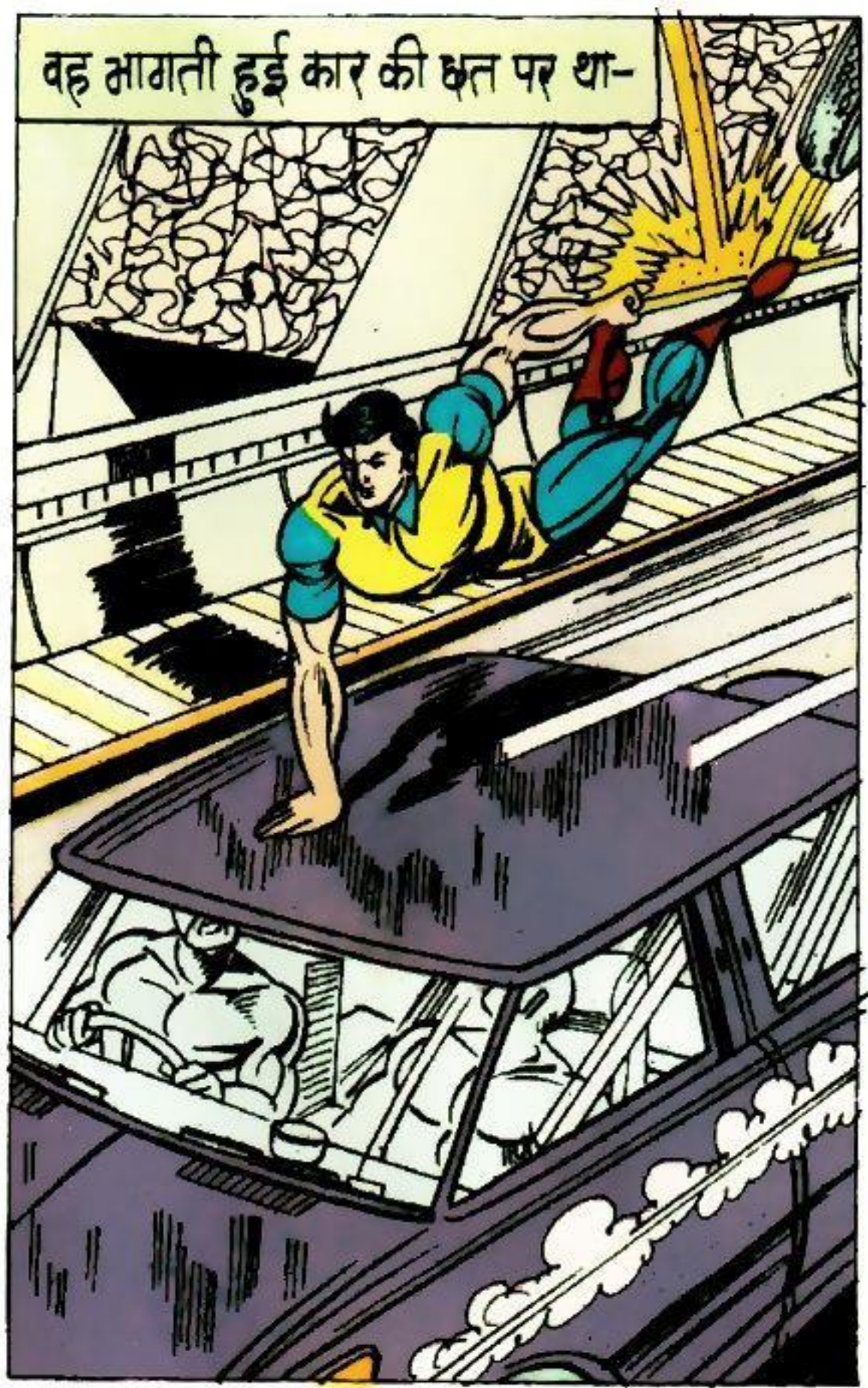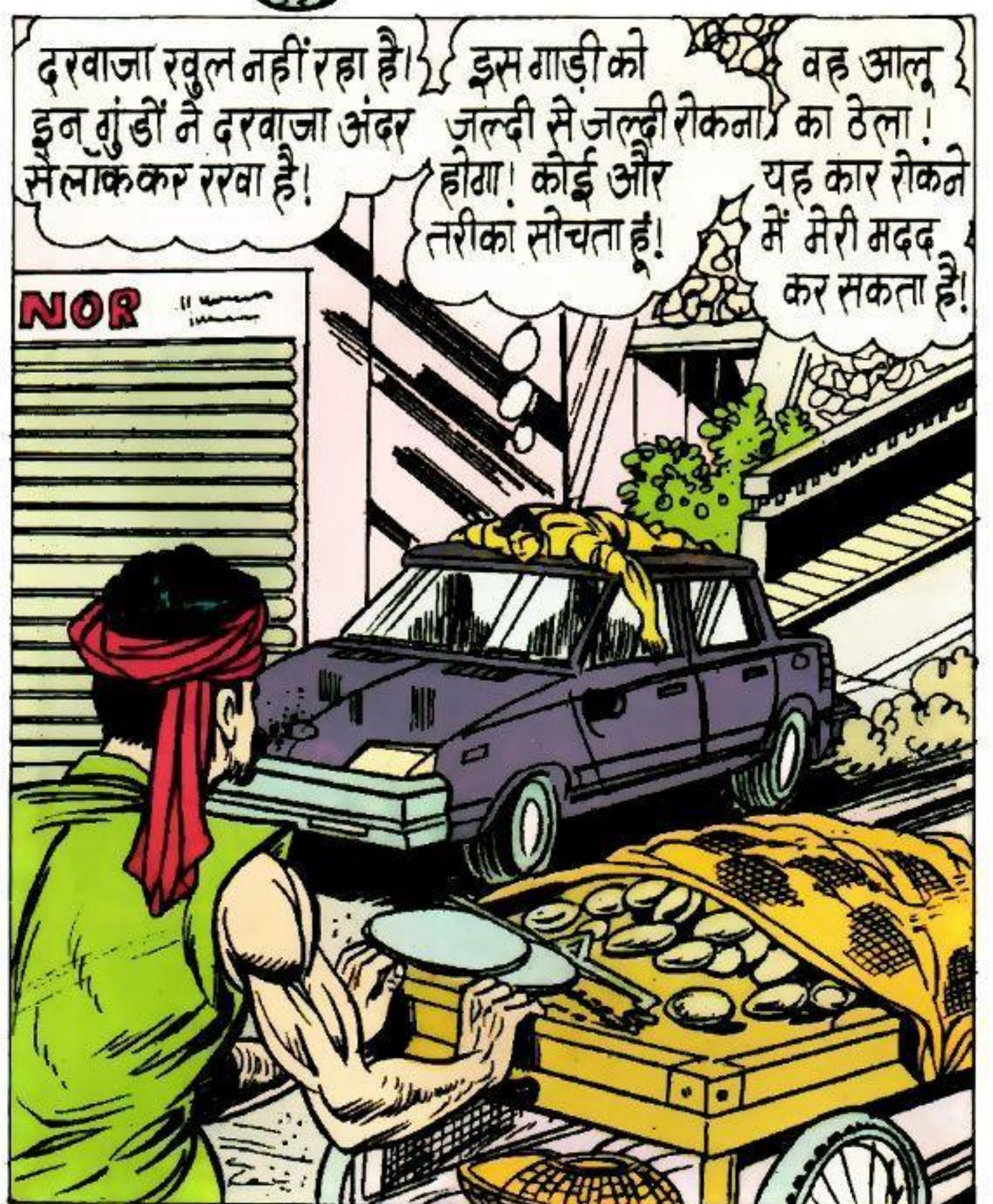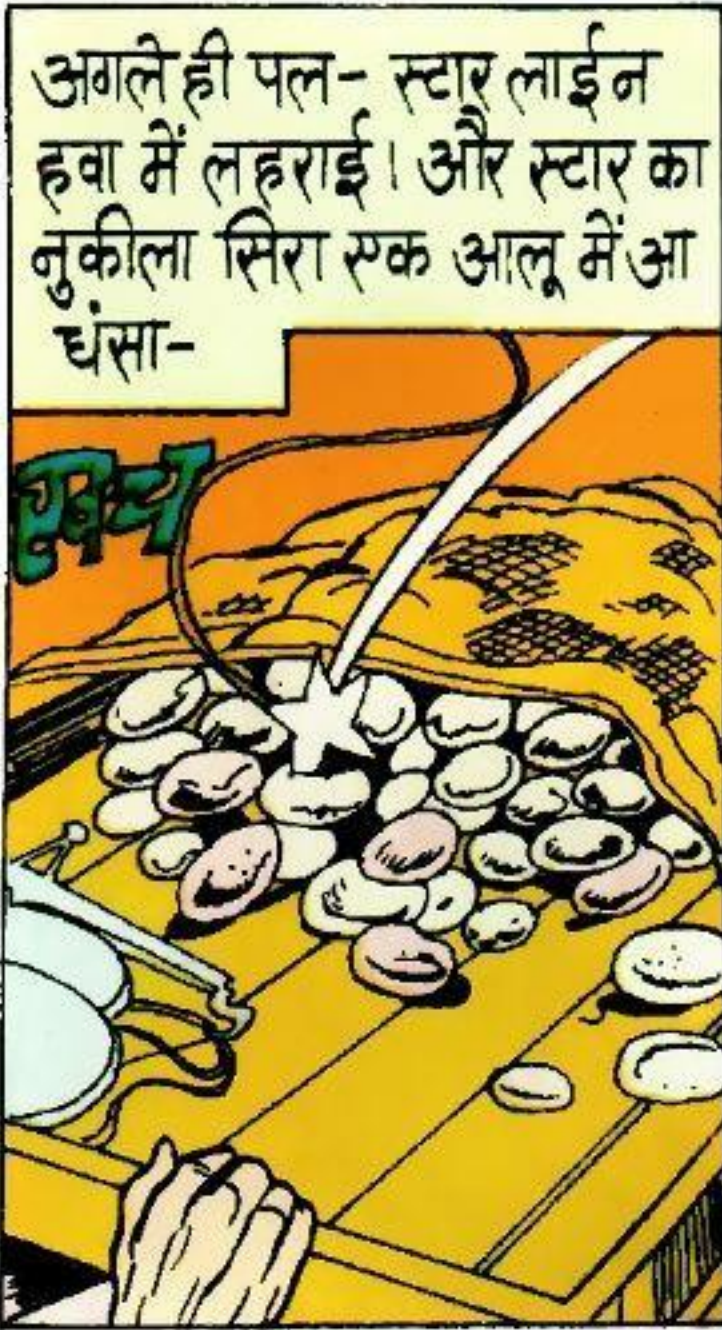
अगले ही पल- स्टार लाईन हवा में लहराई। और स्टार का नुकीला सिरा एक आलू में आ धंसा-
ख्चस्स

य... यह क्या कर रहा है? आलू से क्या करेगा?
पता नहीं! लेकिन मुझे इतना जरूर मालूम है कि ये खतरनाक लड़का आलू से भी बम का काम ले सकता है।...
...गाड़ी लहराकर इसको गिराने की कोशिश करो!
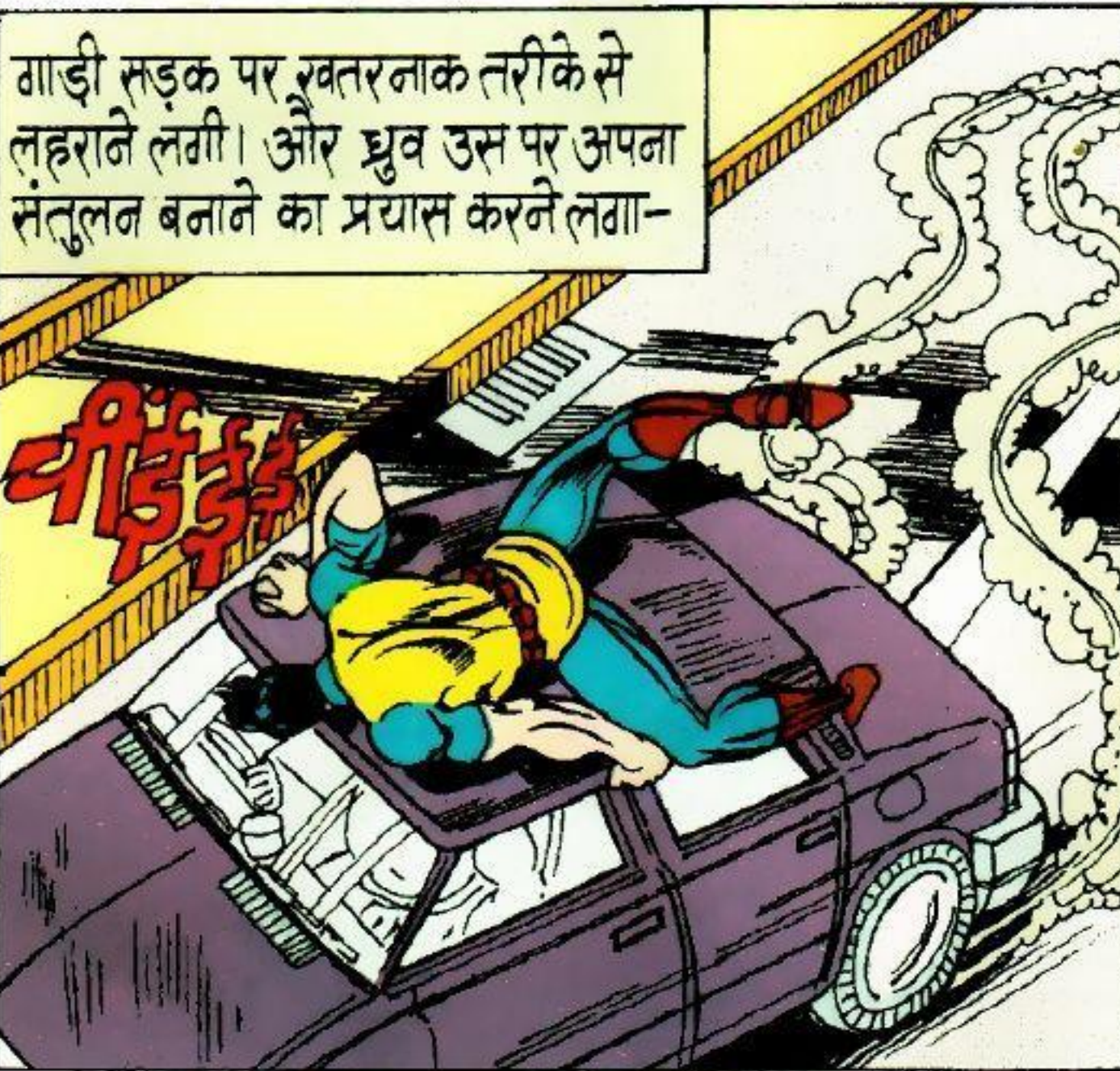
गाड़ी सड़क पर खतरनाक तरीके से लहराने लगी। और ध्रुव उस पर अपना संतुलन बनाने का प्रयास करने लगा-
चींईईईई

...तो वह नहीं होता, जो हुआ था!...
चंदा ओ चंदा ऽऽऽऽऽ किसने चुराई ऽऽ तेरी मेऽऽरी निंदिया ऽऽऽऽऽ
अरे, पीछे तो देखो!
GIRLS HOSTEL

अपने ख्यालों से लड़ाई कर रही चंदा, सोच में इतनी गहरी डूब चुकी थी कि उसे यह भी होश ना था कि वह कहां चल रही है-
वह सड़क के बीचो-बीच चल रही थी-
तरुण एकाएक मेरे सामने क्यों आ गया? किस्मत ने मुझे दुख के अलावा कुछ नहीं दिया। काश! सात साल पहले मैंने हिम्मत की होती तो...

तुम्हारे 'मेडिकल गर्ल्स होस्टल' के खूसट चौकीदार को कैसा चकमा देकर तुम्हारे रूम तक पहुंच गया। वैसे सबसे पहले तो माफी मांग लूं!...
... क्योंकि आज मैं पहली बार तुम्हारे रूम तक आया हूं। वैसे तो हम बाहर ही मिल लिया करते थे, लेकिन दो दिन से न तो तुम क्लास अटेंड करने आई, और न ही मेरे पास कोई मैसेज भेजा!
ठप्प
तुम कुछ बोलती क्यों नहीं चंदा?

अरे! तुम तो पैकिंग कर रही हो! और तुम्हारी आंखों में आंसू?
आखिर बात क्या है? सब-कुछ ठीक तो है न?
कुछ भी ठीक नहीं है, तरुण! पापा को हमारे बारे में सब पता चल गया है!
और वे हमारे मिलने-जुलने के सख्त खिलाफ हैं!

पर क्यों? आखिर मुझमें क्या कमी है?
तुम्हारी तरह मैं भी मेडिकल की पढ़ाई कर रहा हूं। थर्ड इयर में पहुंच गया हूं! अच्छे खानदान और खाते-पीते घर का हूं। बुरी आदतें नहीं हैं मुझमें। फिर क्यों?
पापा के हिसाब से तुम हमारी हैसियत के नहीं हो तरुण!
तुम तो जानते ही हो कि पापा मिनिस्टर हैं। उन्होंने मुझसे बिना पूछे मेरी शादी किसी और मंत्री के बेटे से तय कर दी है!

ऐसा वे कैसे कर सकते हैं? आखिर तुम्हारी मर्जी भी कोई चीज है। तुम मना कर दो!
तुम पापा को नहीं जानते तरुण! उनके सामने मैं तो क्या, कोई भी जुबान तक नहीं खोल सकता। अब मैं तुमसे शायद कभी मिल नहीं पाऊंगी, क्योंकि...
304
... मैंने इसका नाम मेडिकल कॉलेज से कटवा दिया है।...

पापा!
जिस कॉलेज में तुम्हारे जैसे लफंगे पढ़ते हों, उस कॉलेज के गर्ल्स होस्टल में लड़कों का घूमना तो आम बात होगी।
और ऐसे कॉलेज में मेरी बेटी कभी नहीं पढ़ेगी!
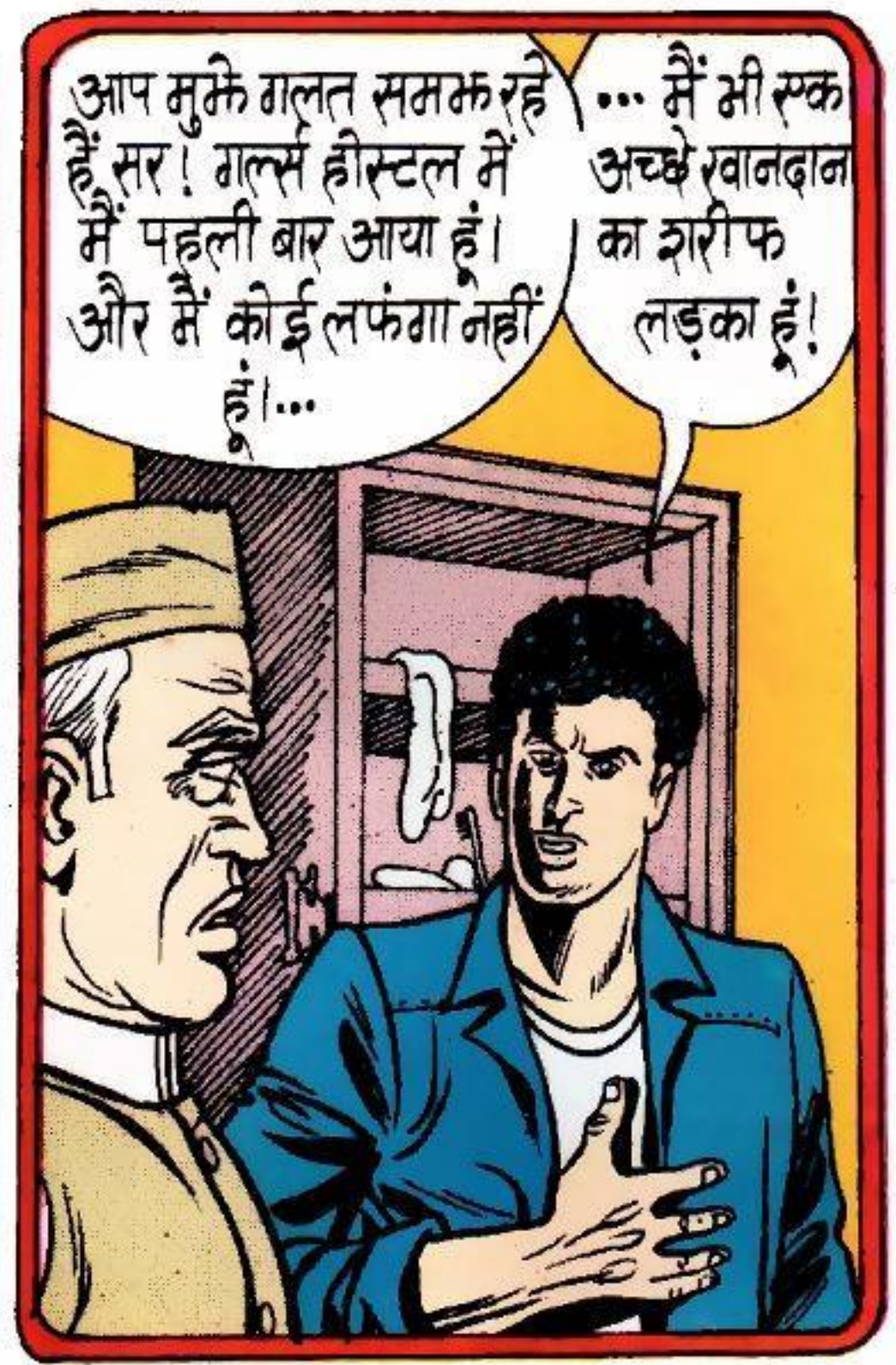
आप मुझे गलत समझ रहे हैं सर! गर्ल्स होस्टल में मैं पहली बार आया हूं। और मैं कोई लफंगा नहीं हूं।...
... मैं भी एक अच्छे खानदान का शरीफ लड़का हूं!

अगर तू सच कह रहा है तो तू किसी और के खानदान की औलाद होगा! जब मौका मिले तो अपनी मां से पूछ लेना कि तू उन्हें किस गटर से मिला था!
सर, आप मेरी बेइज्जती कर रहे हैं। और वह भी बिना किसी कुसूर के!
"तरुण के इरादे कतई भी खतरनाक नहीं थे! वह तो सिर्फ जोर से बोलने की झोंक में एक कदम आगे बढ़ा था—"

"लेकिन पापा के सिक्योरिटी गॉर्ड्स ने इसका कुछ और ही मतलब निकाला! बंदूक के बट की एक ही चोट से तरुण लहूलुहान हो गया। और पापा मुझे घसीटते हुए मेडिकल कॉलेज से बाहर ले गए—"
तड़ाक
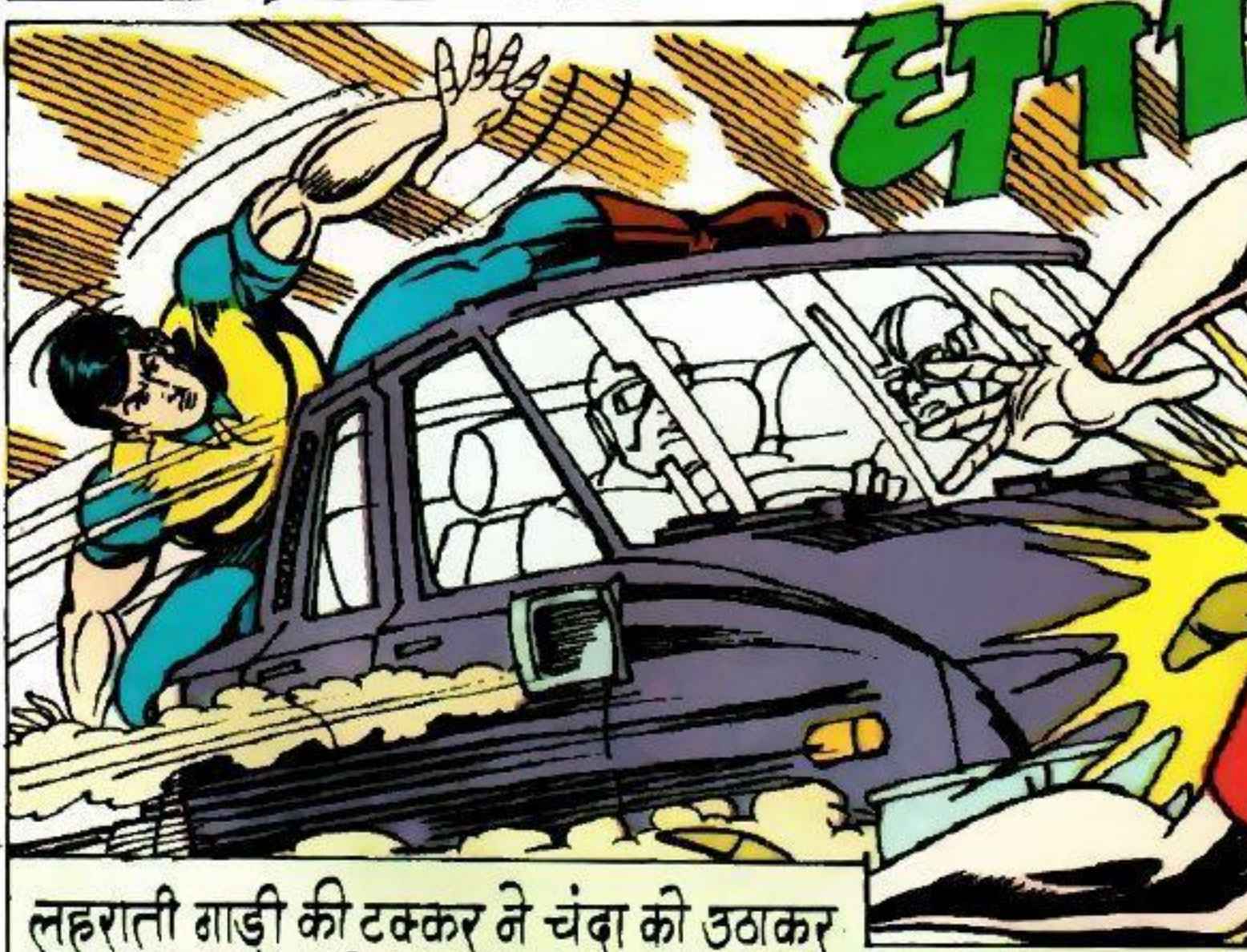
लहराती गाड़ी की टक्कर ने चंदा को उठाकर दूर फेंक दिया! और इस टक्कर के कारण ध्रुव भी अपना सन्तुलन खोकर गाड़ी की छत से नीचे आ गिरा—

लेकिन नीचे गिरने से, ध्रुव को वह करने का मौका मिल गया, जो वह करना चाहता था-
घप्प
एक ही धक्के से आलू कार के साईलेंसर में धंसकर फिट हो गया-
और अजीब-अजीब आवाजें निकालती गाड़ी एक झटके से रुक गई-
ध्रुव तेजी से चंदा की तरफ लपका-
आप ठीक तो हैं न?
घिर्रर्रर्र
घर्र्र
ज्यादा चोट तो नहीं आई आपको?
न... नहीं! थोड़ी गलती मेरी थी, और बाकी इस ड्राइवर की रैश ड्राइविंग की!
लेकिन गाड़ी से निकल कर भागने वाले तो अपराधी लग रहे हैं!
वे अपराधी ही हैं!...
...लेकिन जहां तक भागने की बात है...
... ये सुपर कमांडो ध्रुव से बचकर नहीं भाग पाएंगे!
धाड़
तड़ाक
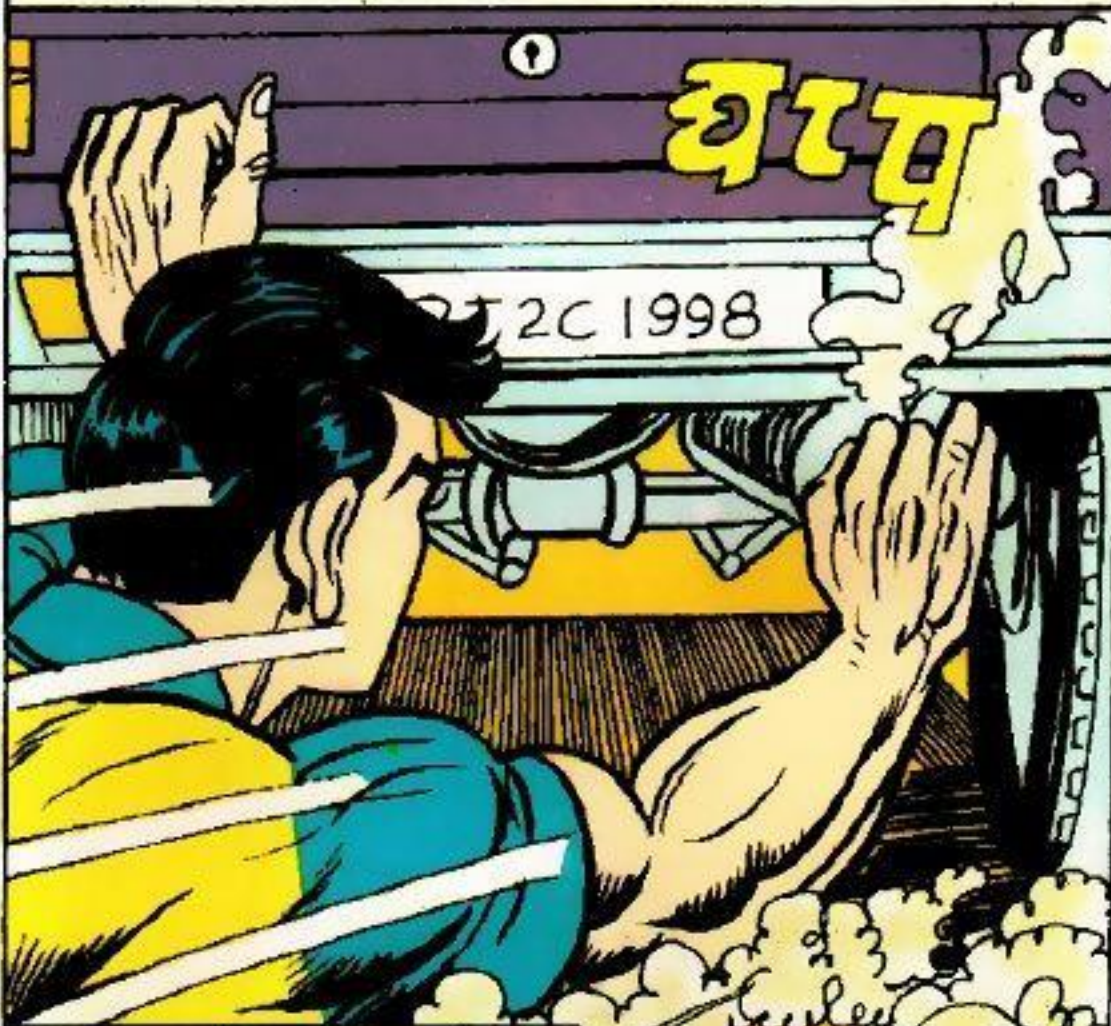
तुम क्या चुराकर भागे हो, यह तो मुझे पता नहीं है। लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि कोस्ट गॉर्ड्स तुम्हारे पीछे जरूर लगे होंगे...
तड़ाक
... और उनके आने तक मैं तुम दोनों के गिफ्ट पैक तैयार कर दूंगा!
ठाड़
दोनों गोताखोरों को पीटता हुआ ध्रुव, चंदा से थोड़ी दूर निकल आया था-
और चंदा को अपने शरीर में लगी चोटों का आभास अब हो रहा था-
ओह! अब पसलियों में दर्द शुरू होकर बढ़ रहा है। खराशों से खून भी निकल रहा... अरे! मेरा बदन एकाएक कांपने लगा है! यानी शक्ति मेरे रूप पर हावी होना चाहती है! पर क्यों?
जवाब, चंदा के शरीर में स्थापित, शक्ति के सूक्ष्म रूप से मिला-
इन दोनों अपराधियों ने तुमको चोट पहुंचाई है! इसका दंड इनको भुगतना होगा चंदा!
गलती मेरी भी थी शक्ति! मैं ही सड़क पर चल रही थी। और फिर मैंने तुमको मदद के लिए बुलाया भी नहीं है!
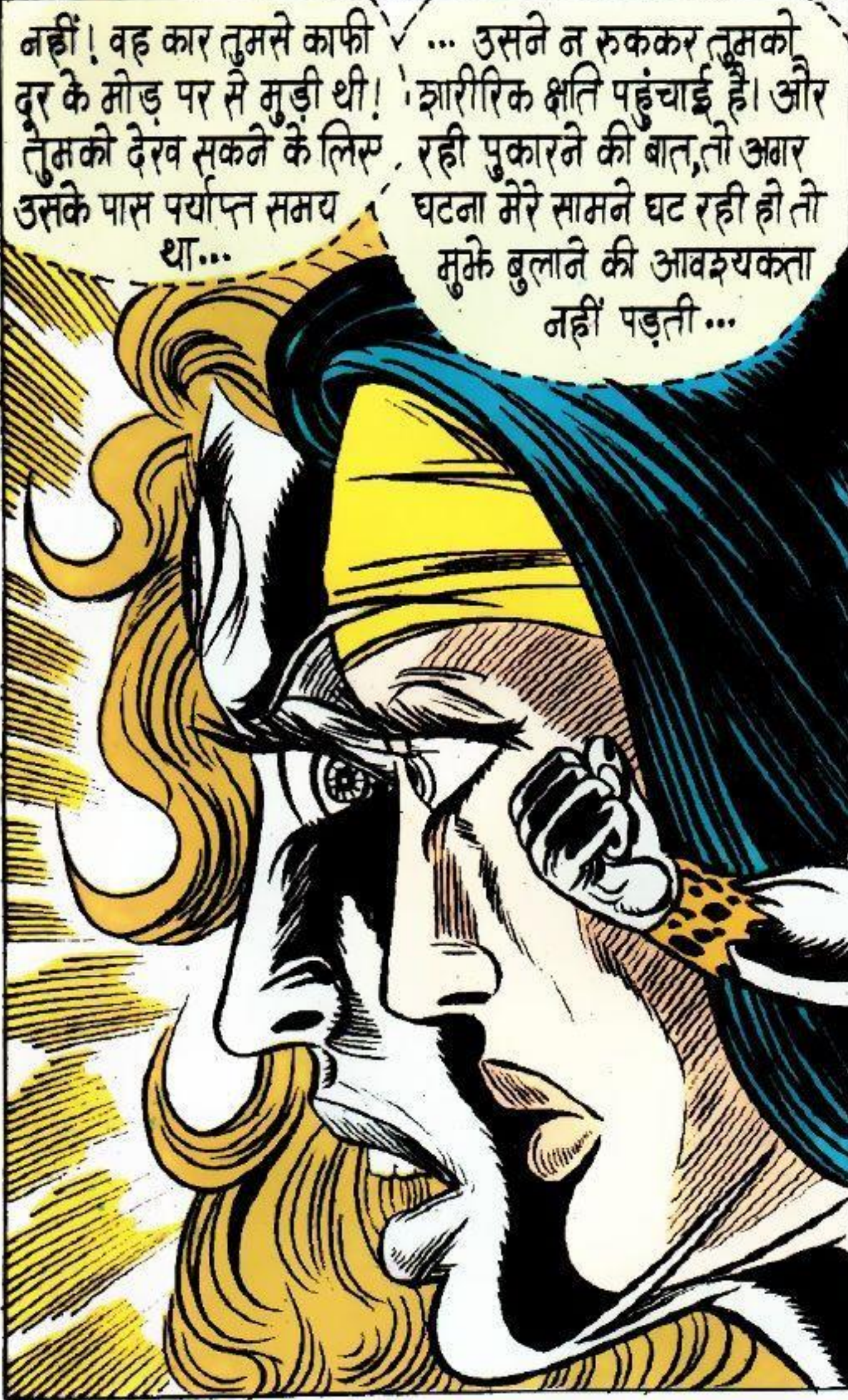
कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

ध्रुव नहीं जानता था कि वह घायल लड़की अपने स्थान से लुप्त हो चुकी है, और दूसरे रूप में उसके पास पहुंच चुकी है–
... क्योंकि मुझे उस घायल लड़की को अस्पताल भी पहुंचाना...
...आऽऽऽह!
ताऽऽ
शक्ति के रास्ते से हट जा लड़के! दंड देना शक्ति का काम है, तेरा नहीं!
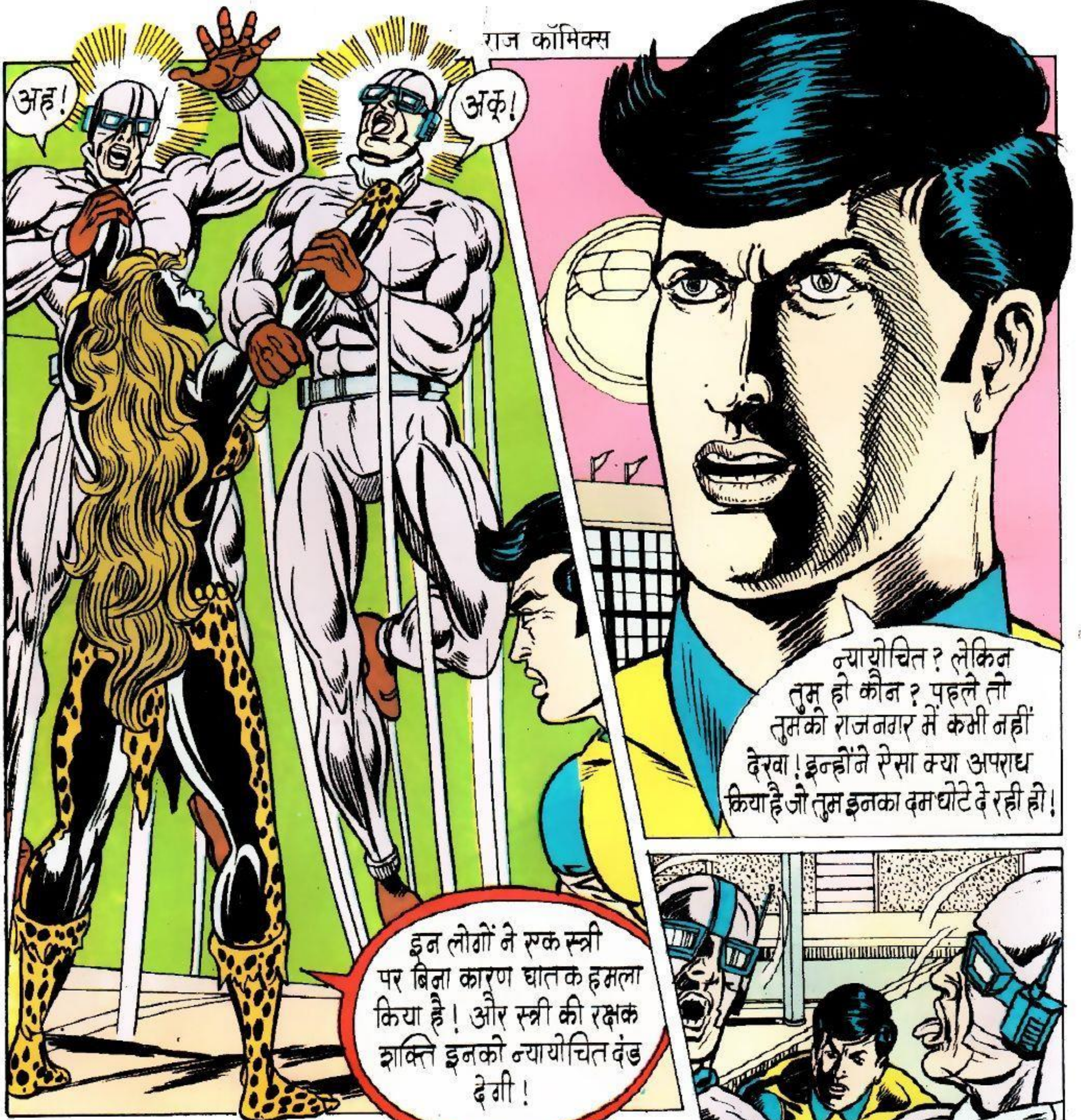
अह!
अक्!
न्यायोचित? लेकिन तुम हो कौन? पहले तो तुमको राजनगर में कभी नहीं देखा! इन्होंने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम इनका दम घोंटे दे रही हो!
इन लोगों ने एक स्त्री पर बिना कारण घातक हमला किया है! और स्त्री की रक्षक शक्ति इनको न्यायोचित दंड देगी!
मैं शक्ति हूं! नारी अस्मिता की रक्षक!
और मैं राजनगर तो क्या, पूरे ब्रह्मांड में विचर सकती हूं!
इन दुष्टों ने बचाने का समय रहते एक स्त्री को वाहन से टक्कर मारी है! और इसी अपराध का दंड ये भुगत रहे हैं!

मुझे यह तो पता नहीं कि 'तुम' कहाँ से आई हो! लेकिन राजनगर में बिना दूसरे पक्ष की बात सुने दंड देने का प्रावधान नहीं है! और वह दंड अगर देना ही पड़ा तो उसका अधिकार सिर्फ न्यायालय को है! मुझे या तुमको नहीं?
वैसे तो मैं स्त्रियों पर वार करने से परहेज करता हूं शक्ति...
धम्ममम
...लेकिन तुम्हारे केस में मुझे यह परहेज छोड़ना ही पड़ेगा! क्योंकि मेरा पहला काम कानून की सुरक्षा है! और वह 'सुरक्षा' यह कहती है कि इन दोनों को सही-सलामत हालत में पुलिस स्टेशन पहुंचाना होगा!
दोनों गोताखोर तो जमीन पर गिरने के बाद भागने की स्थिति में कतई नहीं थे! लेकिन ध्रुव के वार ने शक्ति की क्रोधाग्नि में घी जरूर डाल दिया था-
तूने इन कीड़ों का पक्ष लेकर शक्ति से टकराने की जुर्रत की! अब तुझे मुझ पर वार करने की सजा भुगतनी होगी!
क्योंकि मैं भी एक स्त्री हूं! और स्त्रियों पर वार करने वालों को मैं छोड़ती नहीं!
धमाक
वार इतना जोरदार था...

...कि हवा में उड़ता हुआ ध्रुव जमीन से टकराने के बाद भी कई फुट घिसटता हुआ चला गया--
ठक्क
आह! ऐसा वार तो मैंने अपने पूरे फाइटिंग-कैरियर में नहीं खाया!
यह 'शक्ति' आखिर है कौन? और यह जबरदस्त शारीरिक ताकत उसमें कहां से आई?
ध्रुव अभी शक्ति की शारीरिक शक्ति पर ही आश्चर्य कर रहा था--
जबकि उसे तो अभी शक्ति की कई आश्चर्यजनक शक्तियां देखनी थीं--
सजा भुगतने के लिए तैयार हो जा ध्रुव! शक्ति पर हाथ उठाने की सजा, शक्ति तेरे शरीर पर घाव लगाकर देगी!
ओह! इसमें तो आश्चर्य-जनक शक्तियां हैं!
इसके हाथ से तीव्र ऊष्मा निकलकर उस मेनहोल के ढक्कन को पिघलाकर, हथियारों का रूप दे रही है, और वे हथियार अपने-आप उड़कर मेरी तरफ आ रहे हैं...
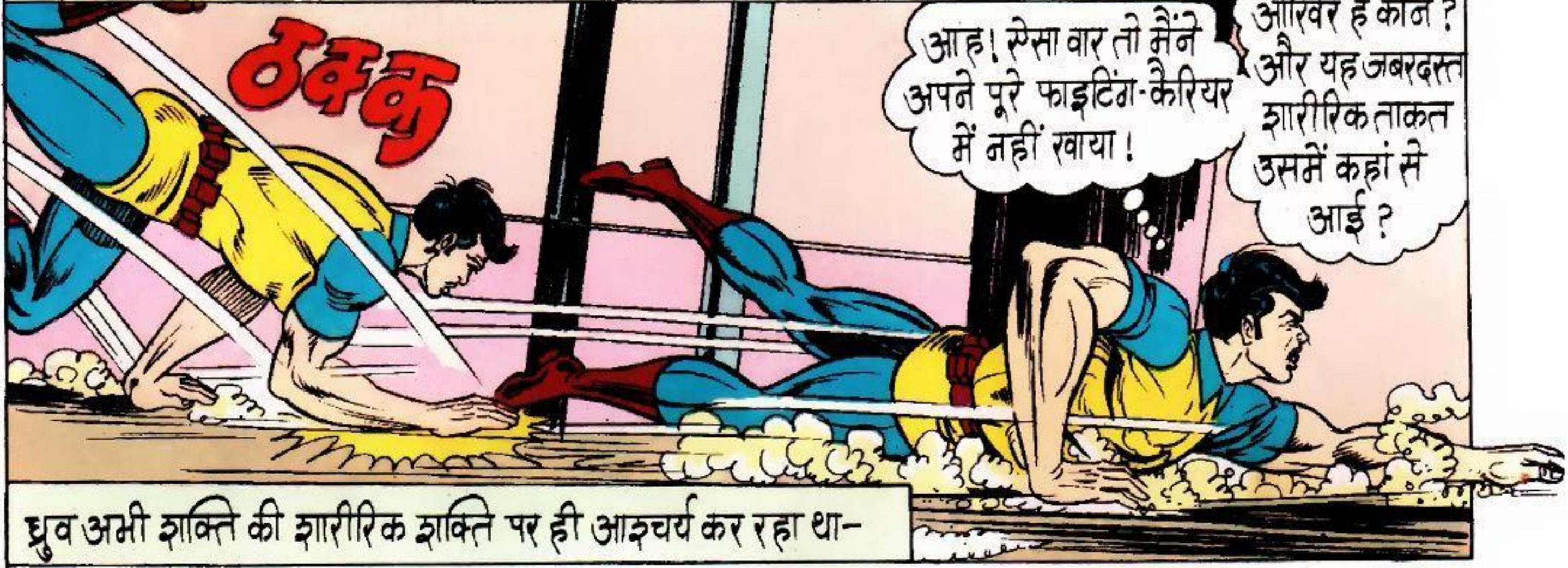
ध्रुव ने उन हथियारों से बचने की जी-तोड़ कोशिश की! लेकिन कभी ध्रुव सफल ही पाया-
तो कभी हथियार निशाना चूक गए-
आऽऽऽ ह! इन हथियारों की गति बहुत तेज है, और दिशा सटीक! ऊपर से ये संख्या में भी बहुत ज्यादा हैं! अभी तो एक घाव ही लगा है। लेकिन और घाव लगते देर नहीं लगेगी। अपना बचाव करने से यह लड़ाई खत्म नहीं होगी!... लड़ाई खत्म करने के लिए आक्रामक रुख अपनाना पड़ेगा!
वह रुख अपनाने का एक ही तरीका मेरे दिमाग में आ रहा है! पर उसके लिए इन गीताखोरों को यहीं छोड़कर जाना होगा!
फिलहाल तो ये बेहोश लगते हैं! और उम्मीद यही है कि ये जल्दी होश में आ भी नहीं पाएंगे! इसलिए इनके निकट भविष्य में भाग पाने का तो सवाल ही नहीं उठता!...
ध्रुव पहले से ही बिजली के पोल से लटक रही स्टार लाइन को पकड़कर उछला-
...और जब तक ये होश में आएंगे, तब तक उम्मीद है कि मैं जिन्दा वापस आ जाऊंगा!
ओह! तो तू भाग रहा है! पर शक्ति एक बार जिसके पीछे लग जाए, उसके लिए तीनों लोकों में भी छिपने का स्थान नहीं है!
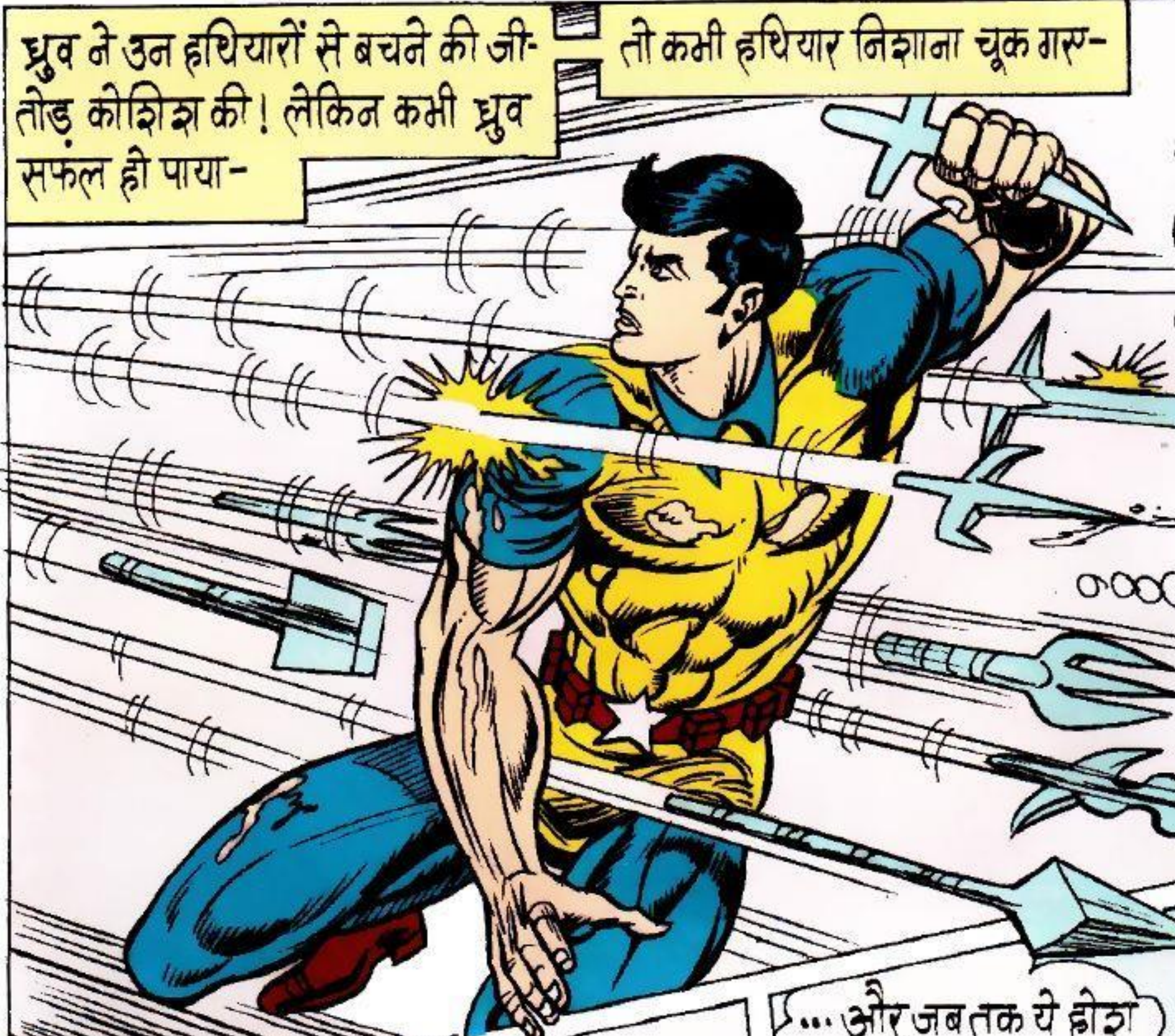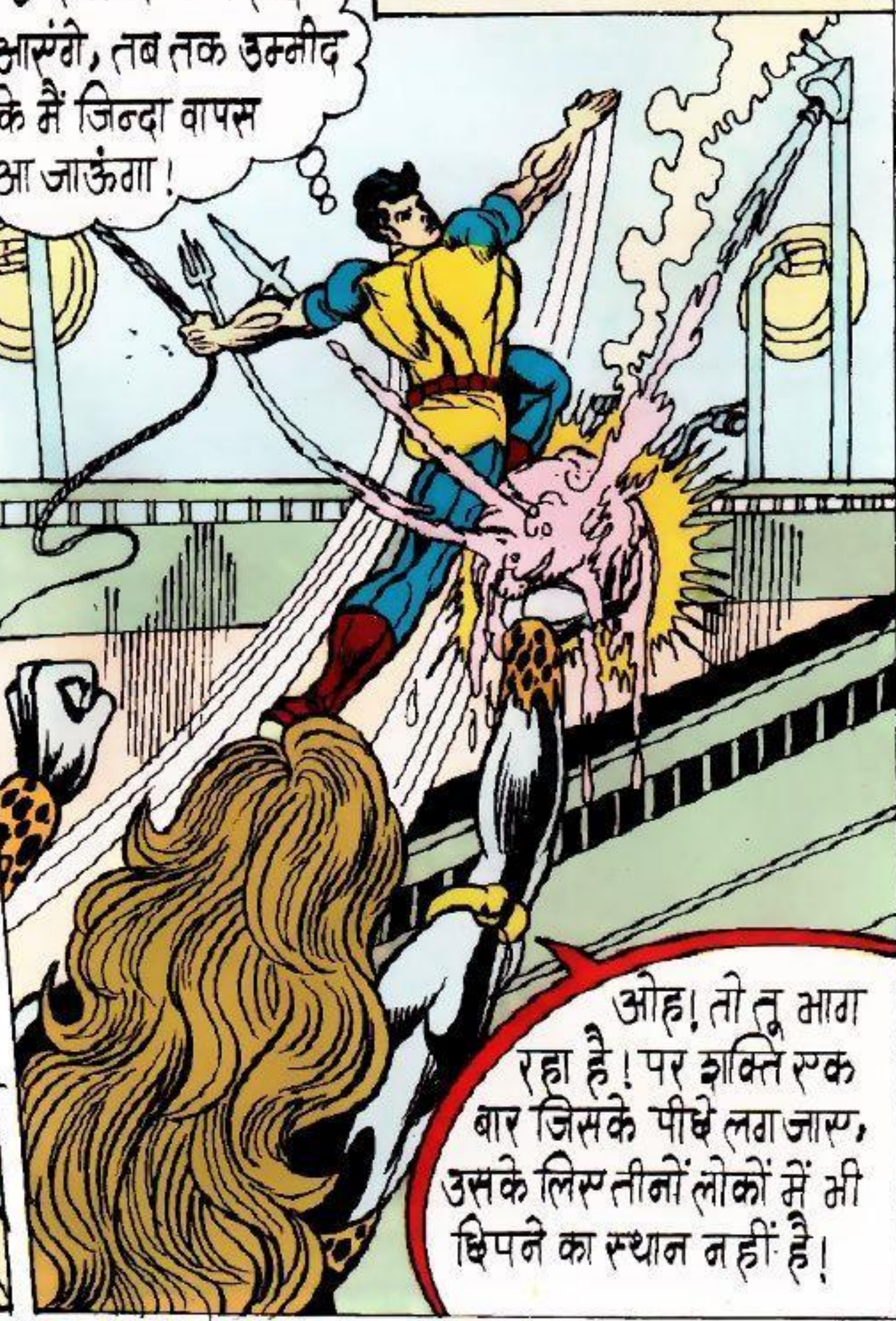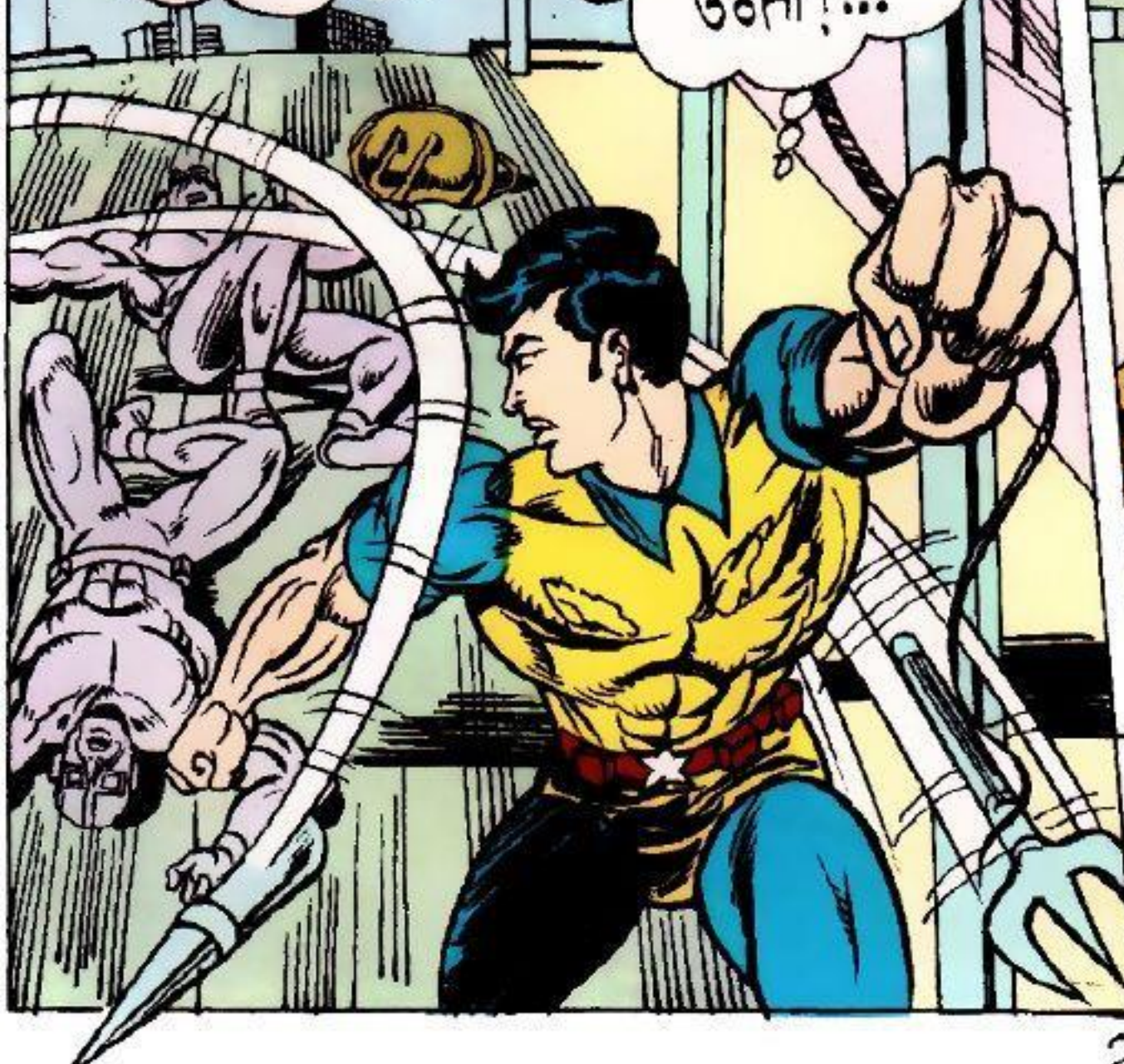
मैं न तो भाग रहा हूं, और न ही छिपने का रास्ता ढूंढ रहा हूं! मैं तो यहां पर तुम्हारे हथियारों का जवाब देने के लिए अपना हथियार ढूंढने आया हूं!...
... और मेरा हथियार है मोटरसाइकल का यह शॉक एब्जॉर्बर!
टक
अब मैं तुम्हारे वारों का जवाब तुम्हारे ही हथियारों से दे सकता हूं। इस शॉक एब्जॉर्बर से मैं तुम्हारे हथियारों को ठीक तुम्हारी तरफ ही मोड़ सकता हूं!
अब मुझे यह देखना है कि तुम अपने ही हथियारों का सामना कैसे करती हो!
टन
ओह! इस स्प्रिंग से टकराकर मेरे ही हथियार दुगुनी तेजी से मेरी तरफ आ रहे हैं!
मुझे अपने शरीर को स्थान-स्थान पर 'प्रकाशमान' करना होगा, ताकि ये हथियार बिना मुझे नुकसान पहुंचाए आर-पार ही जाएं!
लेकिन एक साथ अपनी दो शक्तियों का प्रयोग करने से मैं किसी भी शक्ति का प्रयोग ढंग से नहीं कर पाऊंगी। मुझे फिल-हाल हथियारों का छोड़ना रोकना होगा!
सांय
ध्रुव इसी पल का इंतजार कर रहा था—
ताकि बचाव करने की व्यस्तता हटते ही वह आक्रमक रुख अपना सके—
उसके शक्तिशाली बाजुओं ने मोटरसाइकल से पैट्रोल टैंक को अलग खींच लिया—
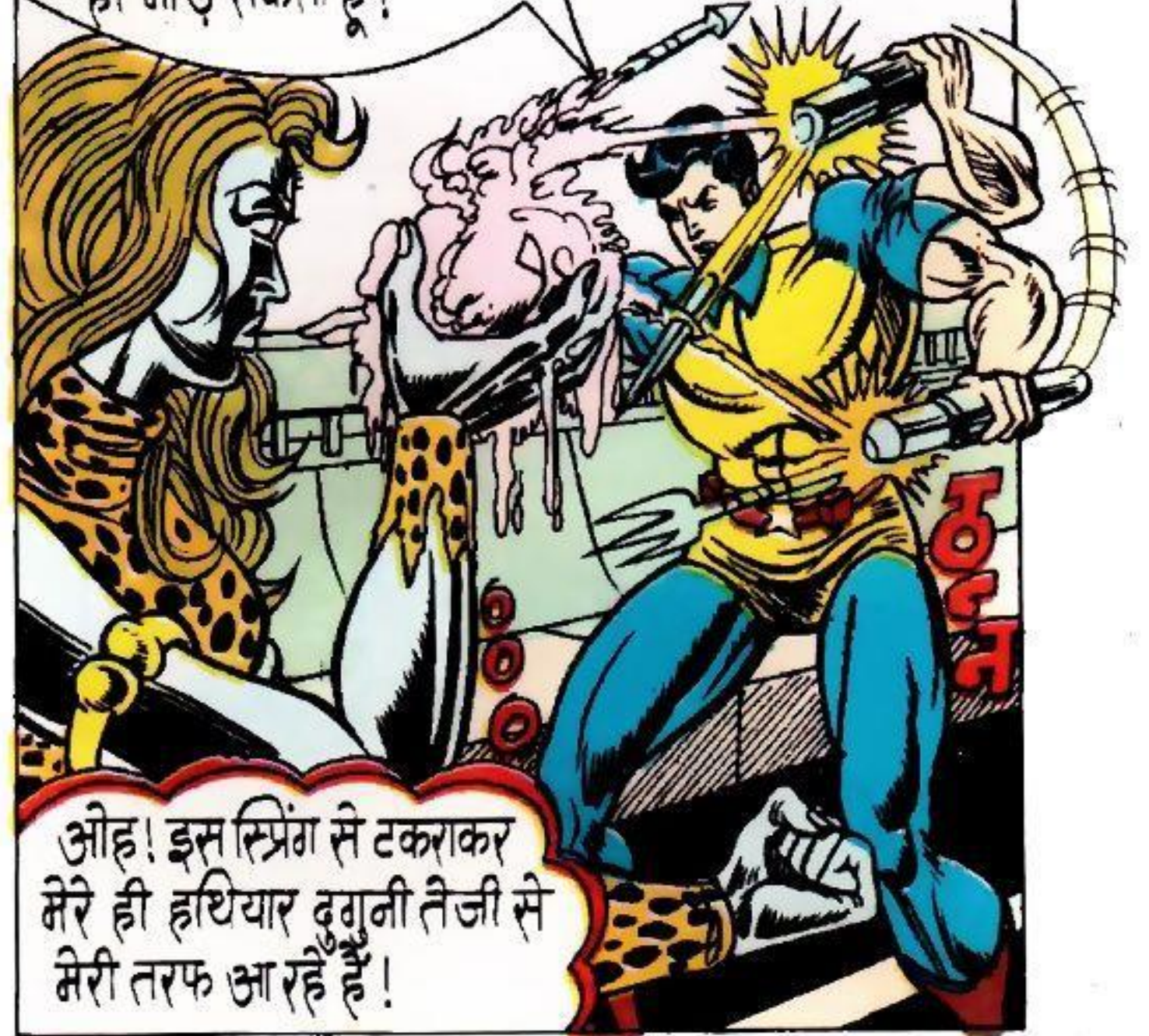
और उसी शक्ति की तरफ उछाल फेंका-
पलभर में ही पेट्रोल से पूरी तरह भरे टैंक ने स्क भभक के साथ शक्ति के शरीर को घेर लिया-
भभक
ओह! यह आग मुझे नुकसान तो नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि मैं खुद ही ऊर्जा का रूप हूं! लेकिन जब तक मैं मानव रूपी शरीर में रहूंगी, तब तक यह आग मुझे बेचैन करती रहेगी!
और इस बेचैनी में मैं अपने वारों को केन्द्रित नहीं कर पाऊंगी! इस आग से बचने का स्क आसान रास्ता है...
...लेकिन इस लड़के को अब मैं मुक्त रहने नहीं दूंगी!
...और वह यह कि मैं ऊर्जा रूप में परिवर्तित हो जाऊं! इस रूप में अग्नि लहरें पीछे रह जास्ंगी, और मैं मुक्त हो जाऊंगी!...
?
अब यह कुछ पलों तक ज्यादा उछल-कूद नहीं कर पास्गा! और उतनी देर में मैं इसको स्से फौलादी बंधनों में बांध दूंगी, जिससे यह कभी निकल नहीं पास्गा!

शक्ति ने बिजली के पोल को पिघलाकर, सरिए का रूप देना शुरू कर दिया-
और शक्ति की शक्तियों के इशारे पर नाचती सरिया ने ध्रुव को अपने घेरे में लेना शुरू कर दिया-
ओह! इसकी शक्तियों का तो कोई अन्त ही नहीं है। अब ये मुझे लोह बंधनों में जकड़ रही है!
वह इसलिए ताकि तुम उछल-कूद न कर सको! और मैं तुमको न्यायोचित दंड दे सकूं!
घम्म्म्म
योजना अच्छी है शक्ति! लेकिन ये खंभे बहुत मजबूत लोहे के नहीं होते हैं! मेरा एसिड कैप्सूल इन सरियों को कुछ ही पलों में इतना गला देगा...
हिस्स
...कि मैं इसको आसानी से तोड़ सकूं!
उमम्फ!
कट
चट
ओह! इतनी कड़ी टक्कर तो मुझे युगों से किसी ने नहीं दी!
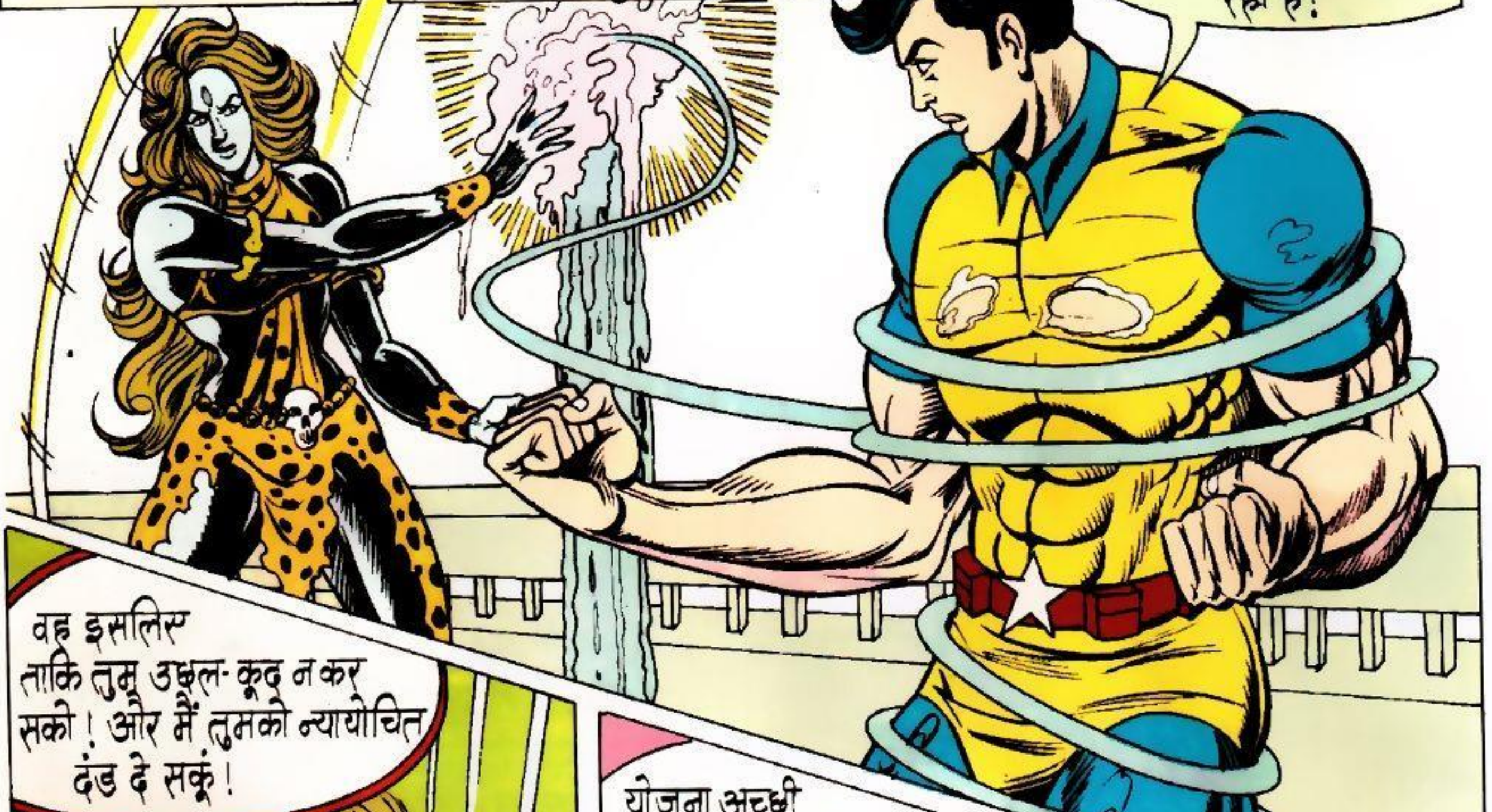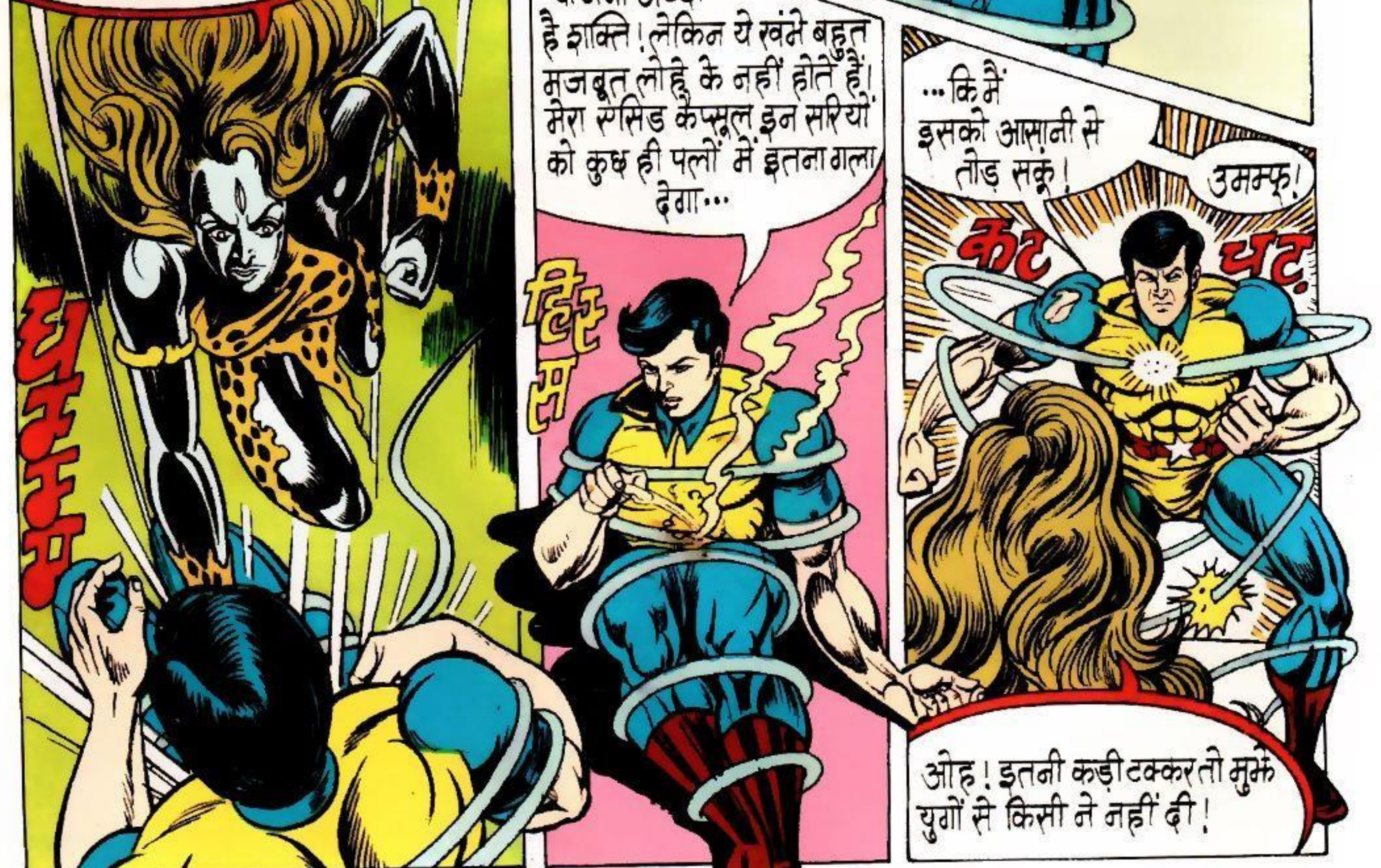
धमाक
पहली बार कोई मुझे ठोस चुनौती दे रहा है। अब आएगा इस लड़ाई का मजा!
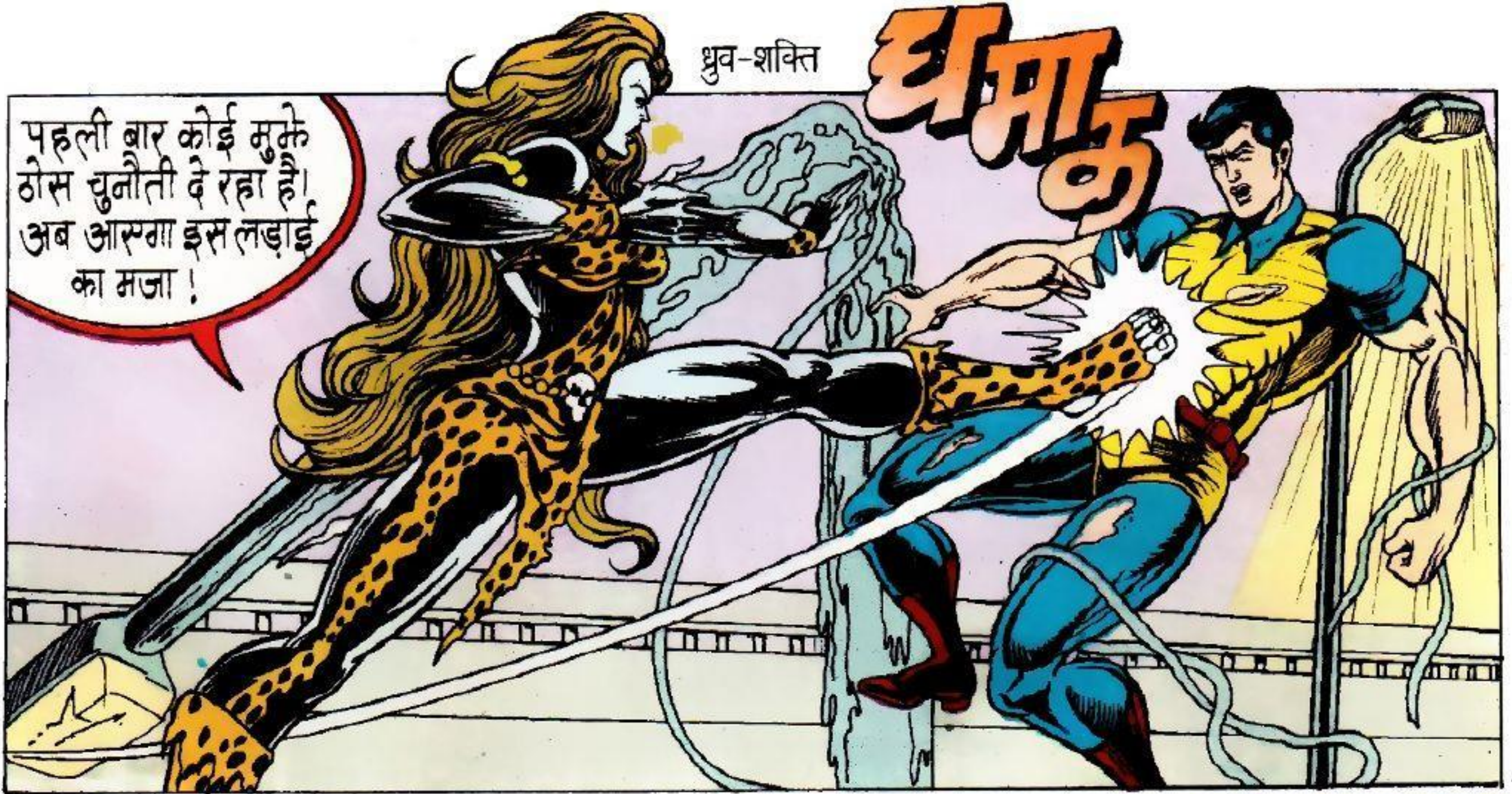
ओऽऽऽह! लेकिन मुझे मजा बिलकुल नहीं आएगा! इस स्त्री में तो किसी देवी जैसी शक्तियां हैं! इससे लड़ना तो समय और जान दोनों की ही बर्बादी है! काश, इससे पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता समझ में... अरे! यह मैं क्या सोच रहा हूं?
मैं हिम्मत हार रहा हूं। हारे हुए खिलाड़ी की तरह मैदान छोड़कर भागने की सोच रहा हूं! मुझे इसकी कोई कमजोरी ढूंढनी ही होगी! इसकी मुख्य शक्ति है इसका प्रकाश में बदलकर उड़ जाना, और हाथ से ऊष्मा छोड़कर धातु को पिघलाकर हथियार बनाना... आहाऽऽऽ
समझ में आ गया एक रास्ता! लेकिन उसके लिए मुझे इसको यहां से थोड़ी सी और दूर ले जाना होगा!

अगले ही पल ध्रुव ने पागलों की तरह एक दिशा में दौड़ लगा दी–
मैं पहले ही कह चुकी हूं कि तू मुझसे भाग नहीं सकता! मरकर भी नहीं!
लेकिन तू बिना मार खाए समझेगा नहीं!
ध्रुव एक जोरदार वार खाकर नीचे जा गिरा। और साथ ही साथ शक्ति ने उसकी बेल्ट भी खींच ली–
इसी बेल्ट की पॉकेटों से तू 'एसिड कैप्सूल' निकाल रहा था न? अब ये बेल्ट ही तेरे पास नहीं रहेगी!
धड़ाम

अब मैं तुझे ऐसी शक्तिजाल में कैद करूंगी जिससे तू कभी निकल नहीं पाएगा। शक्ति की हर जगह ऐसे जाल बनाने के लिए धातु मिल ही जाती है, और यहां कहीं भी...
...आहा! मिल गई। तुम लोगों की इधर-उधर चीजें फेंकने की आदत मेरे बड़े काम आती है!
ध्रुव को पता था कि शक्ति को क्या चीज नजर आई है—
यह मेरा आखिरी वार है। यह अगर असफल हो गया तो फिलहाल मेरे पास और कोई रास्ता नहीं बचेगा!
रास्ता धीरे-धीरे बंद हो रहा था। क्योंकि शक्ति के हाथ की गर्मी ने उस धातु के तानों-बानों की बुनना शुरू कर दिया था—
लेकिन इससे पहले कि जाल ध्रुव तक पहुंच पाता—
एक धमाका हुआ, और असावधान शक्ति का शरीर हवा में उड़ गया—
ब बड़ाऽऽऽऽम्मम्म
आहा! योजना सफल रही! मैं शक्ति को खींचता हुआ, यहां तक ले आया था, जहां दोनों गोताखोरों के ऑक्सीजन टैंक पड़े हुए थे। नया आकार होने के कारण शक्ति यह नहीं समझ सकी कि वे ऑक्सीजन से भरे प्रेशराइज्ड टैंक हैं!

और मैं यह भी अच्छी तरह से जानता था कि इस स्थान पर शक्ति को इन टैंकों के अलावा धातु की और कोई चीज नहीं मिल पाएगी !

तभी भीषण उष्मा के कारण दूसरा ऑक्सीजन टैंक भी फट गया–

और पहले विस्फोट के कारण असंतुलित शक्ति को एक और करारा झटका झेलना पड़ा
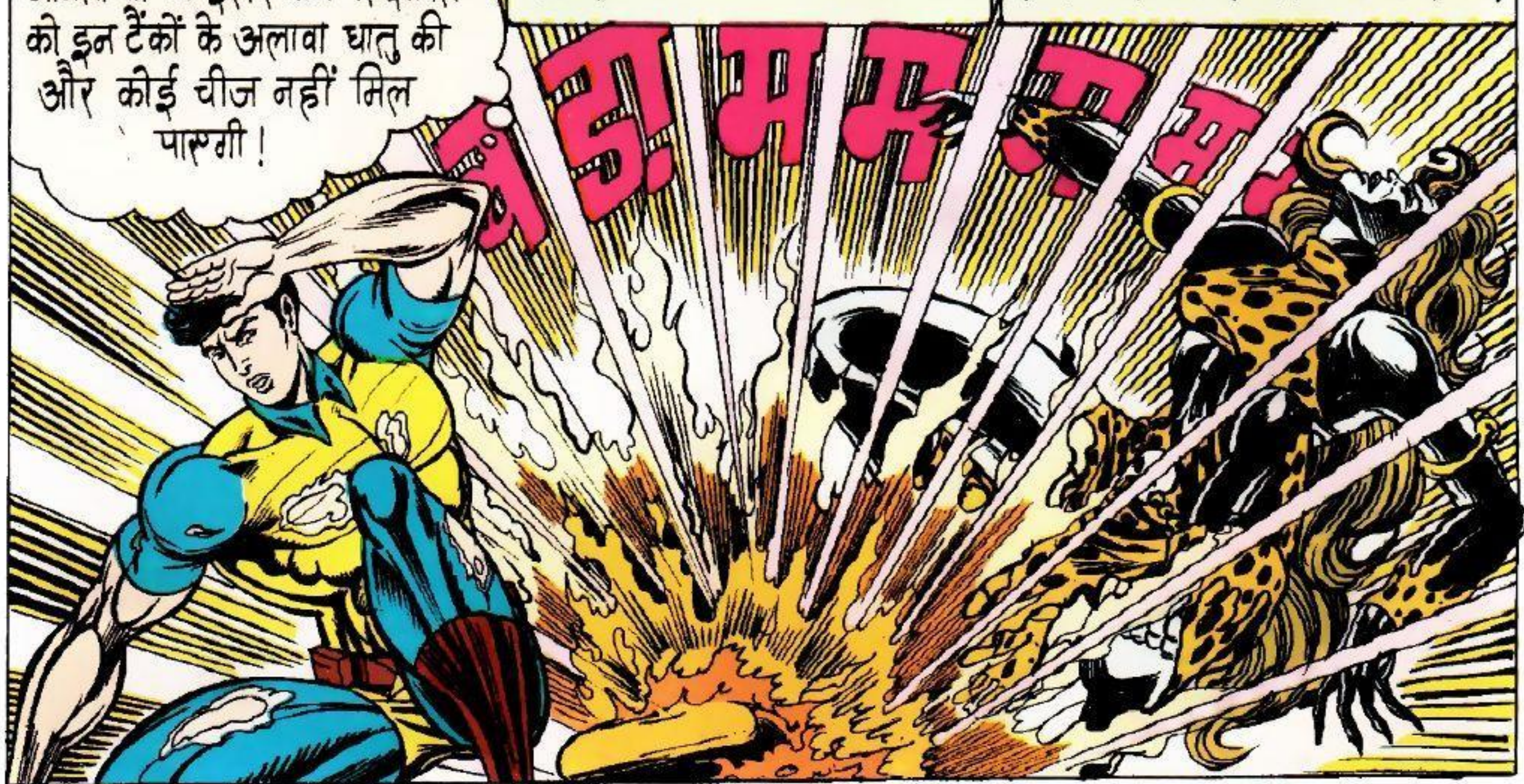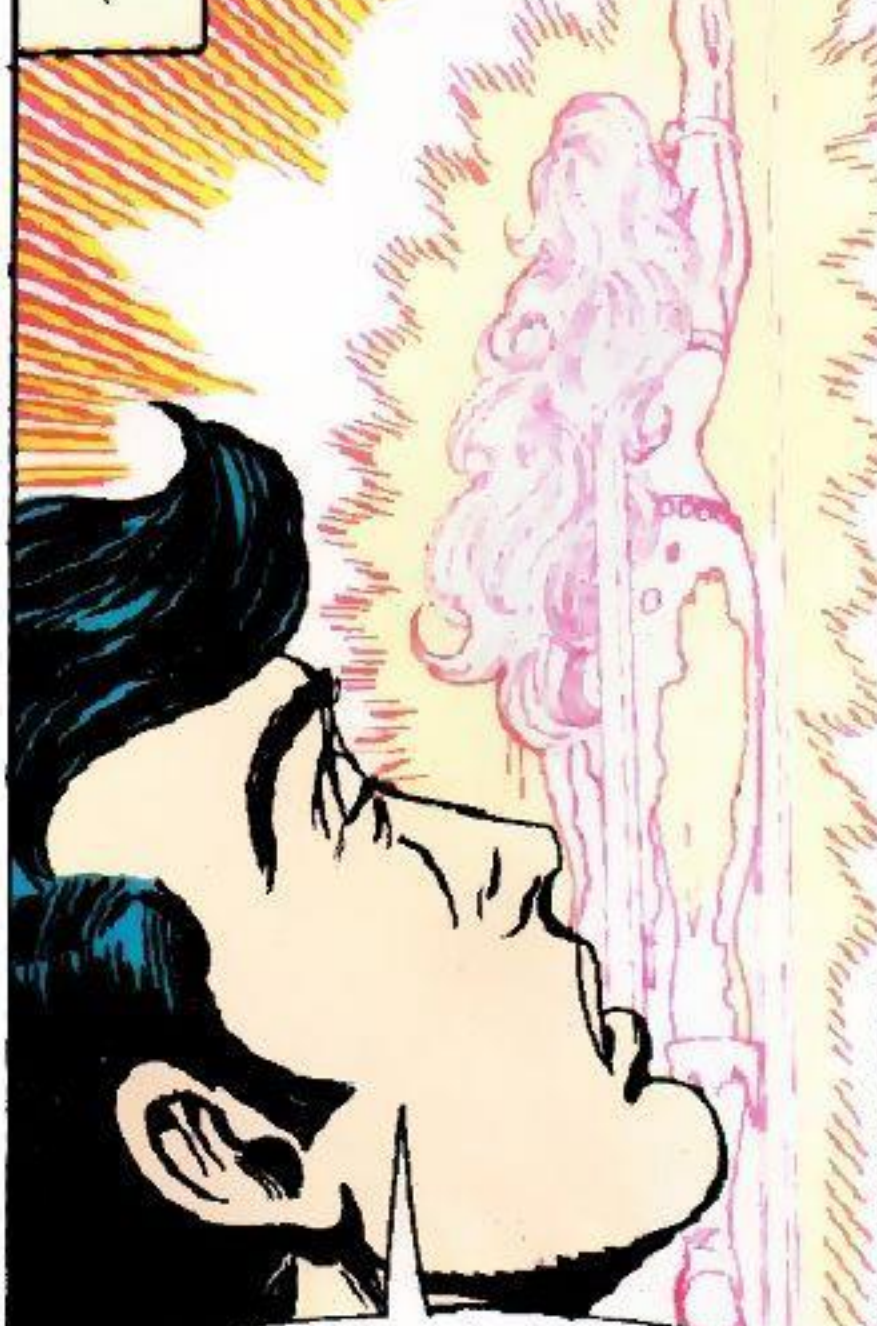
नहीं! यह मुझसे दूर जा रही है! जरूर इसके साथ कोई मजबूरी रही होगी! वर्ना यह मुझे छठी का दूध याद दिलाकर ही जाती! खैर!...
...फिलहाल तो यह लड़ाई खत्म हो गई है! अब चलकर उन गीतारवीरों को देखूं! कहीं वे भाग न गए हों?
लेकिन ध्रुव को उस स्थान तक जाने की जरूरत नहीं पड़ी। गीतारवीर उसको रास्ते में ही मिल गए-
धन्यवाद ध्रुव! इनके मुंह से हमको पता चल गया कि इनको तुमने और एक महिला ने पकड़ा है!
पर मुझे तो तुम्हारे साथ कोई महिला नजर नहीं आ रही!
महिला! ओह... आप कोस्ट गार्ड्स बहुत सही समय पर आए हैं। क्योंकि मुझे तुरन्त कहीं जाना है!...
...उस लड़की के पास जो कार की टक्कर से घायल हो गई थी! इस लड़ाई के चक्कर में तो मैं उसे भूल ही गया था!
ध्रुव, तेजी से चन्दा की तरफ लपका-
और जल्दी ही चंदा के पास पहुंच गया-
इस दौरान शक्ति, चंदा के रूप में बदलकर उसी स्थान पर वापस पहुंच चुकी थी-
अरे! आपको क्या हुआ? आपकी हालत तो काफी खराब लग रही है! पर अभी तो आप कह रहीं थी कि आप एकदम ठीक हैं!...
...मैं अभी आपको अस्पताल ले चलता हूं!
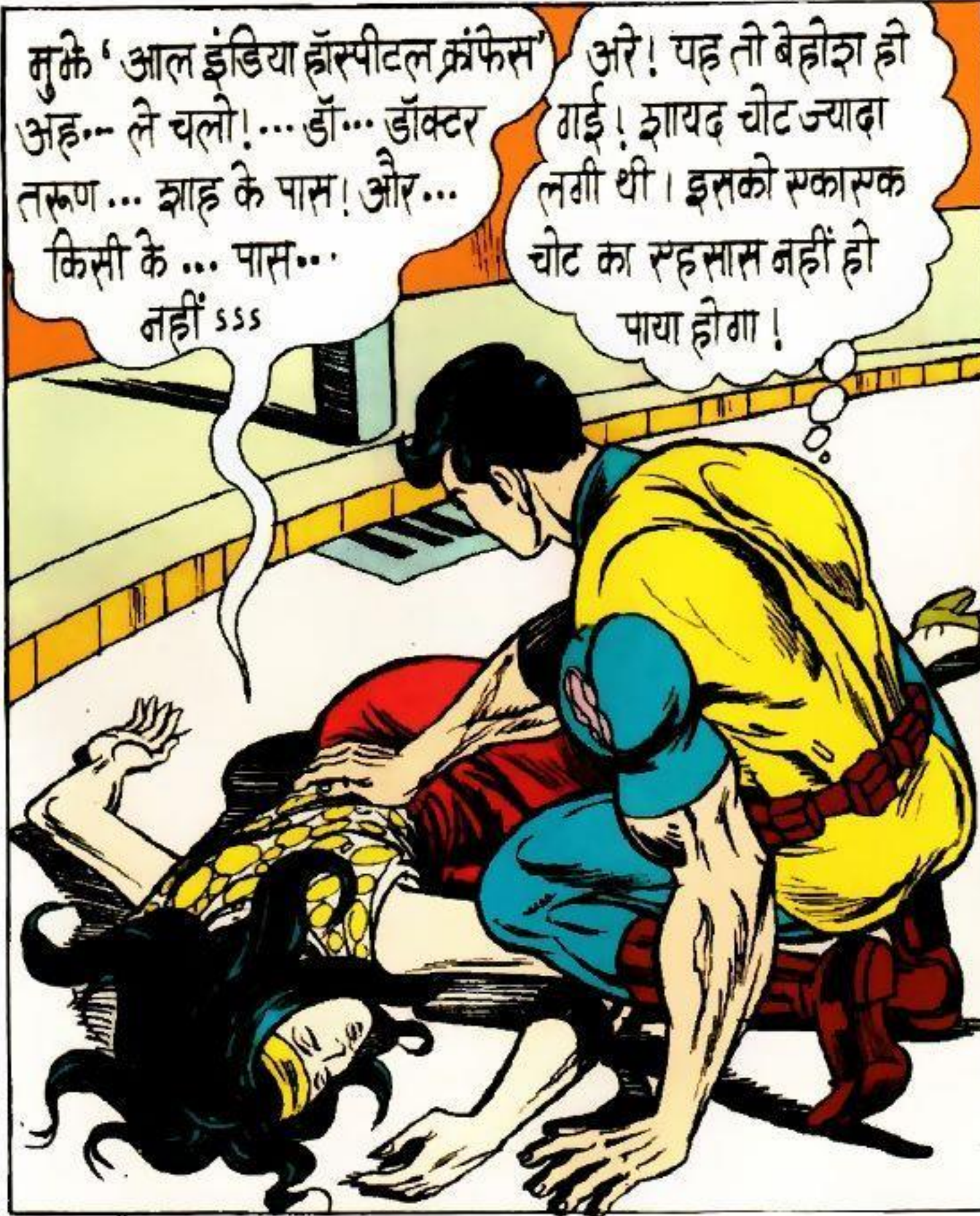
मुझे 'आल इंडिया हॉस्पीटल क्रांफेस' अह.- ले चलो!... डॉ... डॉक्टर तरूण ... शाह के पास! और... किसी के ... पास... नहीं sss
अरे! यह तो बेहोश हो गई! शायद चोट ज्यादा लगी थी। इसको एकाएक चोट का एहसास नहीं हो पाया होगा!
मेरी मोटरसाइकल का तो कचूमर निकल गया है! और इस बेहोश लड़की के साथ एटार लाइन पर कूलकर जाना खतरनाक होगा!
आसपास कोई टैक्सी या सवारी भी नहीं... आहा! एक कार है! वही कार जिस पर चढ़कर गोताखोर लुटेरे भाग रहे थे!
बस, इसके साइलेंसर में से आलू निकालना होगा, और यह फिर से चालू हालत में हो जाएगी!
कुछ ही सेकंडों के बाद ध्रुव बेहोश चंदा के साथ, ऑल इंडिया हॉस्पीटल कांफ्रेंस की तरफ बढ़ रहा था-
राजनगर के चप्पे-चप्पे की जानकारी रखना आज काम आ रहा है। वर्ना मैं ढूंढता और पूछता ही रह जाता कि वह कांफ्रेंस आखिर किस स्थान पर हो रही है! पर मुझे मालूम है वह कांफ्रेंस कहां पर हो रही है! और वह स्थान यहां से ज्यादा दूर भी नहीं है!
RJ 2C 1998
ध्रुव की कांफ्रेंस स्थल तक पहुंचने में तो दस मिनट से ज्यादा नहीं लगे। पर डॉक्टर तरूण को ढूंढने में दस मिनट और लग गए-
और फिर मैं इनको यहां पर ले आया, आपके पास! अब फिलहाल ये आपके जिम्मे पर हैं!
'आप' नहीं 'तुम' कहो ध्रुव! और तुमने इसको यहां लाकर इसकी ही नहीं, बल्कि मेरी भी जान निकलने से बचा ली है!
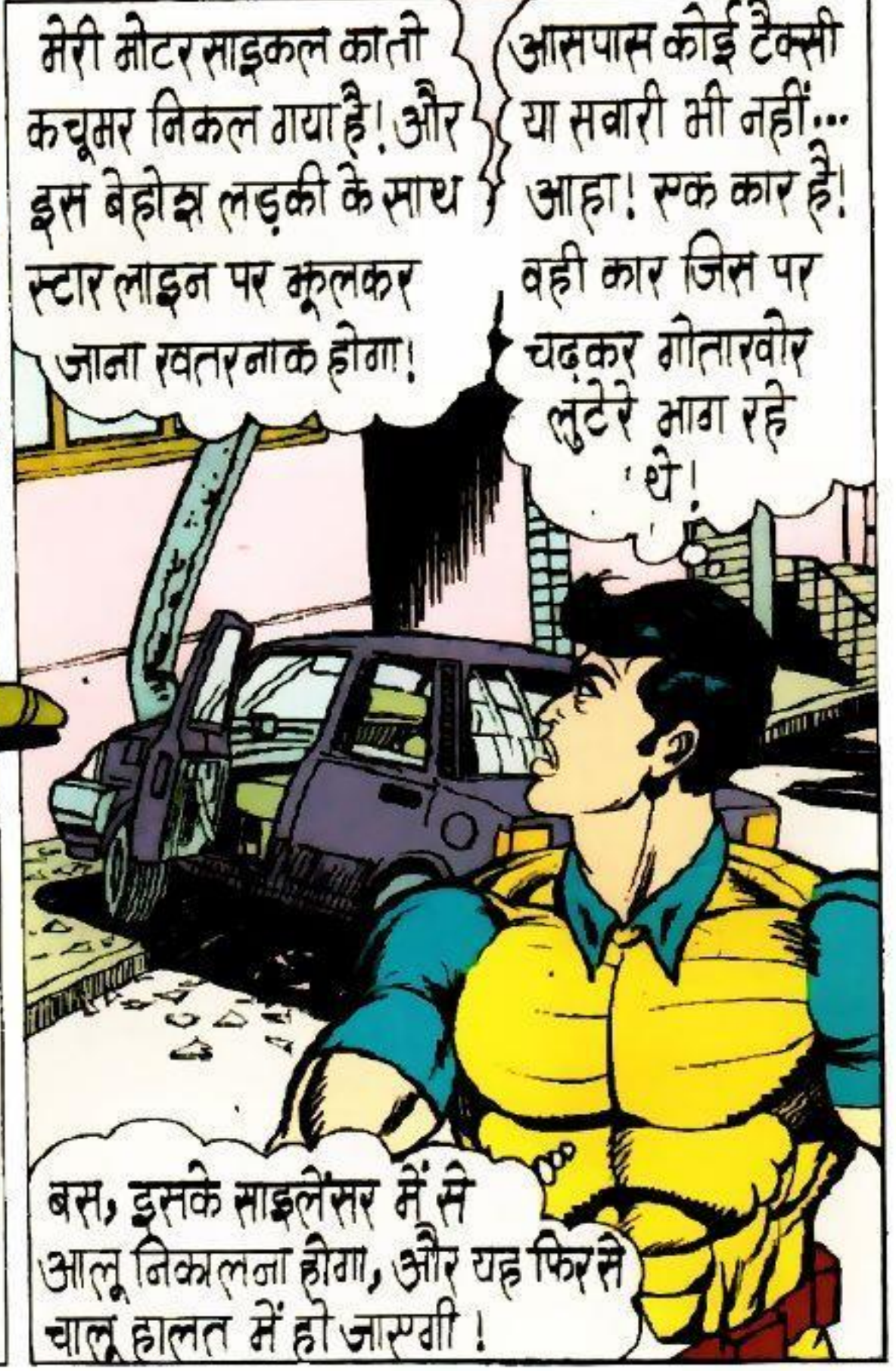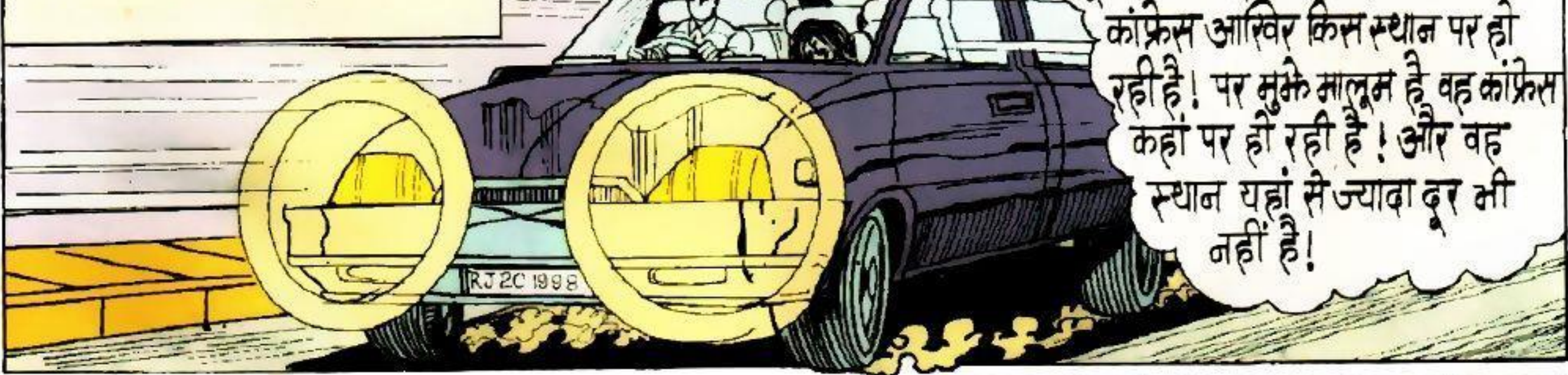
लगता है कमांडों के धंधे में बरकत नहीं रही। प्रोफेशन बदल लिया है तुमने! कटोरा कहां है तुम्हारा?

ठहर तो जरा! तुझे मैं भिखारी नजर आता हूं? अबकी राखी बांधकर नेग मांगेगी तो तुझे दो पैसे के सिक्के ही दूंगा!

अब अगर नेग में तुझे वह वाली ड्रेस लेनी है जो तू मुझे परसों एक शो रूम में दिखा रही थी, तो फटाफट जाकर मेरी एक एक्स्ट्रा ड्रेस निकाल कर ला!

ब्लैकमेलिंग! इमोशनल के साथ-साथ इकॉनामिक ब्लैकमेलिंग भी!

खैर, मैं तुम्हारी ड्रेस तो वैसे ही ला देती। अब अगर तुम मुझे बदले में नई ड्रेस देना ही चाहते हो तो... ओ॰के॰ तुम्हारी मर्जी!

लेकिन श्वेता तुमको ड्रेस की नहीं किसी और चीज की गिफ्ट देगी! और वह भी कल सवेरे! तुम्हारी कलाइयां भी कस देगी, और कमर भी!

श्वेता ध्रुव का वर्तमान रूप बदलने के लिए तैयारी कर रही थी-

और उधर परिस्थितियां भी दूसरा मोड़ ले रही थीं–

क्या? ऑपरेशन 'डीप सी' असफल हो गया?

हमारे आदमी माल के साथ पकड़े गए! पर कैसे?

हमने तो कम आदमी इसीलिए भेजे थे ताकि वे किसी की नजर में नहीं आएं और आराम से काम करके वापस आ जाएं!

कोस्ट गार्ड्स ऑफिस से हमारा एक आदमी जानकारी लेकर आया है!

गलती हमारे आदमियों की है। उन्होंने बोट को इधर उधर घुमाने के बजाय एक ही स्थान पर खड़ा कर दिया। कोस्ट गार्ड्स को शक हो गया, और हमारे आदमियों को माल सहित राजनगर की तरफ भागना पड़ा! वहीं पर उनको एक औरत और ध्रुव से टकराना पड़ा, और वे पकड़े गए!

ध्रुव! फिर वही ध्रुव! एक बार फिर हमारे काम में टांग अड़ा दी उसने। कहिए तो उसकी बोटी-बोटी करके नाली में बहा दूं!

दुबारा ऐसे लफ्ज जबान पर आए तो न तो मुंह में जबान रहेगी, और न ही आवाज निकालने के लिए गला!

तड़ाक

धड़ड़म्मम

ध्रुव को अगर किसी ने सुई भी चुभोने की कोशिश की, तो ध्रुव तो उसकी बाद में धुलाई करेगा, कमांडर नताशा उसकी सफाई पहले कर देगी!

यह सभी लोग अच्छी तरह से सुन लो! मैं यह बात दुबारा नहीं कहूंगी!

ध्रुव ने तैयार होने में ज्यादा वक्त नहीं लिया-

श्वेता, जल्दी से मेरा नाश्ता लगा! मुझे जाना है!

नाश्ता ? पर पहले तैयार तो हो लो! फिर मैं नाश्ता भी करा दूंगी मेरे भइया !
तैयार ? मैं तुझे तैयार नहीं दिख रहा ?
तैयार तो तुम हमेशा रहते हो भइया ! लेकिन इधर ज़माना भी काफी तेज हो गया है, और अपराध जगत भी !
तुमको भी अपने-आपको थोड़ी और गति देनी होगी। हाथों से घुमाकर 'स्टार-लाइन' और 'स्टार ब्लेड' फेंकने में जो एक सेकंड व्यर्थ करते हो, उसे भी बचाना होगा। क्योंकि जितने तेज अपराधी हो रहे हैं, जिन्दगी और मौत के बीच का 'वक्ती फासला' भी उतना ही कम होता जा रहा है !

मुझे पता है पगली कि तू मेरी सबसे ज्यादा चिंता करती है। मम्मी-पापा से भी ज्यादा। लेकिन भरोसा रख ! मैं तेरा भाई हूं, और तुझसे तेरा भाई छीनने का साहस यमराज में भी नहीं है !
यमराज को मैं ये साहस करने का मौका देना भी नहीं चाहती हूं भइया ! इसीलिए आज से तुम इस युद्ध को अपनी बहन के द्वारा बनाए गए सुरक्षा यंत्रों को पहनकर लड़ोगे।
तू किन सुरक्षा-यंत्रों की बात कर रही है ?

इन सुरक्षा यंत्रों की ! तुम इनको पहनो, और मैं तुमको इनकी खासियतें बताती हूं !
ध्रुव की आश्चर्य से भरी आंखें हल्की सी नम हो उठीं। श्वेता के प्यार ने उसके दिल के हर हिस्से को झिंझोड़कर रख दिया था–
ब्रेसलेट
बेल्ट
उसके हाथ अपने-आप ही उन यंत्रों की तरफ बढ़ गए–

ध्रुव ने बहन के प्रेम को अपने बदन पर सजाने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया-
और उसके सारी चीजें पहनते ही 'लिटिल-जीनियस' श्वेता की रनिंग कमेंट्री चालू हो गई-
ये तुम्हारे दाहिने हाथ का ब्रेसलेट है, भइया! इसमें स्टार ब्लेड की कार्टिलेज भरी हुई है।
ये तुम्हारे बाएँ हाथ का ब्रेसलेट है ध्रुव भइया!
इसका ट्रिगर तुम्हारी हथेली की तरफ निकला हुआ एक छोटा सा लीवर है।...
इसमें तुम एक बार में सौ 'माइक्रो-थिन' यानी पतली मोटाई के ब्लेड छोड़ सकते हो!
इससे तुम स्टार लाइन छोड़ सकते हो! तुम चाहो तो वह लाइन इससे अटकी भी रहेगी, और चाहो तो अलग भी हो जाएगी। इसके साथ-साथ तुम्हारी नई और पूर्ण रूप से धातु की बनी पाउचों से भरी बेल्ट में भी अन्य हर आवश्यक वस्तु के साथ स्पेयर 'स्टार लाइन' भी है। इसके 'स्टार बकल' में ट्रांसमीटर के साथ साथ एक स्पेशल 'लॉकिंग सिस्टम' भी लगा हुआ है, ताकि कोई भी न तो तुम्हारी बेल्ट को काट सके और न ही खींच कर अलग कर सके!
ये तुम्हारे बूटों का होल्डिंग स्ट्रैप है। कितना भी जोर डाल लो, बिना इसे ढीला किए बूट नहीं खुलेंगे!
और आखिर में तुम्हारे बूटों पर फिक्स किए जा सकने वाले ये व्हील कवर।
अब तुम किसी तेज गति वाले वाहन का भी पीछा कर सकते हो। इसमें लगे 'पुश बैक' स्केटस व्हील के जरिए।...

ध्रुव का यह दावा बहुत जल्दी ही कसौटी पर परखा जाने वाला था-

क्योंकि नताशा ने उस बहुमूल्य वस्तु को ढूंढ़ने का अभियान शुरू कर दिया था, जी दुनिया को उसकी मुट्ठी में समेट सकती थी-

इन दोनों 'कोस्ट गॉर्ड्स' से निपटने के बाद तुम दोनों सिर्फ आस-पास नजर रखने का काम करो। चीजें ढूंढ़ने का काम मैं खुद करूंगी!...
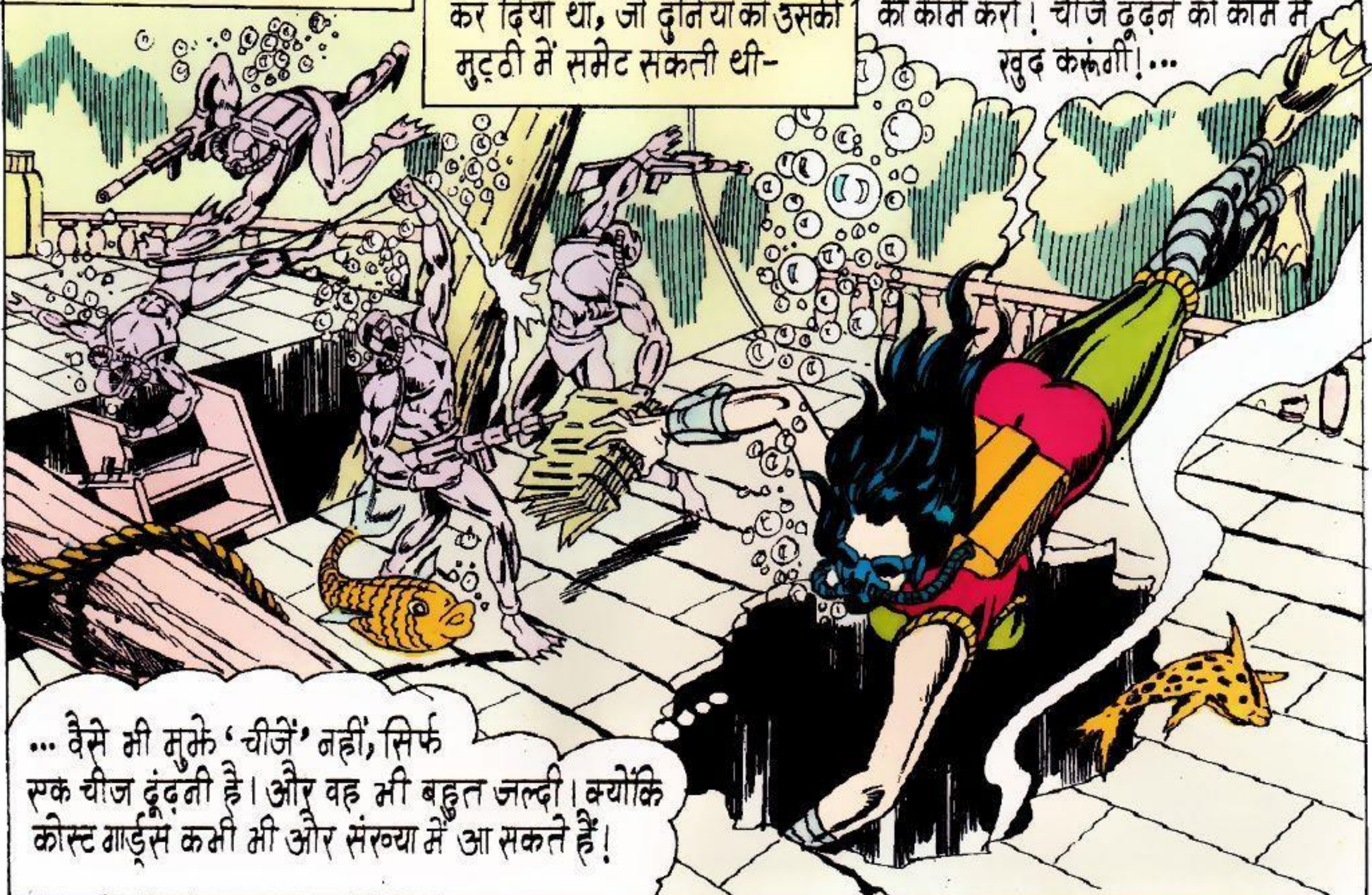
... वैसे भी मुझे 'चीजें' नहीं, सिर्फ एक चीज ढूंढ़नी है। और वह भी बहुत जल्दी। क्योंकि कोस्ट गार्ड्स कभी भी और संख्या में आ सकते हैं!

उस चीज की जल्दी से जल्दी ढूंढ़ सकने के लिए मैं यह चर्म-डायरी साथ लेती आई हूं। ... ताकि मुझे कोई भ्रम न हो!
मलबे के अन्दर घुसी नताशा का ध्यान पूरी तरह से उस बॉक्स को ढूंढ़ने में था-
'बाहर क्या हो सकता है' इस तरफ उसका ध्यान बिलकुल नहीं था-
हां! मेरा शक सही है। ये उसी गुट के गोताखोर हैं। पर ये हैं किस अपराधी संगठन के! डूबे जहाज के स्थान की जानकारी प्राप्त करना, और फिर उसमें से प्राचीन वस्तुएं निकालने का प्लान कोई मामूली संगठन नहीं बना सकता!
पुलिस अभी तक पकड़े गए लुटेरों की जुबान भी नहीं खुलवा पाई है। वरना उनसे ही उनके गैंग के बारे में पता चल जाता!
ओह! यहां तो दो बेहोश कोस्ट गार्ड्स हैं! यानी प्रोफेसर वालिया का शक सही था!
इस बार भी लुटेरे उसी गुट के होंगे, जिन्होंने पहले इस जहाज की वस्तुओं को चुराने की कोशिश की थी!
लेकिन ये चुपचाप खड़े हैं! जहाज के अन्दर जाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। यानी जहाज के अन्दर कोई और गया हुआ है, और ये पहरेदारी कर रहे हैं!
बेहोश कोस्ट गार्डों को ऑक्सीजन सिलेंडर कुछ देर तक बचाए रखेंगे। तब तक मैं इनकी खबर ले लूं!
इन मछलियों के झुंड में घुसकर मैं एक पहरेदार तक तो पहुंच सकता हूं!
लहरों के झुटपुटे में, मछलियों की आड़ में तैर रहे ध्रुव को देख पाना मुश्किल था-

पहला पहरेदार जब तक कुछ समझ पाता, तब तक ध्रुव उसका ऑक्सीजन पाइप अलग कर चुका था-
अब ये सीधा समुद्र की सतह पर ही जाकर रुकेगा! जहां इसकी पोशाक इसे समुद्र की सतह पर तैरता रखकर डूबने से बचाए रखेगी!
लेकिन इस बार ध्रुव के दिमाग से एक बात फिसल गई थी-
हेल्मेट में लगी माइक्रोफोन के जरिए उस गोताखोर की चीख दूसरे गोताखोर तक पहुंच गई थी-
और उसने पलटकर अपनी तरफ आते ध्रुव को काफी पहले ही देख लिया-
हारपून गन ध्रुव की तरफ तन गई-
आऽऽऽह!
लेकिन श्वेता के उपहार, ध्रुव के बड़े काम आए-
'स्टार-ब्लेड' के एक सटीक वार से हारपून गन गोताखोर के हाथों से छूट गई-
श्वेता के ब्रेसलेट बड़े काम आ रहे हैं। वरना पानी की लहरों में हाथ घुमाकर 'स्टार-ब्लेड' फेंकने में मैं ब्लेड को वह गति नहीं दे पाता, जो इस ब्रेसलेट ने ब्लेड को दी है!
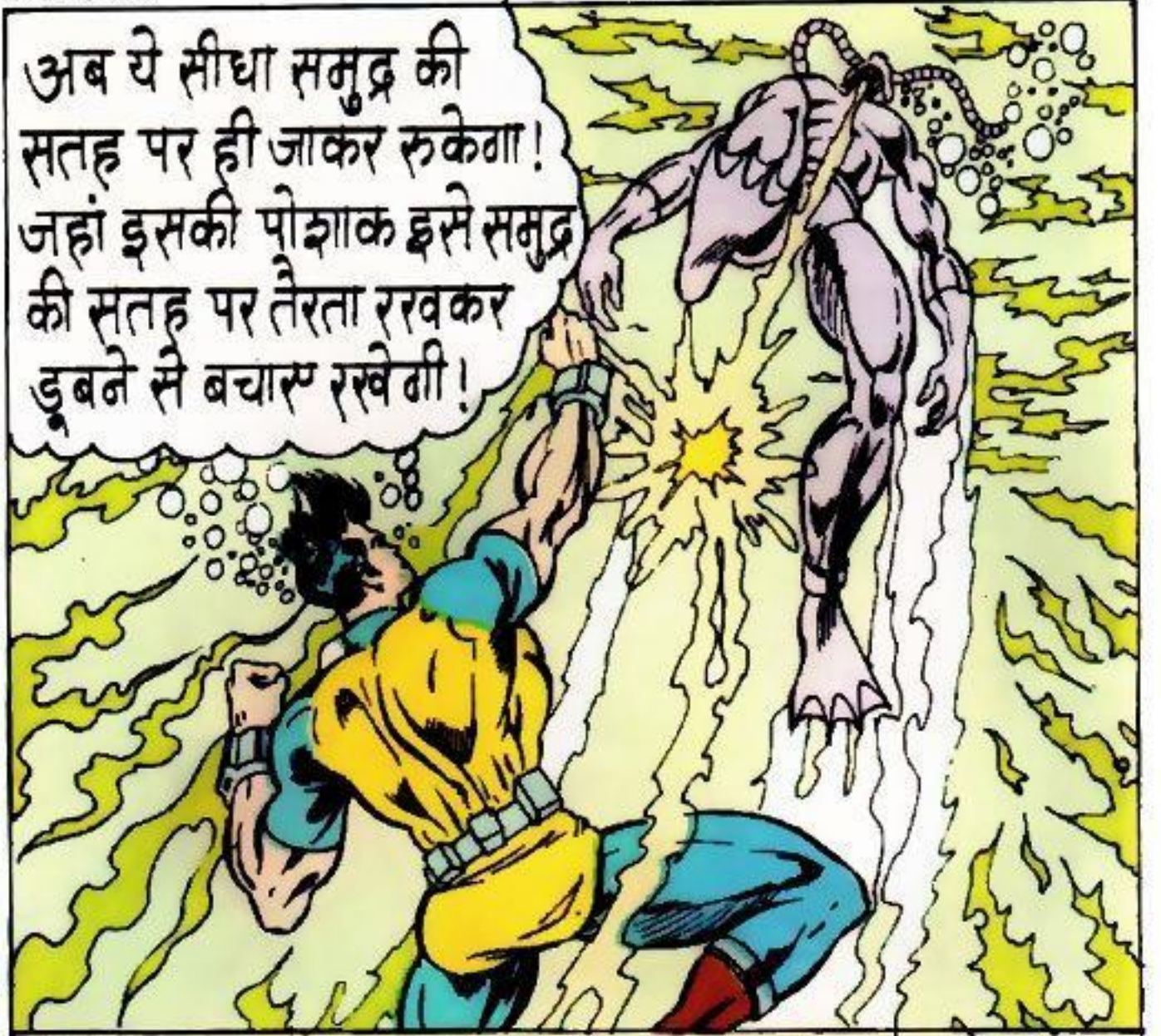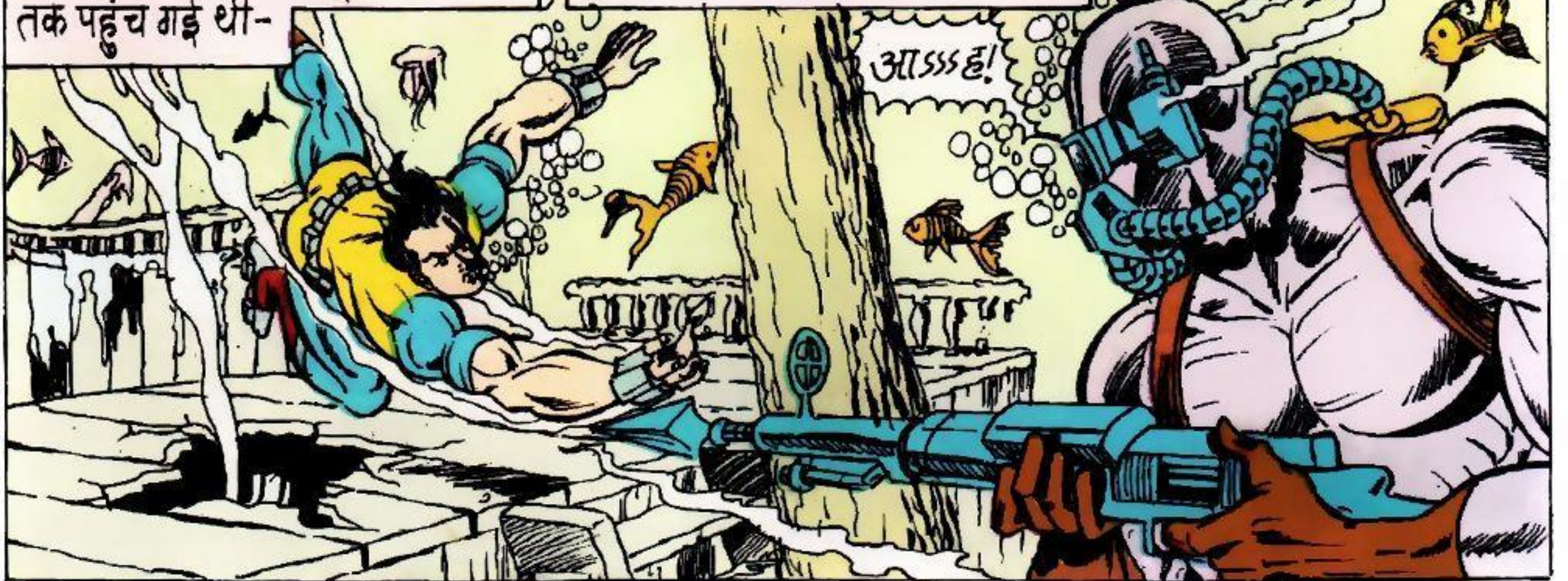
अब सबसे पहले 'स्टार ट्रांसमीटर' को 'स्क्रैमबलर फ्रीक्वेंसी' पर कर देता हूं, ताकि अगर यह किसी और को खबर भेजना चाहे तो इसकी रेडियो तरंगों में इतना व्यवधान उत्पन्न हो जाए कि उसे कोई साफ पकड़ ही न पाए।...
...और फिर अपने बाएं हाथ के ब्रेसलेट का इस्तेमाल करके इसको स्टार लाइन से ऐसा जकड़ दूंगा कि यह डूबे जहाज के मलबे से लटका रह जाए।...
...और फिर देखूं कि इस मलबे के अन्दर कितने लोग हैं, और वे क्या चाहते हैं?
मलबे के अन्दर लोग नहीं, सिर्फ एक शख्स था... या कहिए थी! और वह जो चाहती थी, अब वह उसकी नजरों के सामने था–
यह 'चर्म डायरी' जरूर इसी जहाज के मलबे में से मुक्त होकर समुद्र की सतह पर तैर रही होगी, जब यह मुझे मिली थी। इसके महत्व को समझ कर मैंने स्पेनिश भाषा सीखी, और उसके बाद मुझे इसकी असली कीमत का पता चला!
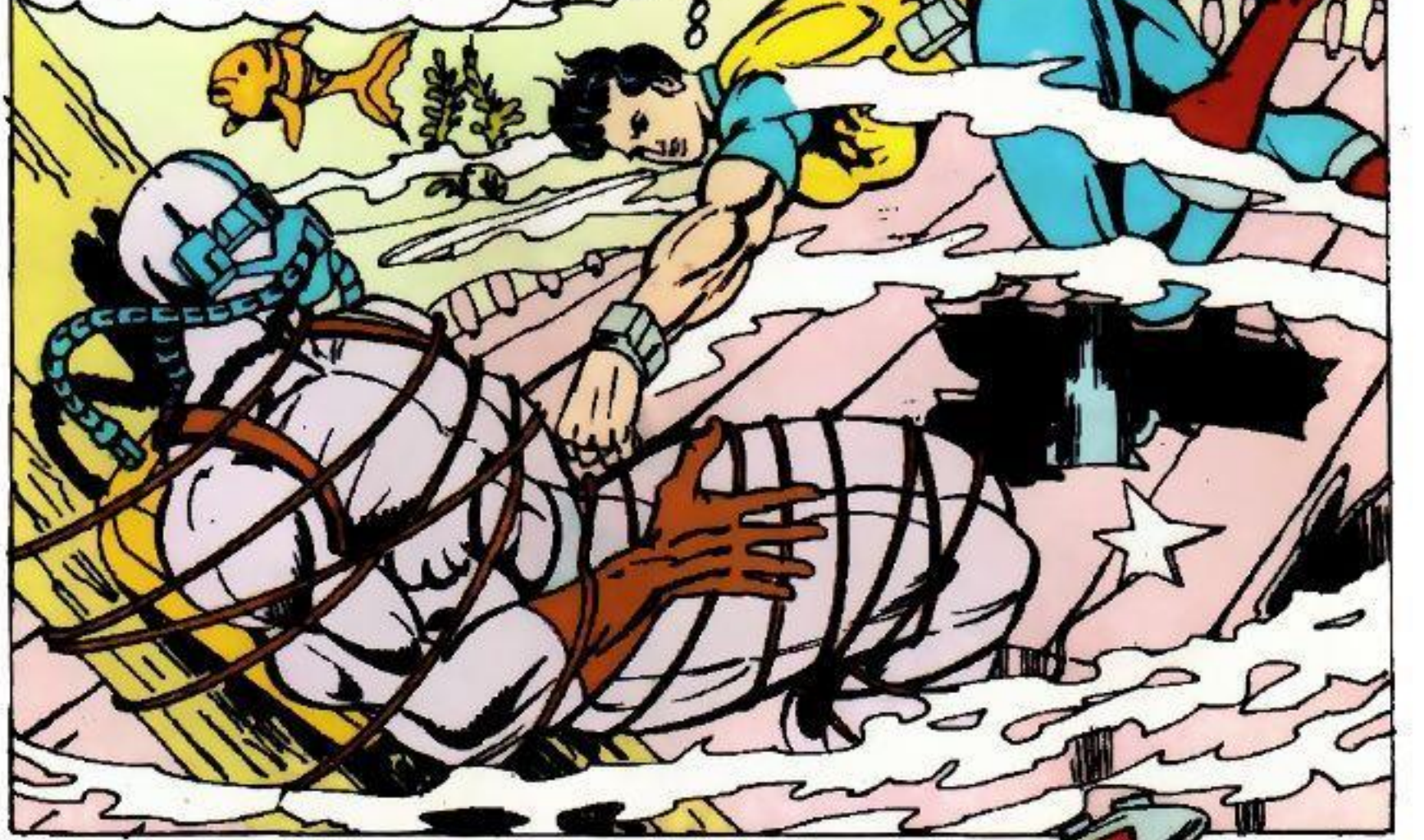
ओह! यह लॉकेट तो इस डायरी में बने रेखाचित्र से मेल खा रहा है। इसमें इस 'चर्म डायरी' के लेखक जादूगर विकारियों ने अपने गले में पड़े लॉकेट को इसी प्रकार का बताया है। यानी... यह विकारियों का ही कंकाल है!...

... और अगर ये विकारियों का कंकाल है तो वह बॉक्स जरूर इसी पेटी में बन्द होना चाहिए।

पेटी का गल चुका ताला, एक हल्की सी ठोकर से ही टूट गया–
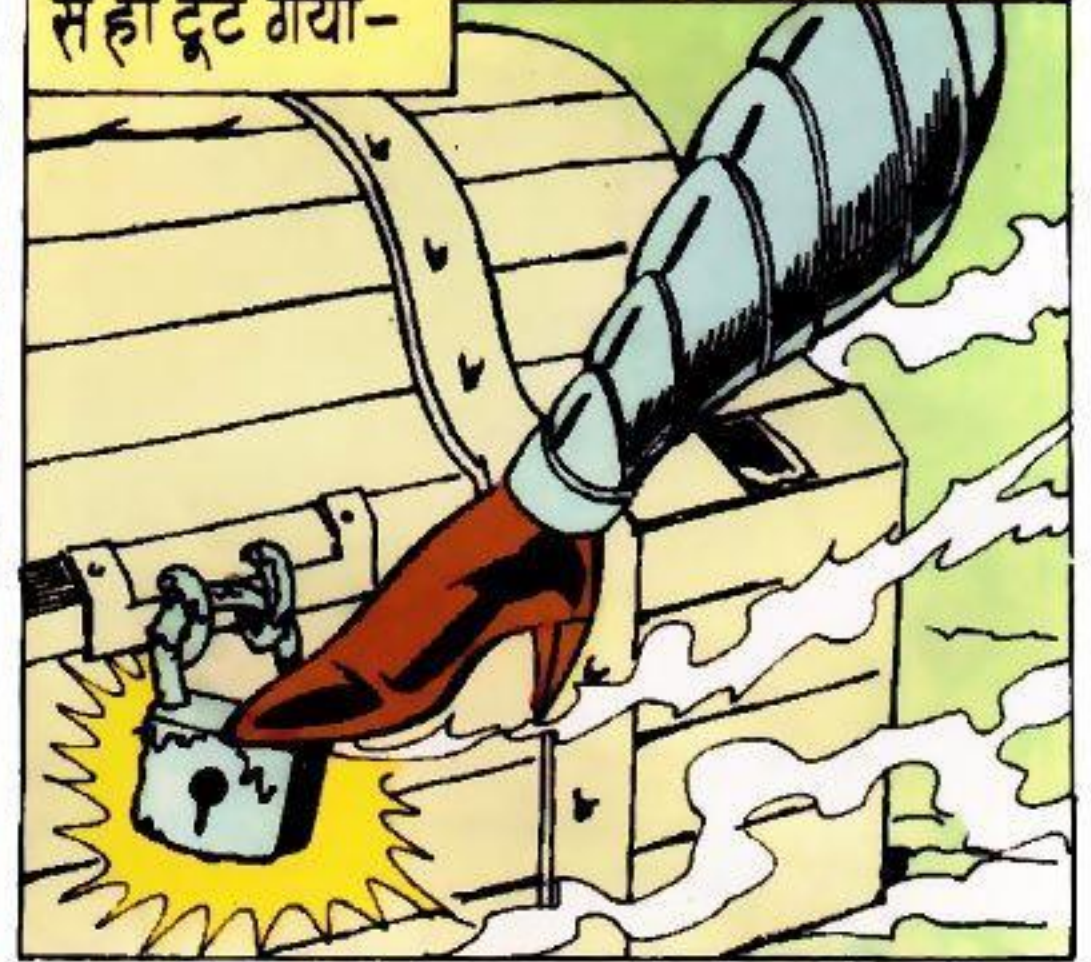
और कुछ ही पलों बाद, नताशा के हाथ में वह अजीबो-गरीब बॉक्स था, जिसमें वह शक्ति कैद थी–

बॉक्स तो यही है! इसमें से बहुत तेज चमक फूट रही है! क्या यही वह शक्ति है, जिसका जिक्र विकारियों ने अपनी डायरी में किया है। लेकिन इसका उपयोग किया कैसे जाएगा? खैर यह तो बाद में सोच लूंगी। फिलहाल तो सामान मिल गया है। अब यहां से जल्दी से जल्दी निकल लेना चाहिए!...

हां! और अगर मैं तुम्हारी फ्रीक्वेंसी पर सेट किए गए अपने ट्रांसमीटर पर तुम्हारी आवाज न सुनता तो शायद इस रूप में तुमको पहचान भी न पाता!... अब अगर मैं पुरातन वस्तुएं चुराने के आरोप में तुमको गिरफ्तार करूं, तो प्रतिरोध मत करना, क्योंकि यह तो तुम भी जानती होंगी कि इन वस्तुओं पर सिर्फ सरकारी पुरातत्व विभाग का हक होता है!

होता है। लेकिन जिन वस्तुओं पर पुरातत्व विभाग का हक है वह उनके पास पहुंच चुकी हैं, और उनको ले जाने वाले मेरे आदमी भी पकड़े जा चुके हैं। दरअसल मैंने उनको यह देखने को भेजा था कि यहां पर जहाज डूबने की बात सच है या नहीं! मुझे तो यहां से सिर्फ इस वस्तु को ले जाना था।...
... और इस वस्तु पर किसी सरकार का हक हो ही नहीं सकता! क्योंकि यह शक्ति पृथ्वी की है ही नहीं!
बड़े विश्वास के साथ कह रही हो! यह तुमको कैसे पता चला?
एक प्राचीन चर्म डायरी से! जो इसी जहाज के मलबे से मुक्त होकर समुद्र की सतह पर तैरने लगी थी!

लो! अगर स्पेनिश जानते हो तो तुम खुद पढ़ लो! यह एक पुर्तगाली तांत्रिक... या चाहो तो जादूगर कह लो... विकारियों द्वारा लिखी गई डायरी है। एक तांत्रिक अनुष्ठान के दौरान जब ग्रहों की शक्तियों को सोखने के लिए उसने अपना तंत्रजाल फैलाया तो यह परग्रही शक्ति उस जाल में आ फंसी।...
... इस शक्ति को कैद करने के लिए विकारियों ने एक स्पेशल बॉक्स का निर्माण किया! वह यही बॉक्स है। पर इस डायरी के आगे के पन्ने नहीं हैं। इसमें इस बात का जिक्र नहीं है कि विकारियों ने इस शक्ति को कैसे कैद किया, और इससे वह क्या करना चाहता था!...

यह भी नहीं पता कि आखिर यह इस शक्ति को इस जहाज में कहां लेकर जाना चाहता था! इसीलिए मुझे इस 'कोन रूपी बॉक्स' को अपने अड्डे ले जाना पड़ेगा, ताकि इस पर सही शोध की जा सके!
मैं टूटी-फूटी पुर्तगाली जानता हूं। और जोड़-जोड़कर पढ़ भी लेता हूं नताशा! लेकिन जैसे पृथ्वी पर गिरी किसी उल्का पर किसी एक व्यक्ति का हक नहीं हो सकता वैसे ही इस 'कोन' पर भी तुम्हारा इकलौता हक नहीं हो सकता! इसे मुझे सौंप दो!
मैं जानती थी कि राजनगर तट के पास काम करने से मुझे तुमसे किसी न किसी जगह पर टकराना जरूर पड़ेगा। पर वह जगह वहीं होगी जहां से मैंने इस ऑपरेशन की शुरुआत की, इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी।...
मैं तुमको नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता नताशा! इसीलिए मुझे यह 'कोन' चुपचाप सौंप दो!
कभी नहीं! इसके बारे में सबसे पहले मुझे पता चला! इसीलिए इस पर मेरा हक है!
इस छीना-झपटी में 'कोन' का न जाने कौन सा लीवर दब गया-
कि उसके शीर्ष से ऊर्जा की एक लहर, अन्दर से आजाद होकर नताशा के शरीर में समाने लगी-
चारों तरफ चकाचौंध कर देने वाली रोशनी फैलने लगी-

और जब रोशनी की वह चमक खत्म हुई-
तो ध्रुव की नजरों के सामने नताशा नहीं, कोई और खड़ा हुआ था-
ओह! तो यही है वह शक्ति, जो अंतरिक्ष से फंसाकर पृथ्वी पर लाई गई, और फिर इस 'कोन' में बंद कर ली गई। लेकिन नताशा आस-पास कहीं नजर नहीं आ रही! इसका तो एक ही अर्थ निकलता है, और वह यह कि ऊर्जा के रूप में 'कोन' में बन्द इस प्राणी ने नताशा के शरीर पर ही कब्जा कर लिया है। और अपनी शक्ति के जरिए नताशा के रूप के बजाय अपना रूप प्रक्षेपित कर रहा है!...
... सवाल यह है कि 'कोन' में सैकड़ों सालों तक बन्द रहने के बाद यह शक्ति आजाद होकर अब आखिर करेगी क्या?
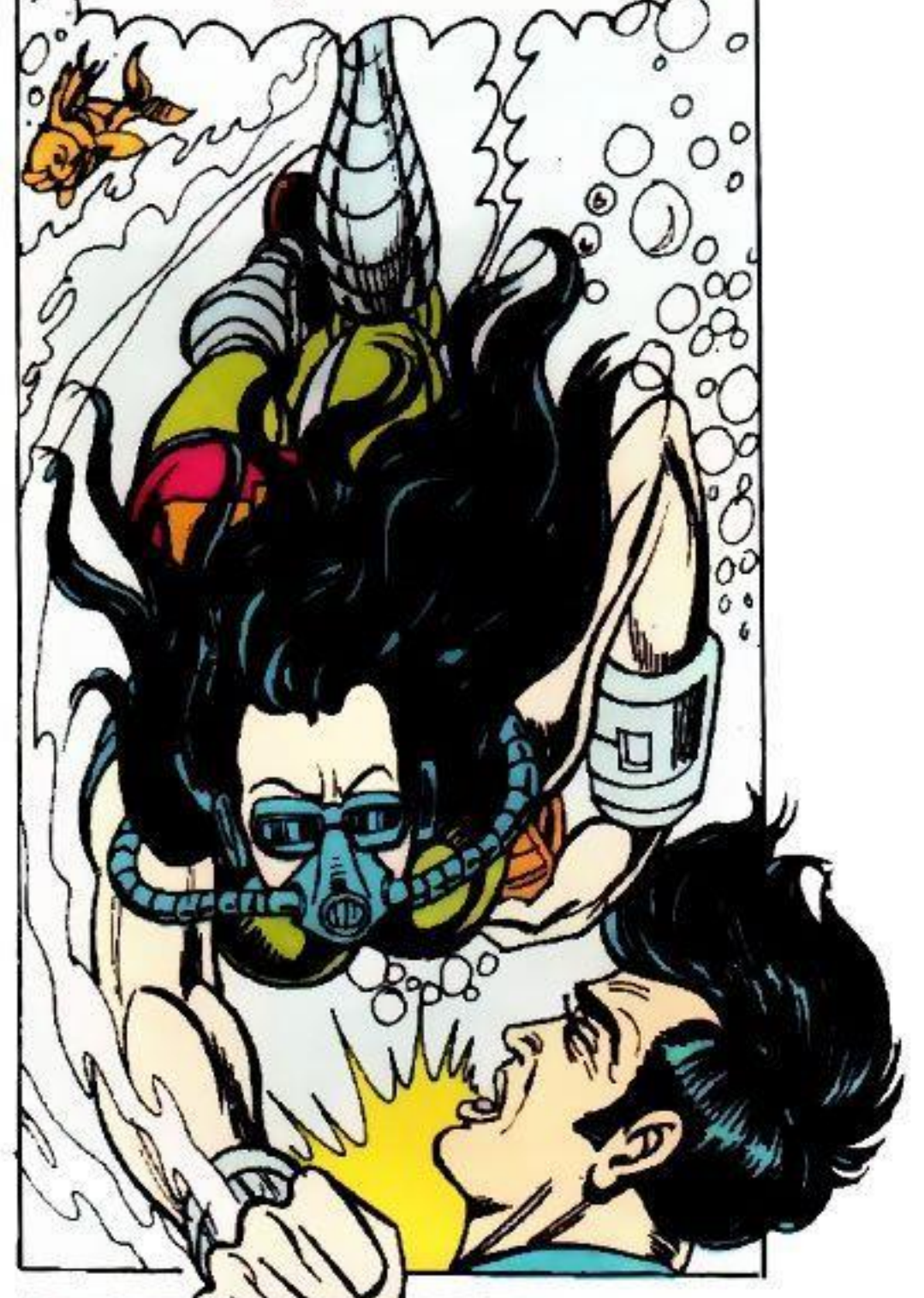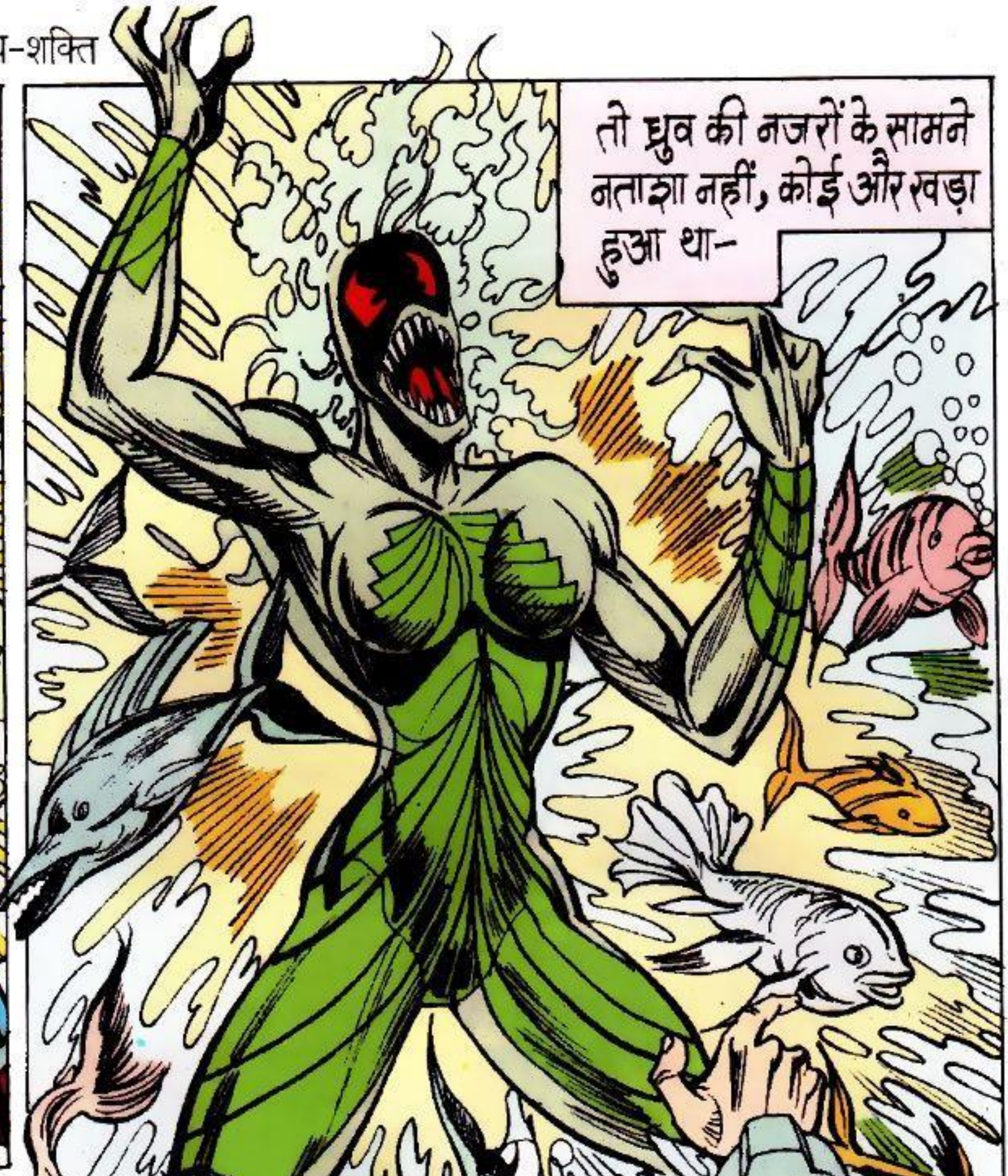
अगले ही पल ध्रुव को पता चल गया कि वह परग्रही क्या करना चाहता था-
ओह! यह नाच-नाचकर ऊर्जा की तेज लहरें छोड़ रहा है। शायद आज़ाद होने की खुशी मना रहा है! लेकिन इन ऊर्जा की तरंगों से पानी का तापमान बढ़ रहा है। मछलियां तड़पकर भाग रही हैं। मुझे भी गर्मी महसूस हो रही है!
अगर यह तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा तो बाहर बेहोशी की अवस्था में तैर रहे कोस्ट गार्डों और गोताखोर लुटेरों की भी जान पर बन आएगी! नताशा के शरीर का क्या होगा, यह तो अनुमान लगाना भी मुश्किल है! फिलहाल मुझे इस प्राणी को समुद्र से बाहर ले जाना पड़ेगा! और इसका आसान सा तरीका है, इस पर हमला करना! ताकि यह क्रोधित होकर मेरे पीछे आए।...
ध्रुव का वार लगते ही लहरों में लहराते कुछ क्रोधित शब्द उसके कान में आ-कर टकराए-
और फिर जैसा ध्रुव ने सोचा था एकदम वैसा ही हुआ-
मुझे ऐसा लगा, जैसे इसने 'प्रचंडा' चिल्लाया हो! वैसे यह नाम इस पर फिट बैठता है! अब यहां से फटाफट भागा जाए, वरना यह प्राणी इस नाम को सार्थक कर देगा!
ध्रुव तेजी से सतह की तरफ तैरा-

लेकिन पानी से बाहर आते ही उसकी शक्तियां एकदम से सक्रिय हो उठीं–
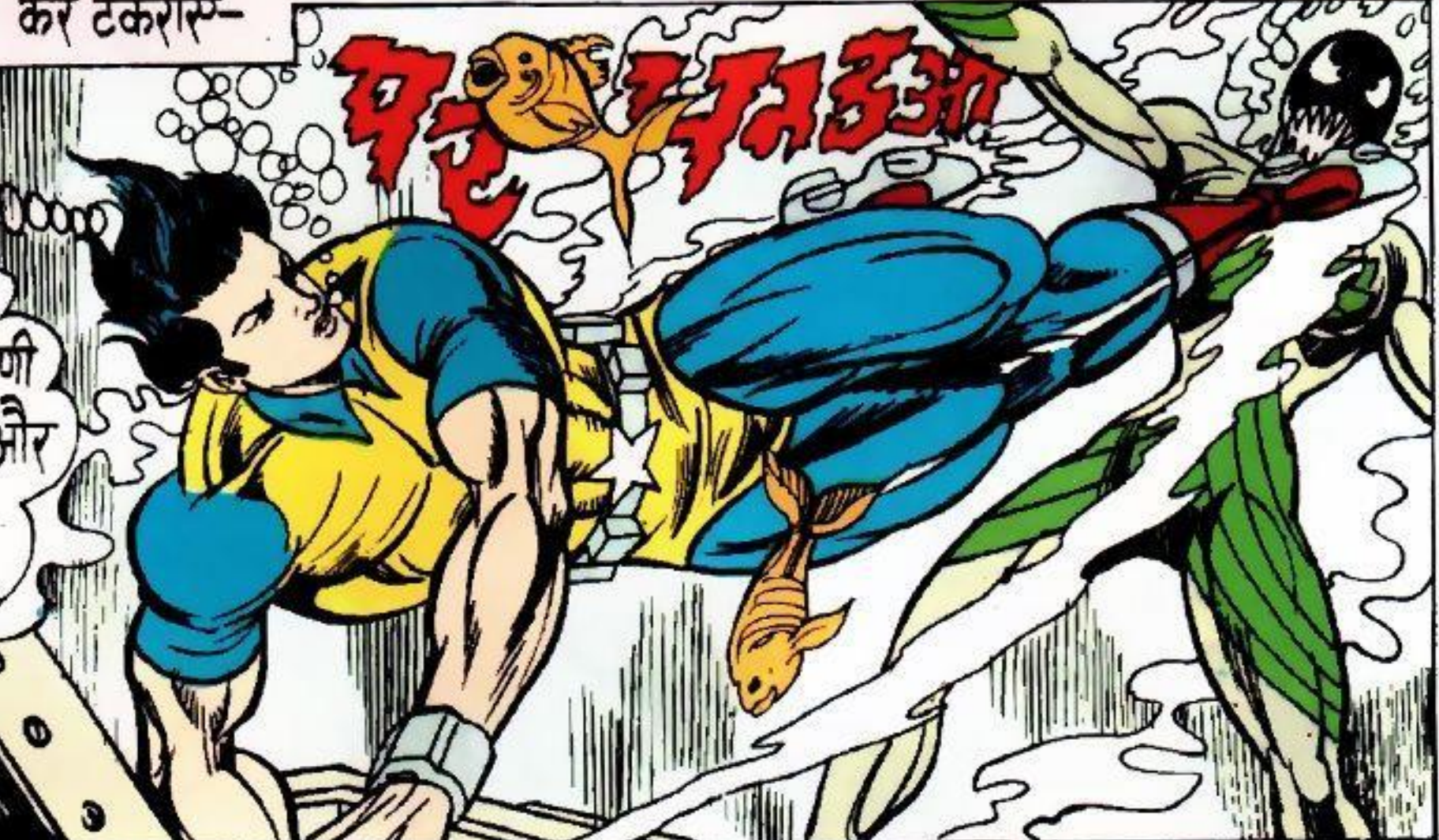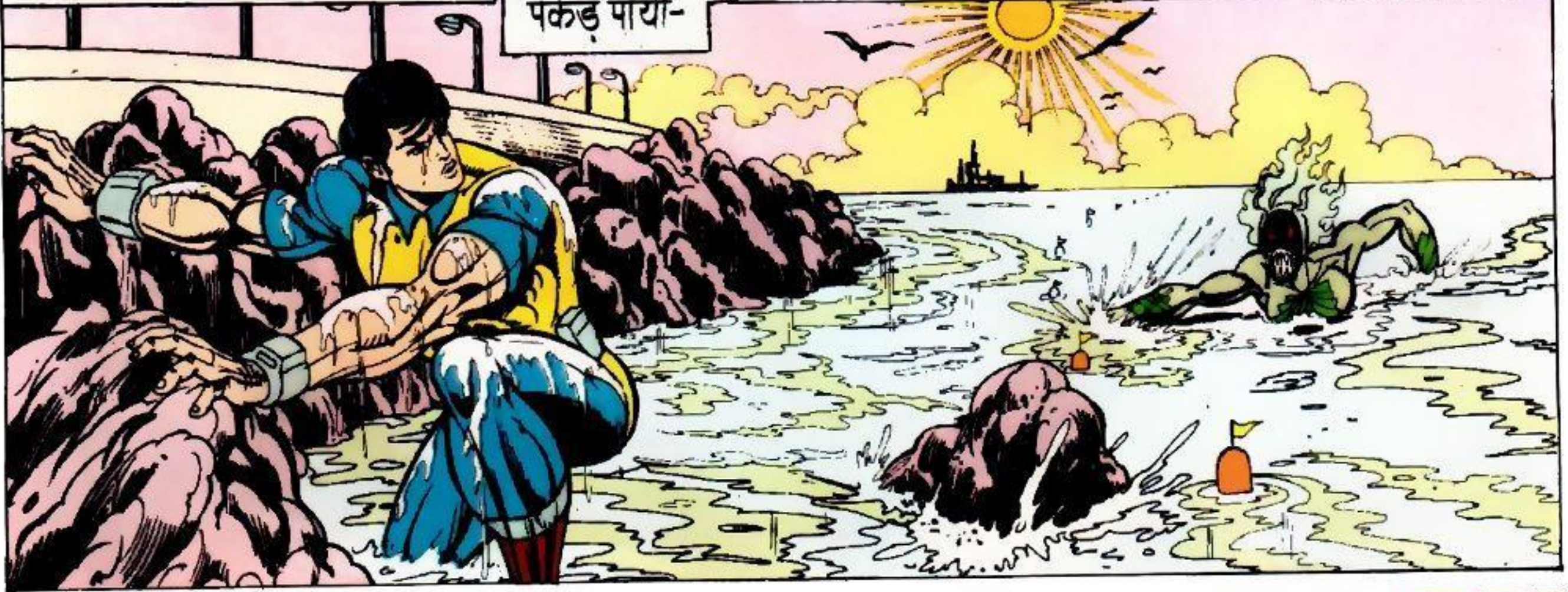
ओह! पानी से बाहर आते ही इसकी गति कई गुना तेज हो गई है!... यानी पानी के अन्दर इसकी शक्तियां क्षीण रहती हैं!

जादूगर विकारियों यह बात समझ गया होगा, इसीलिए वह उस कौन को कहीं समुद्र के बीच में डुबो-कर रखना चाहता होगा। यही शायद उसके जहाज में जाने का कारण रहा हो! SSSSS

आऽऽऽह!

धड़ाक
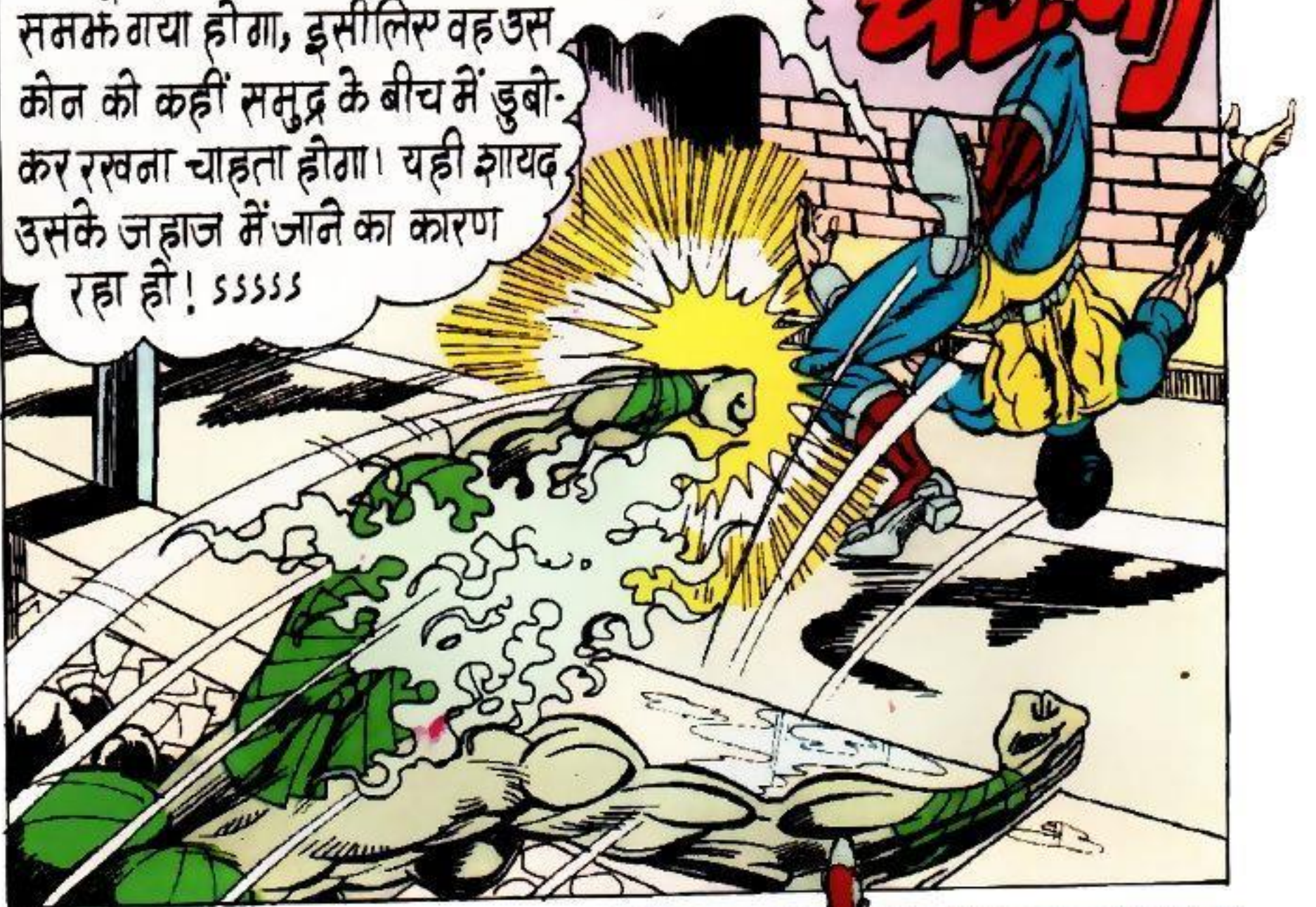
मैं समझ रहा था कि मैं इसको पानी से बाहर खींचकर अक्लमन्दी कर रहा हूं। पर यह तो बेवकूफी का काम साबित हो गया, क्योंकि पानी से बाहर आते ही इसकी शक्तियां सक्रिय हो उठी हैं। अब इसको पानी के अन्दर ले जाऊं तो कैसे?

धम्म्म्म्म्म्म

और वैसे भी पानी के अन्दर जाकर ही मैं कौन सा तीर मार लूंगा !
यहां पर इसे चोट पहुंचाने के ज्यादा साधन हैं ! इस टक्कर से इसे कुछ चोट तो पहुंचेगी ही !
भड़ाक
ध्रुव ने टक्कर तो काफी जोर से लगाई थी–
लेकिन परिणाम आशा के अनुरूप नहीं निकला–
आश्चर्यजनक ! इसके हाथ से ऊर्जा की लहर निकलकर मुझे अपने लपेटे में ले रही है !
अगले ही पल – ध्रुव को उस ऊर्जा – लपेटे का मतलब समझ में आ गया–
एक झटके से लपेटे खुले और लट्टू की तरह नाचता ध्रुव का बदन दीवार से जा टकराया–
धड़.ड़.ड़.ड़.ड़.ड़.
और इसके साथ ही ध्रुव को 'प्रचंडा' से निपटने का तरीका समझ में आ गया–
ये ऊर्जा प्राणी है। इसी रूप में यह कीन में बन्द था, और इसी के सहारे यह वार कर रहा है ! अगर इसको और ऊर्जा दी जाए तो शायद यह उस अधिकता को सह न पाए।...
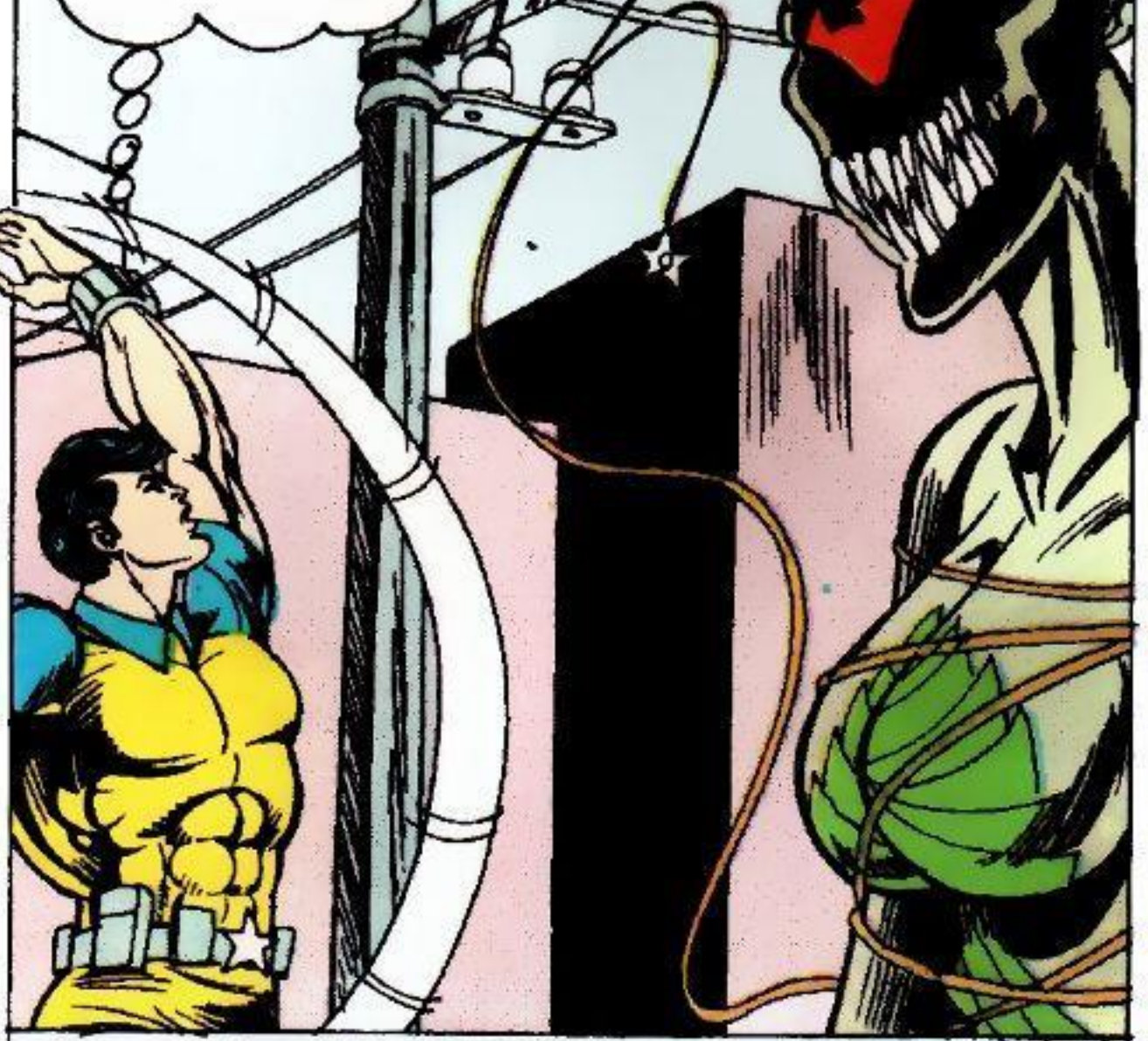
ध्रुव ने परिणाम का अनुमान एकदम गलत लगाया था—

क्योंकि प्रचंडा को नुकसान पहुंचाने के बजाय, प्रचंडा ने ही बिजली के तारों को नुकसान पहुंचा दिया—

पलभर में ही तार जलकर और गलकर टूट गए, और बिजली का प्रवाह आगे बढ़ना रुक गया—

अब ध्रुव के जलने की बारी थी—

ओह! पूरा शरीर शक्तिहीन हो गया है! अगर धातु की बेल्ट इस एनर्जी ब्लास्ट का ज्यादातर ताप न सोख लेती तो मेरे पेट का हिस्सा भी झुलस गया होता!

यह वार खाने के बाद तो मेरा दिमाग भी सोच नहीं पा रहा है कि अगला वार करूं भी तो क्या?

तो मुझे तुम्हारे माथे पर एक चीरा दिखा! पहले तो मुझे लगा कि तुम्हारे माथे पर कोई तीसरी आंख है! पर यह तो असंभव है। मैंने उसे 'फॉरसेप' से खोलने की कोशिश भी की! पर वह चीरा खुला ही नहीं! उस पर पलकों जैसे बाल भी हैं! वह आखिर है क्या?

मुझे यही देखे जाने का डर था! इसीलिए मैंने बेहोश होते वक्त अपनी टीम के डॉक्टरों के बजाय, तरुण का नाम लिया था!

क्योंकि एक तो तरुण को समझाना ज्यादा आसान है! और फिर इससे मेरी मुलाकात सिर्फ तभी तक है, जब तक मैं राजनगर में हूं!

चंदा यह नहीं जानती थी कि यह ख्याल उसके दिमाग का है, दिल का नहीं। दिल उसे एक बार फिर खींचकर तरुण के पास लाने वाला था-

चंदा एक अंतरंग मित्र की तरह तरुण को दिनेश पाठक से अपनी शादी, और फिर दिनेश द्वारा किए गए जुल्मों की दास्तान सुनाती चली गई-

उन्होंने मुझे एक खाई में फेंक दिया! पर देवी के आशीर्वाद से मैं बच गई! मेरे माथे का यह निशान, उसी दुर्घटना की देन है!

तुम बताओ! तुमने डॉक्टर बनने के बाद क्या किया?

मैंने ? तुम्हारी बहुत तलाश की मैंने! फिर कहीं से पता चला कि तुम्हारी शादी हो गई है! दिल तो टूट गया था, पर मैंने भी शादी करना जरूरी समझा!... ताकि मेरे कुंवारे रहने से यह मतलब न लगाया जाए कि मैं अब भी तुम्हारी उम्मीद लगाए हुए हूं!
शादी तो मैंने कर ली, पर शायद मेरी किस्मत में सुख लिखा ही नहीं था! राशी, यानी मेरी पत्नी की बड़ी-बड़ी इच्छाएं मैं पूरी नहीं कर पाया, और पिछले दो सालों से मैं यहां रहता हूं, और राशी अपनी मां के घर! मेरे तीन साल के बेटे के साथ!
ओह! आई...आई एम सॉरी तरुण!
हां, चंदा! तुम मेरे लिए 'सॉरी' कहो, और मैं तुम्हारे लिए! हम अब बस यही कर सकते हैं! वैसे मुझे लग रहा है कि तुम मुझे पूरी बात नहीं बता रही हो!
तुम्हारे माथे पर एक यह अजीब सा चीरा! चोटों का जल्दी भर जाना! मुझे लग रहा है कि... खैर छोड़ो! तुमको इस 'चीरे' के कारण हमेशा पट्टी बांधे रहना पड़ता है न? मैं प्लास्टिक सर्जरी करके इसको ढक दूंगा! अगर तुम को एतराज न हो तो!
म... मुझे क्या एतराज हो सकता है!
इससे तो मेरी सारी समस्या ही हल हो जाएगी!
चंदा की कम से कम एक समस्या तो हल हो रही थी-
लेकिन ध्रुव के लिए समस्या अभी वहीं की वहीं थी-
मैं उल्टा सोच रहा था! इसे रोकने का रास्ता इसे ऊर्जा देना नहीं बल्कि इसकी ऊर्जा खींचना है! और इस बार भी यह काम बिजली के तार ही करेंगे!...
...लेकिन वे तार नहीं जिनमें अब तक बिजली दौड़ रही है! बल्कि वे तार, जिनमें संपर्क टूट जाने के कारण विद्युत प्रवाह ठप्प हो गया है!
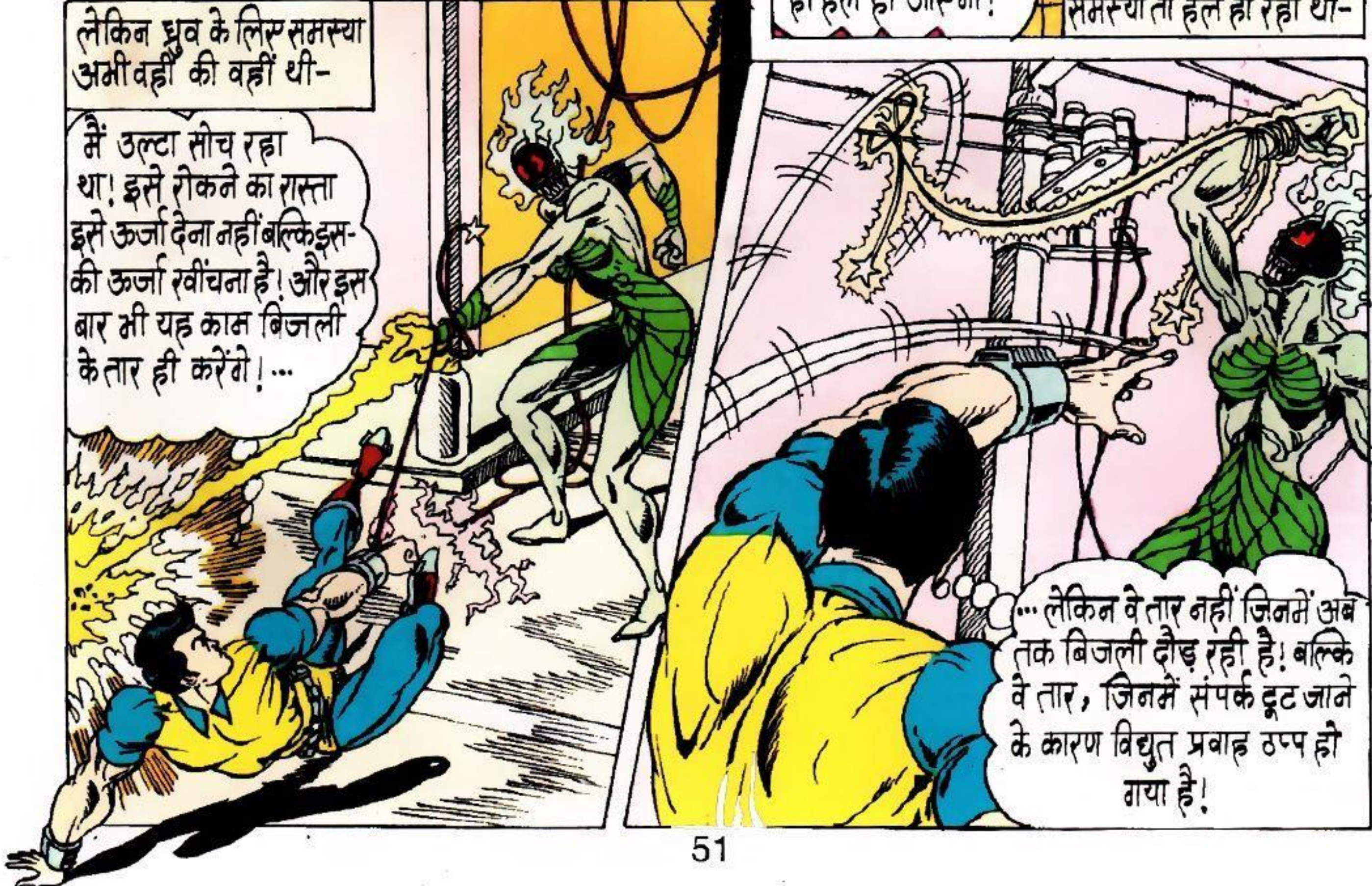
अब ऊर्जा तारों से प्रचंडा की तरफ नहीं, बल्कि प्रचंडा से तारों की तरफ बहेगी! इस वार का प्रचंडा पर कुछ न कुछ असर तो जरूर होना चाहिए!
ध्रुव के इस वार का 'कुछ' नहीं 'बहुत कुछ' असर हो रहा था-
ऊर्जा का प्रवाह इतनी तेजी से शुरू हो गया जैसे बांध टूटने से पानी बहना शुरू हो जाता है-
इस वार से प्रचंडा इतना हड़बड़ा गया कि उसने अपना रूप वापस समेट लिया-
और सड़क पर गिरी रह गई, निढाल और घबराई नताशा-
आह! ध्रुव! मुझे इस मुसीबत से बचा लो! बचा लो मुझे! बचा लो!...
बचा लो... बचा लो...
ओह! कोई नारी मुसीबत में है! मुझ तक पुकार आ रही है! अब शक्ति चंदा के शरीर को ढक लेगी, और यह बदलाव मैं तरुण के सामने कतई होने नहीं दे सकती!
तुमको क्या हो रहा है, चंदा? तुम्हारा शरीर कांप क्यों रहा है?
मुझे... मुझे बाथरूम जाना है तरुण! और मुझे डिस्टर्ब मत करना! किसी भी कीमत पर नहीं!
हतप्रभ सा तरुण, चंदा को देखता रह गया! उसके भ्रम और शक दोनों ही बढ़ गए थे-
...?
उसको तो सिर्फ वहां पहुंचना था, जहां पर एक नारी मदद के लिए पुकार रही थी-
लेकिन शक्ति को न तो किसी के शक की परवाह थी, और न ही भ्रम की-
मैंने प्रचंडा को नताशा के शरीर से बाहर निकलते नहीं देखा! यानी वह नताशा के शरीर में ही है! इसको बाहर निकालने का कोई न कोई तरीका तो होगा ही! और वह तरीका मुझे जल्दी से जल्दी सोचना होगा!
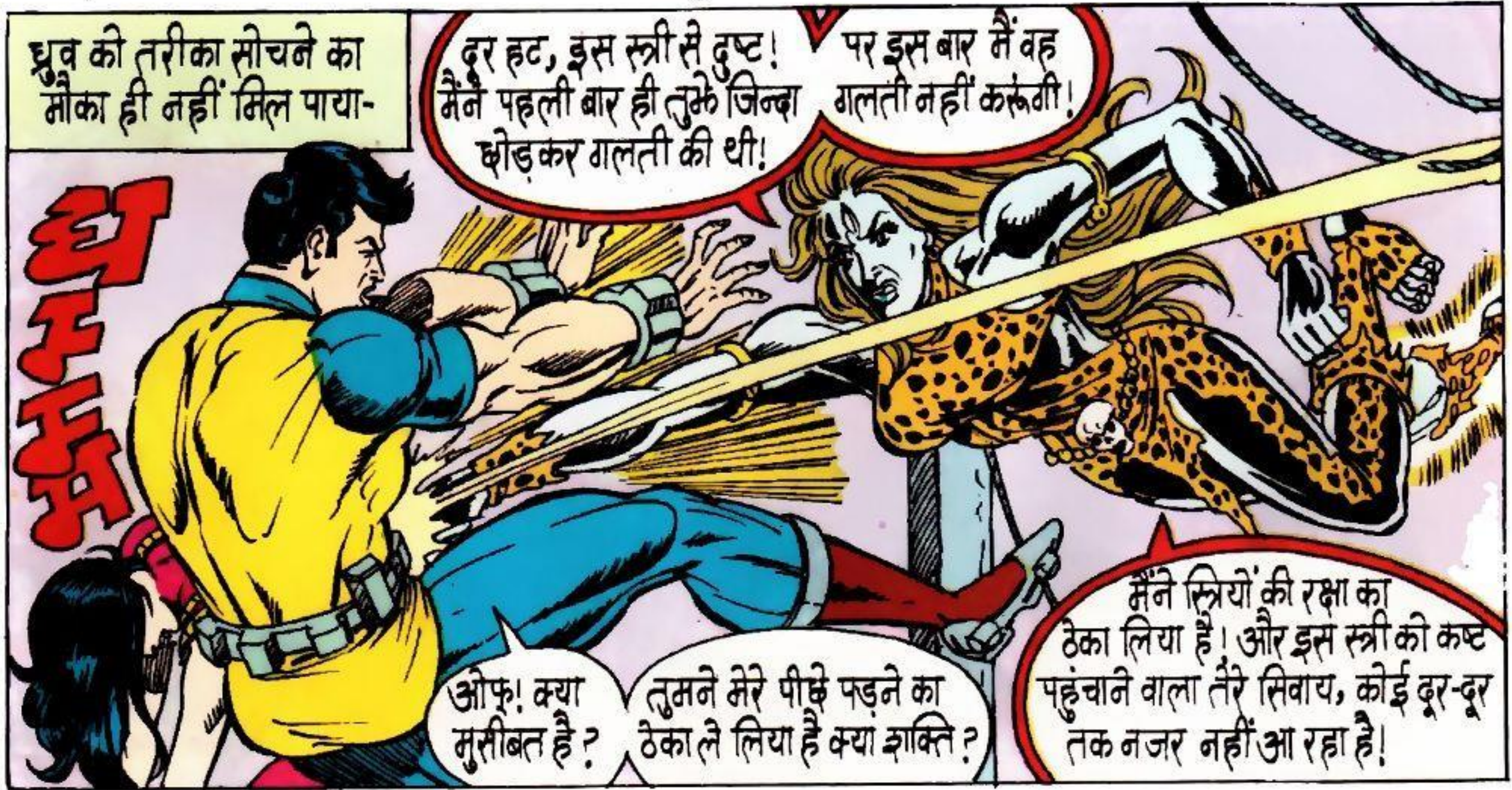
ध्रुव को तरीका सोचने का मौका ही नहीं मिल पाया-
दूर हट, इस स्त्री से दुष्ट! मैंने पहली बार ही तुझे जिन्दा छोड़कर गलती की थी!
पर इस बार मैं वह गलती नहीं करूंगी!
धम्म
ओफ़! क्या मुसीबत है?
तुमने मेरे पीछे पड़ने का ठेका ले लिया है क्या शक्ति?
मैंने स्त्रियों की रक्षा का ठेका लिया है। और इस स्त्री को कष्ट पहुंचाने वाला तेरे सिवाय, कोई दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है!
एक तो यह 'स्त्री' नहीं, 'कन्या' है शक्ति! और दूसरे इसको कष्ट पहुंचाने वाला इसके शरीर के अन्दर ही है, बाहर नहीं, जो तुमको नजर आ जाए!
तू अपनी जान बचाने के लिए झूठ बोल रहा है ध्रुव! मैं इस लड़की से ही सच पूछ लेती हूं!
शक्ति, नताशा की तरफ मुड़ी और आश्चर्यचकित रह गई। क्योंकि 'प्रचंडा' ने नताशा के ऊपर अपना रूप प्रक्षेपित करना शुरू कर दिया था-
और इससे पहले कि शक्ति यह समझ पाती कि उसे किसको बचाना है-
वह खुद बचाए जाने की स्थिति में स्वयं पहुंच चुकी थी-
आऽऽह! इतना शक्तिशाली वार! यह शक्ति मानवीय नहीं हो सकती!

लेकिन प्राणी मानवीय हो या अमानवीय, शक्ति के सामने ठहर नहीं सकता!
शक्ति के हाथों ने भूमि के धातु कणों को पिघलाकर खींचना और 'पाश' का रूप देना शुरू कर दिया—
लेकिन 'लौह बंधन' प्रचंडा को बांध नहीं पाए—
ओह! मैं ब्रह्मांड में बोली जाने वाली हर भाषा को समझ सकती हूं। यह परग्रही कह रहा है कि तुम मानवों ने मुझे मेरे एक 'यमिर' यानी तुम्हारे साढ़े चार सौ सालों तक कैद रखा है! अब मैं दुबारा बंधनों में आने से पहले तुम लोगों को नष्ट कर दूंगा!
क्र क लि पां फप एके सकू ला पेराला नी!
'प्रचंडा' कुछ-कुछ बोलता जा रहा था, और शक्ति तेजी से उसका अनुवाद ध्रुव को बताती जा रही थी—
यह कह रहा है कि यह ऊर्जा और द्रव्य! दोनों ही रूप में रहने वाला प्राणी है। और अपने द्रव्य रूप के कारण पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार नहीं जा पा रहा है।...
... यह ऊर्जा रूप में किसी जीवित और बुद्धिमान प्राणी के शरीर में ही रह सकता है। और ऐसा शरीर पृथ्वी पर सिर्फ मानवों का ही है।...
... परंतु यह जिस शरीर में रहेगा, तीव्र ऊर्जा के कारण वह शरीर धीरे-धीरे खोखला होता जाएगा! अगर हमने इसको पृथ्वी के पार जाने का रास्ता ढूंढ़कर नहीं बताया तो यह सबसे पहले इस लड़की का शरीर खोखला करेगा और फिर कई सारे मानवों का!
धाड़
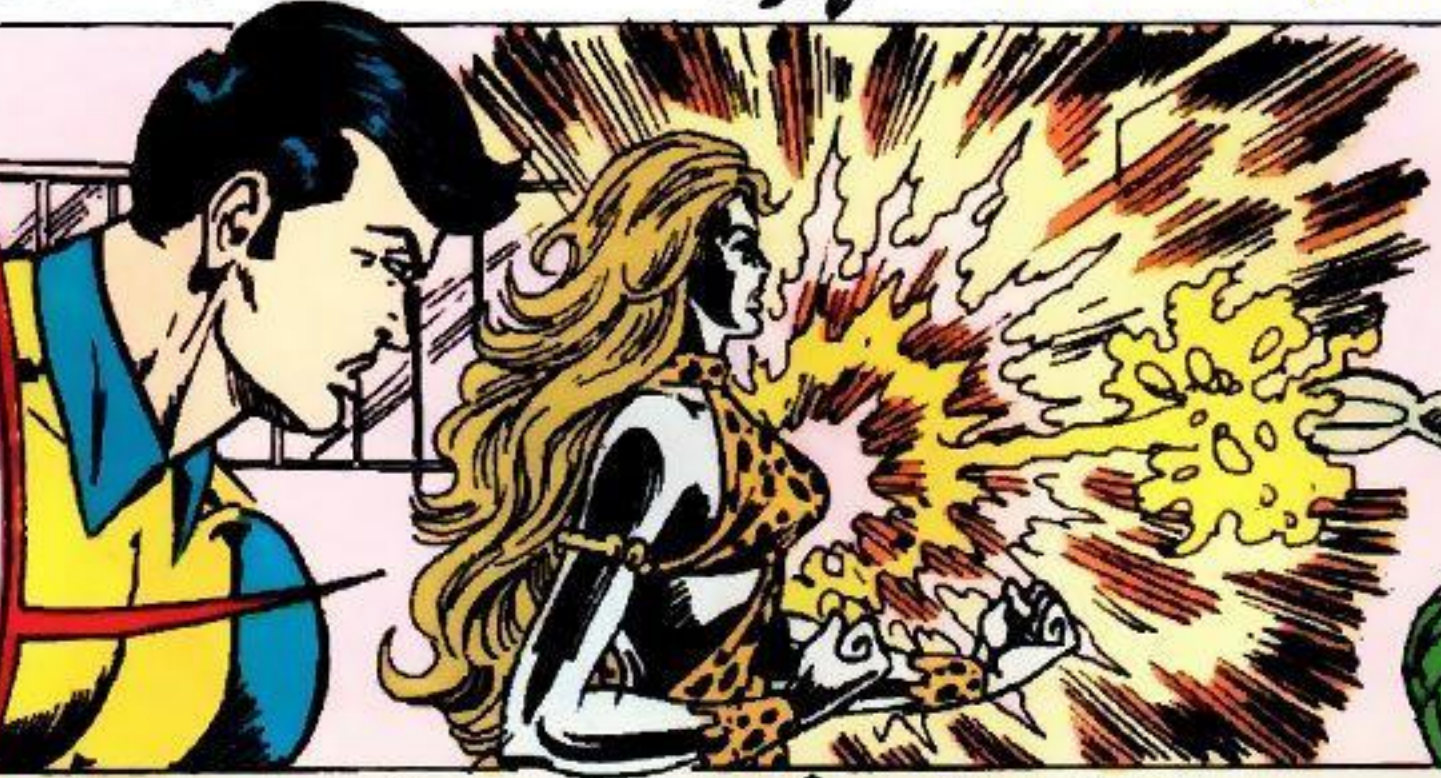
लेकिन मैं इसको ऐसा करने नहीं दूंगी! मैं पृथ्वी पर आई ही हूं, पहले स्त्रियों और फिर मानवों की रक्षा करने के लिए! मैं देवी की शक्ति का 'हजारवां भाग' ही हूं! लेकिन फिर भी इन जैसे दुष्टों से निपटने के लिए काफी हूं!
लेकिन मुकाबला इतना आसान नहीं था, जितना शक्ति ने सोच रखा था-
टक्कर बराबर की है!... शक्ति के जीतने की कोई गारन्टी नहीं है! यह प्रचंडा पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार जाना चाहता है। लेकिन बगैर किसी मानव शरीर में घुसे यह वहां तक नहीं पहुंच सकता!...
तड़!
...और अगर यह किसी स्पेस सूट पहने मानव के शरीर में भी घुसकर जाएगा तो इसके बाहर निकलने से स्पेस सूट में जो छिद्र होगा, उससे तो वह मानव फट ही जाएगा!... खैर रास्ते तो मिल सकते हैं, पर कोई लंबा तरीका सोचने का समय नहीं है! फिलहाल नताशा को भी बचाना है!... इसको नताशा के शरीर से बाहर निकालना ही होगा, और उसका एक तरीका मेरी समझ में आ रहा है!
वैसे भी इन दिग्गजों के बीच में मेरा क्या काम!
ध्रुव तो न जाने कहां जा रहा था-
पर 'दिग्गजों' के बीच में लड़ाई जारी थी-
तेरी किरणों का मुझ पर कोई असर होने वाला नहीं है! और मेरी 'ऊष्मा शक्ति' का तुझ पर कोई असर नहीं हो रहा है!
इसीलिए मैं तुझे पीट-पीट कर ही हार मानने के लिए मजबूर कर दूंगी!

लेकिन इन दो प्रतिरूपों के निकलने से मेरी शक्ति एक तिहाई रह जाएगी! क्योंकि बाकी दोनों प्रतिरूप अपनी एक तिहाई और एक तिहाई शक्ति अपने साथ ले जाएंगे! ...

... और मेरी शक्ति कम होने से यह परग्रही मेरे ऊपर हावी हो सकता है! पर मैं नियमों से विवश हूं! मुसीबतजदा स्त्री की सहायता के लिए मुझे जाना ही होगा!
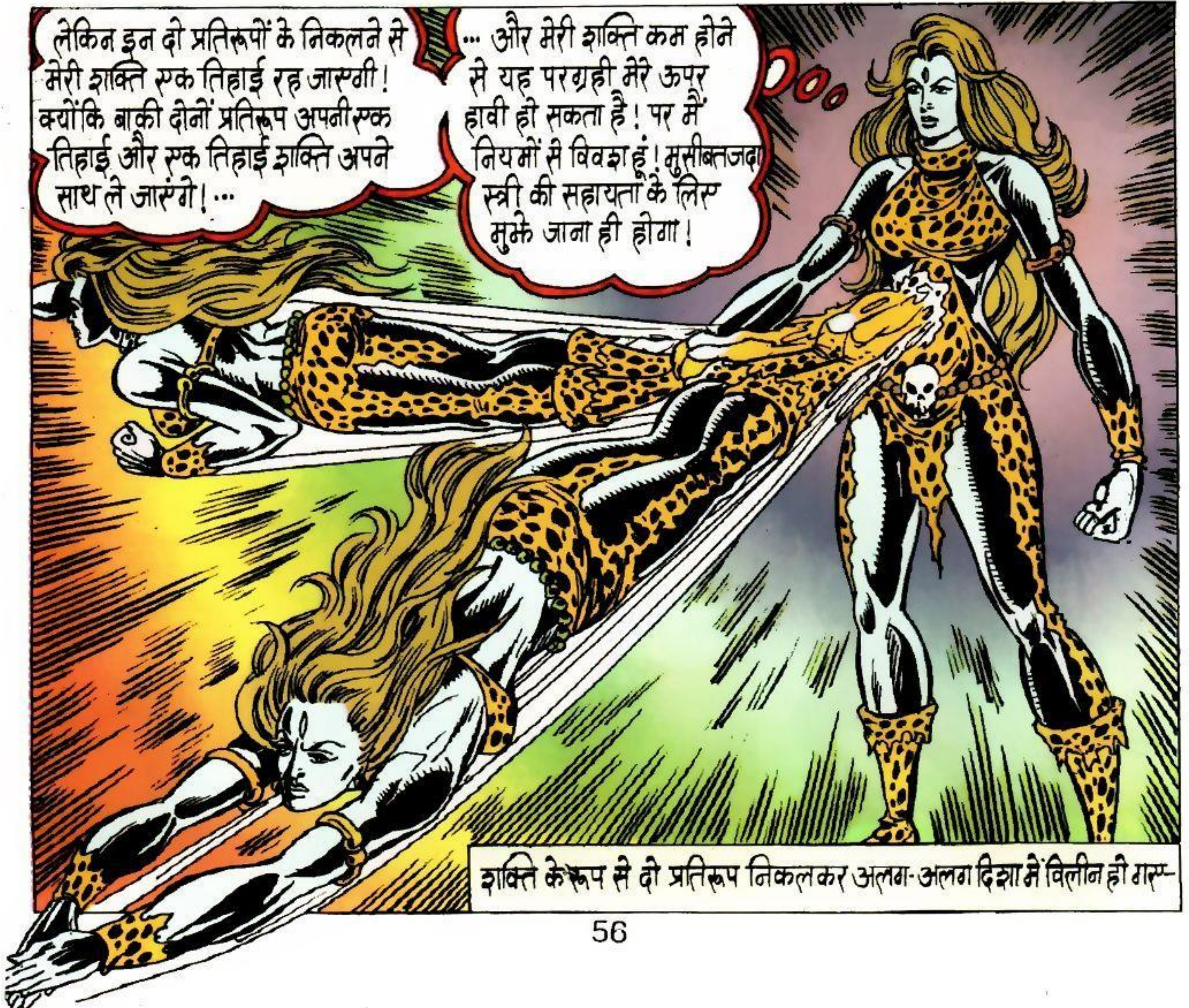
शक्ति के रूप से दो प्रतिरूप निकलकर अलग-अलग दिशा में विलीन हो गए–
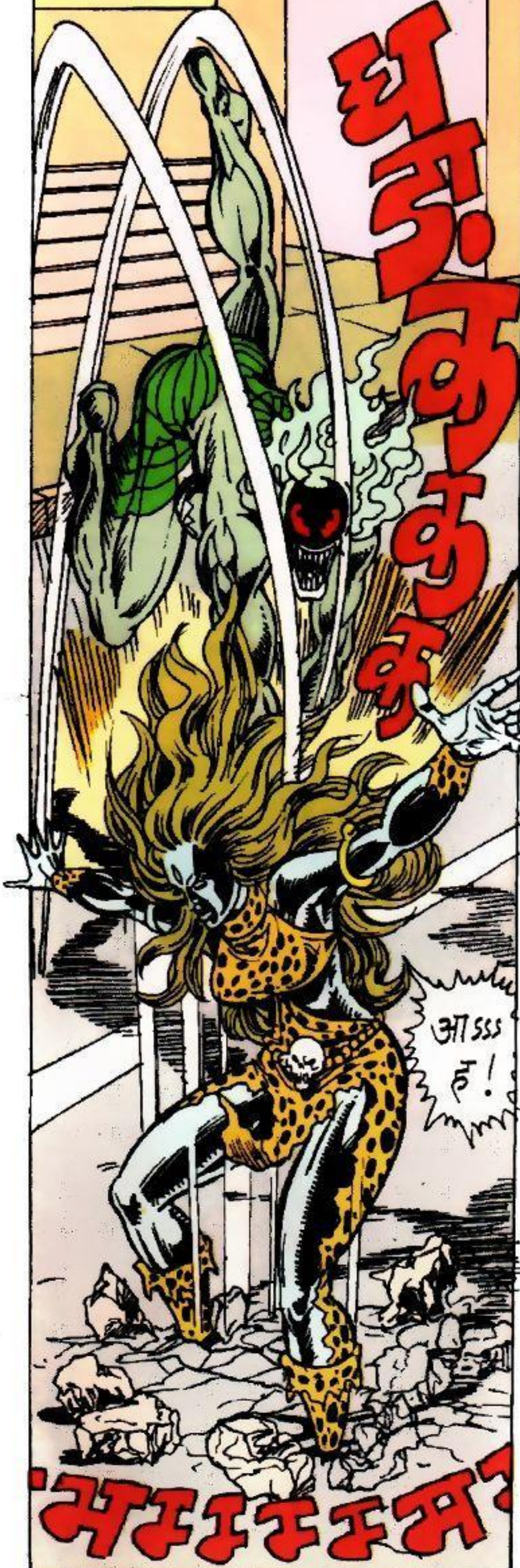
और बाजी पलट गई-
धड़ांक्कक
आऽऽऽ ह!
अब लड़ाई का नतीजा निकलने में ज्यादा वक्त नहीं था। और वह नतीजा शक्ति के पक्ष में नहीं था-
और अगर इस नतीजे को कोई पलट सकता था तो सिर्फ एक शख्स-
जो इस वक्त समुद्र की गहराइयों की खाक छान रहा था-
'प्रचंडा' को एक बार कैद किया जा चुका है, जादूगर विकारियों द्वारा! लेकिन नताशा के पास जो 'चर्म डायरी' थी, उसमें वे पन्ने नहीं थे, जिनमें शायद इस बात का जिक्र हो कि विकारियों ने प्रचंडा को कैद कैसे किया था!...
... और अगर वह 'चर्म डायरी' यहीं से तैरती हुई सागर की सतह तक गई है तो वे बाकी पन्ने भी यहीं कहीं होने चाहिए...
... आहा! ये रहे! ऊपर मिट्टी जम जाने के कारण पहचान में नहीं आ रहे थे!
ध्रुव जोड़-जोड़कर स्पेनिश भाषा में लिखी गई उस इबारत को पढ़ता गया! और धीरे-धीरे उसके दिमाग में स्थिति साफ होती चली गई-
आहा! समझ गया! अब अगर शक्ति मेरा साथ दे तो नताशा को भी बचाया जा सकता है, और 'प्रचंडा' को कैद भी किया जा सकता है!
पर इस समय ध्रुव को शक्ति की नहीं, बल्कि शक्ति को ध्रुव की जरूरत थी-

क्योंकि शक्ति, प्रचंडा के सामने धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जा रही थी-
आह! अगर यह परग्रही मानव शरीर में निवास न कर रहा होता तो मैं अपनी 'हस्त-ऊष्मा' से इसको कब का गला चुकी होती!...
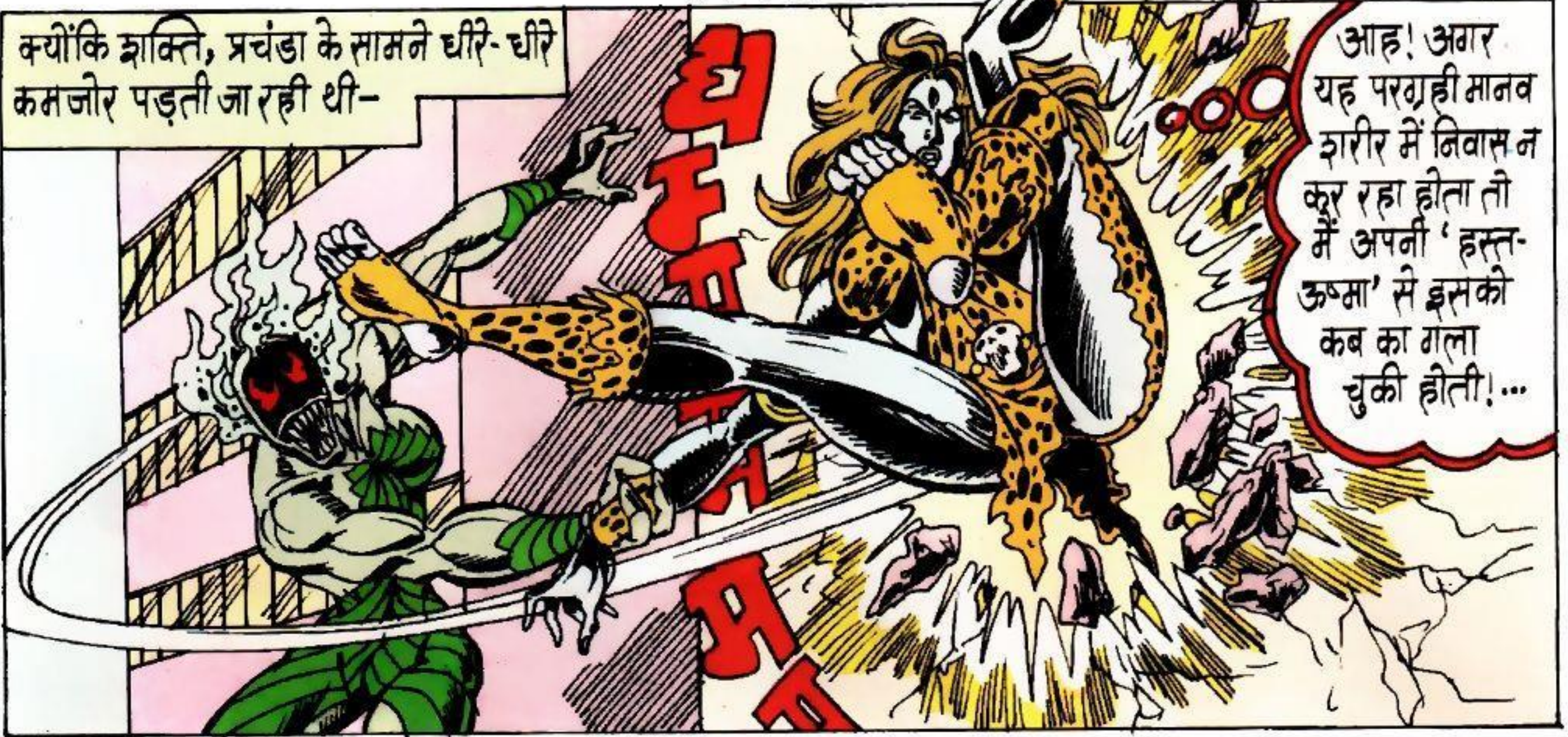
...पर अब ये मुझे... ओह!
शक्ति! इससे हार मत मानो! इसको दबोचने की कोशिश करो!
ध्रुव को वापस घटनास्थल पर देखकर शक्ति समझ गई कि इस बार वह बगैर किसी योजना के नहीं आया है-
उसने अपनी शक्ति बटोरकर प्रचंडा को एक मजबूत शिकंजे में जकड़ लिया-
और उसी पल ध्रुव ने डूबी शिप के मलबे से लाए 'कोन' को नताशा के शरीर से सटाकर-

उसकी तीन घुंडियों को बाहर खींच लिया-
और जैसे सिकुड़ी 'फोम' फैलने पर पानी सोख लेती है, वैसे ही कोन ने ऊर्जा रूपी प्रचंडा को खींचकर जज्ब करना शुरू कर दिया-

कुछ ही पलों बाद, परग्रही प्रचंडा फिर से कोन में कैद था। और नताशा मुक्त हो गई थी—
आऽऽह! मुझे क्या हुआ था, ध्रुव? मैं... मैं समुद्र के अन्दर से यहां कैसे आ गई?
अभी बताता हूं, नताशा! लेकिन पहले इस प्रचंडा को पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाना है! वर्ना यह फिर न जाने कौन सी मुसीबत खड़ी कर दे!
लेकिन इसको गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाओगे कैसे?
... वैसे अब मेरी बाकी शक्तियां भी वापस आकर मुझमें समा गई हैं। अब मैं वापस नहीं आऊंगी! लेकिन तुमसे मैंने यह जरूर सीखा है कि परिस्थिति समझने के बाद ही न्याय करना चाहिए!
मैं श्री हरिकोटा स्पेस लांचिंग सेंटर से संपर्क स्थापित करता हूं! अगर निकट भविष्य में कोई रॉकेट अंतरिक्ष में भेजा जा रहा हो तो उसके साथ इसे भी भेजा जा सकता है!
इसकी आवश्यकता नहीं है ध्रुव! मैं इसको अंतरिक्ष में खुद छोड़ आऊंगी! लेकिन जाने से पहले मैं यह जरूर कहना चाहती हूं कि मैंने तुमको गलत समझा!...
यह आश्चर्यजनक शक्तियों युक्त महिला कौन है ध्रुव? इसके मुख पर तो देवियों जैसा तेज है!
यह अपने आपको देवी का अंश ही बताती है, नताशा! और मुझे इसके दावे पर कोई सन्देह नहीं है!
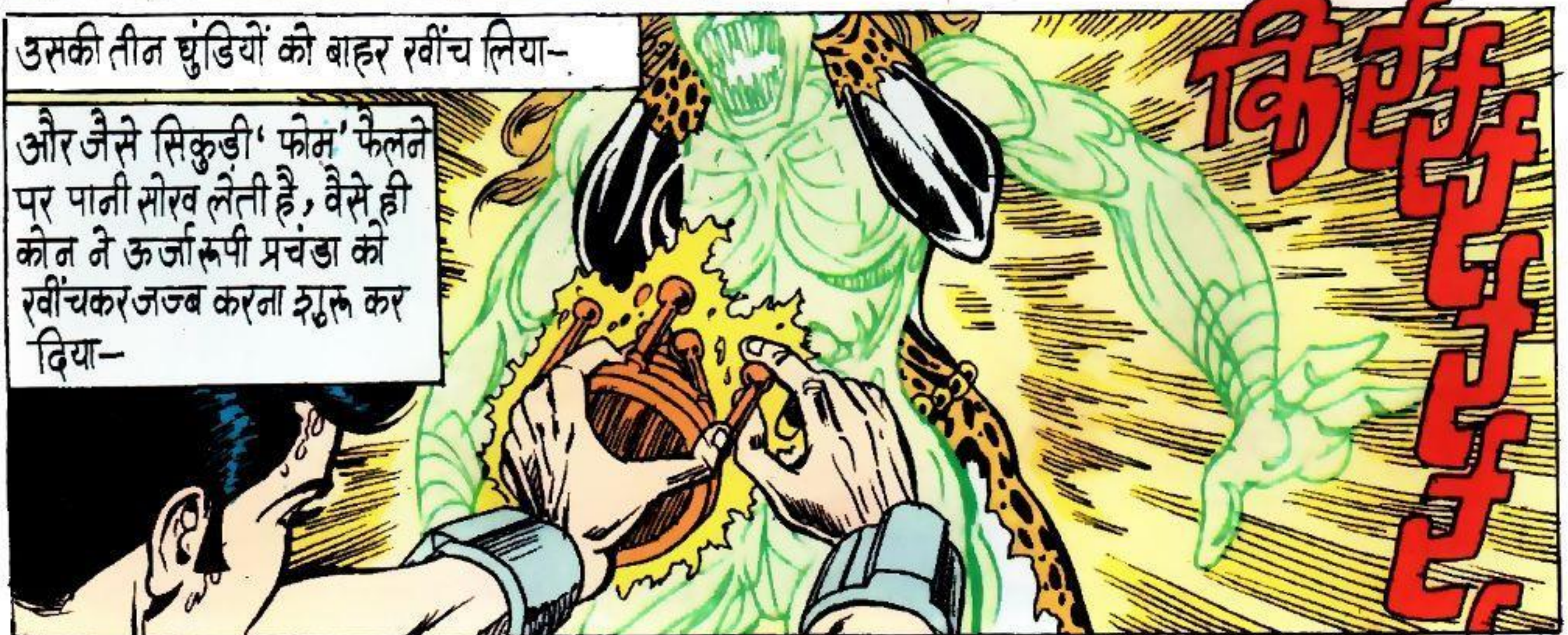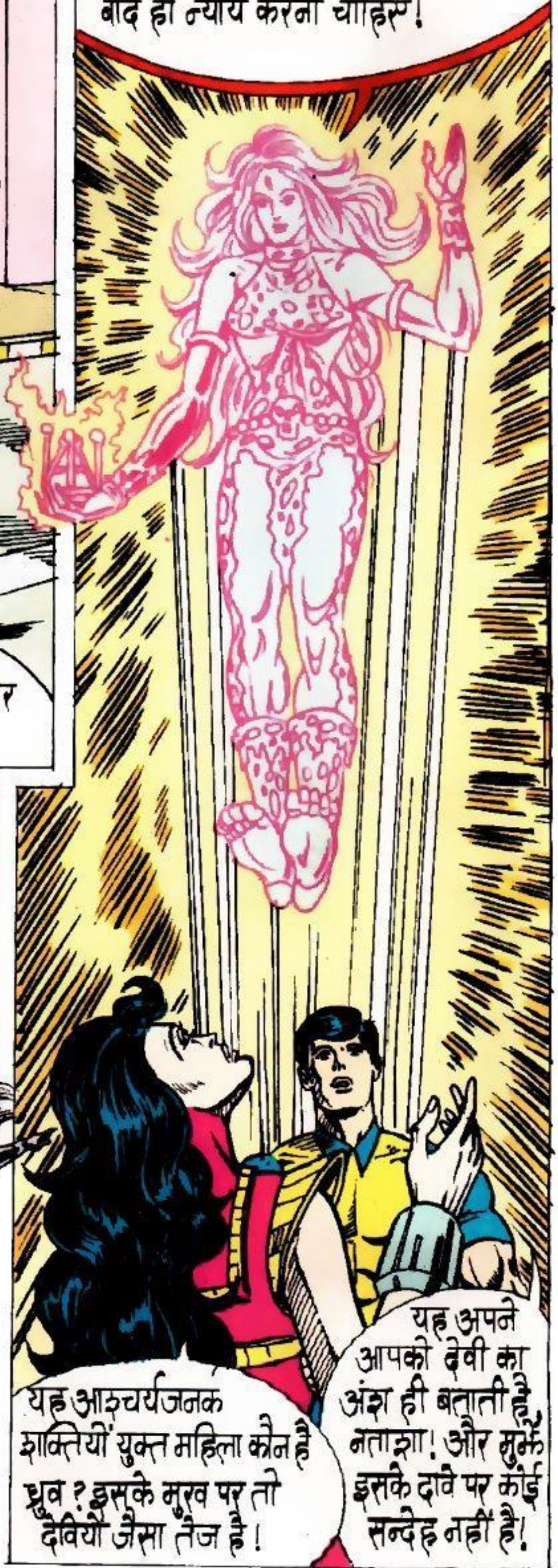
और अब मैं उम्मीद करती हूं कि तुम मुझे गिरफ्तार करोगे!
गिरफ्तार? पर क्यों? तुमने फिलहाल कोई अपराध नहीं किया! लेकिन मैं अब भी चाहता हूं कि तुम अपराध का रास्ता छोड़कर वापस इस दुनिया में आ जाओ!
फिलहाल यह संभव नहीं है ध्रुव! पहले मैं छल, कपट और भ्रष्टाचार से युक्त इस समाज को रहने लायक बनाऊंगी!...
... और फिर ही तुम्हारी दुनिया में वापस आ पाऊंगी!

उधर प्रकाश की गति से उड़ती शक्ति ने अंतरिक्ष में पहुंच कर 'कोन' को नष्ट कर दिया, और प्रचंडा आजाद हो गया-
अब मुझे भी शीघ्रातिशीघ्र वापस जाना चाहिए!...

... क्योंकि तरुण को चंदा पर शक नहीं होना चाहिए!

बहुत समय लगाया तुमने बाथरूम में चंदा!
वो... वो... मैं तरुण... मुझे...

खैर, छोड़ो! अगर तुम मुझे कुछ बताना नहीं चाहती, तो मैं पूछूंगा नहीं...
... लेकिन यह याद रखो कि एक न एक दिन मैं यह बात जानकर ही रहूंगा कि तुमको अपना कौन सा रहस्य छिपाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है!
फिलहाल तो चलो! तुम्हारे 'प्लास्टिक सर्जरी' के ऑपरेशन की तैयारी करनी है!

समाप्त

A.H.W. TIGER SERIES
तुम लोग मानव जाति के श्रेष्ठतम नमूने हो, सुपर हीरोज! मैं तुमको एक दूसरे ग्रह पर ले जाऊंगा...
...जहां की अद्भुत परिस्थितियों में तेजी से बनेगा तुम्हारा विकसित रूप! जो पृथ्वी की वर्तमान आबादी को खत्म करके पृथ्वी पर राज करेगा।
अप्रैल 2001 में उपलब्ध
मूल्य: 40/-
जलजला पढ़िए और जीतिये 5,00,000 रुपये के पुरस्कार
एक मानव बन गया है महामानव और उसकी शक्तियां बन गई हैं, महाशक्तियां! जो इस विनाश को रोक सकते थे अब वे ही मचाएंगे तबाही! तो फिर रोकेगा कौन ये...
जलजला
राज कॉमिक्स का यह सुपर मल्टीस्टार विशेषांक शीघ्र आ रहा है।